श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

Volume : 01, Issue : 02
Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-
Editor : Kanubhai Lallubhai Shah

શ્રુતસાગર

जेमना प्राणमां प्रभुशासननी पारावार प्रीती प्रसरेली छे एवा
पूज्यपाद् गुरुदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

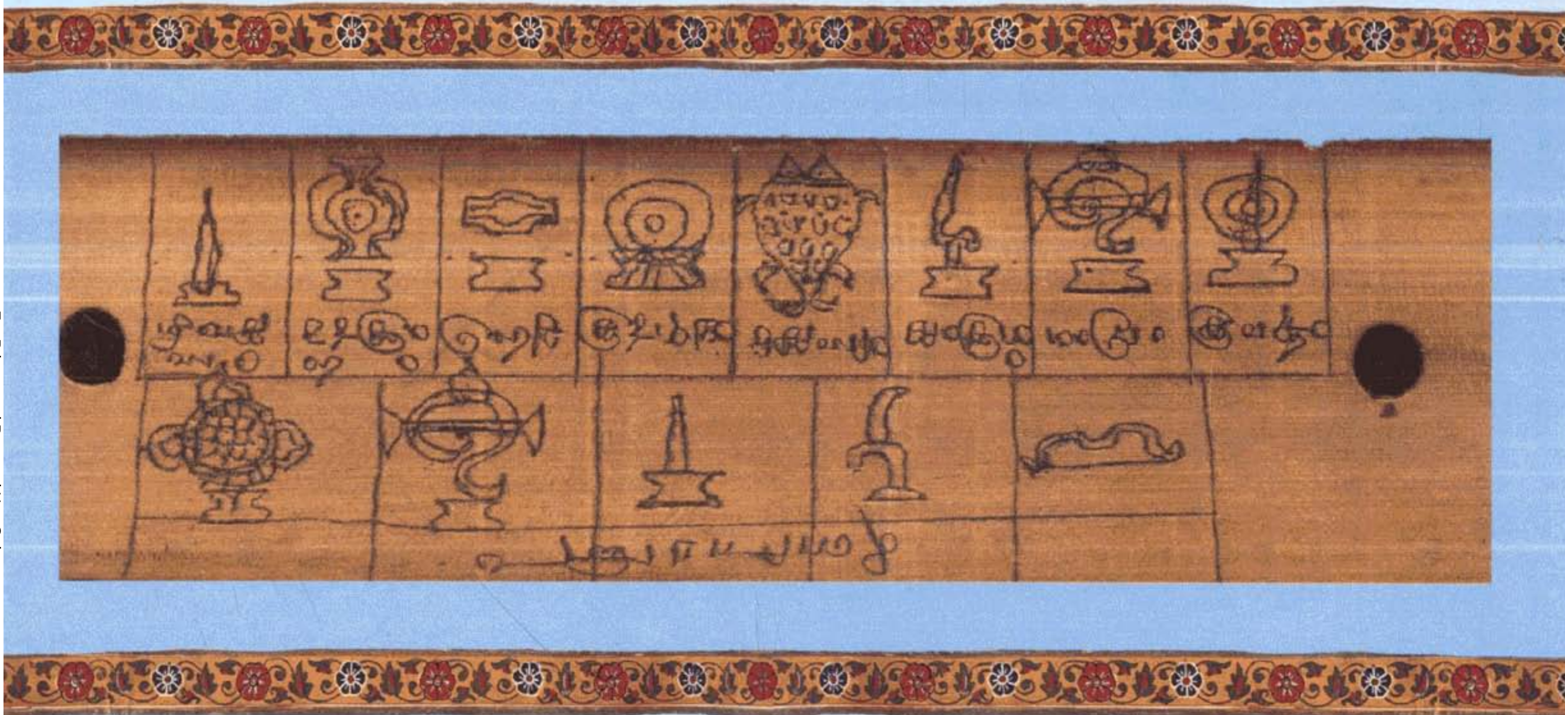

ताडपत्रमां प्राप्त थता ग्रंथ लिपिमां आलेखायेल अष्टमंगल अने पंचायुधना चित्रो तेमज अष्टमंगल पूजनविधि

For Private and Personal Use Only

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

શ્રુતસાગર

वर्ष-१, अंक-२, कुल अंक-२, जुलाई-२०१४ ❖ Year-1, Issue-2, Total Issue-2, July-2014

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रू. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs. 150/-

अंक शुल्क - रू. १५/- ❖ Issue Per copy Rs. 15/-

❖ आशीर्वाद ❖

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

कनुभाई लल्लुभाई शाह

❖ सह संपादक ❖

हिरेन के. दोशी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जुलाई, २०१४, वि. सं. २०७०, आषाढ वद-४

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर-३८२००७

फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२ फेक्स : (०७९) २३२७६२४९

website : www.kobatirth.org **email** : gyanmandir@kobatirth.org

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१. संपादकीय	हिरेन के. दोशी	३
२. राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब का संक्षिप्त परिचय	डॉ. हेमन्त कुमार	५
३. पृथ्वीचंद्र गुणसागर रास	जागृतिबेन डी. वोरा, हिरेन के. दोशी	९
४. श्री जिनप्रभसूरिकृत फारसी भाषामां ऋषभदेव स्तवन	श्री जिनविजयजी	३०
५. ग्रंथलिपि : एक अध्ययन	डॉ. उत्तमसिंह	४०
६. सम्राट् संप्रति संग्रहालयना प्रतिमा लेखो	हिरेन के. दोशी	५६
७. यतिअंतिमआराधना	सा. जिनरत्नाश्रीजी	५९
८. कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची एक संक्षिप्त परिचय	--	७६
९. श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र-कोबा तीर्थ परिचय	-	७८

प्राप्तिस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर
परिवार डाईनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद - ३८०००७
फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

संपादकीय

गया अंकथी केटलांक महत्त्वना फेरफारो आ पत्रिकामां थया, जे आवश्यक हता...

श्रुतसागर पत्रिकाना रजि.नी सरकारी प्रक्रियामांथी पसार थई रह्या छीए... पूर्ण थवानो तबक्को नजीक छे. अने एटला ज माटे आ प्रकारना फेरफारो करवामां आव्या छे. वैश्विक स्तरे जैन साहित्यनी मौलिकताने उजागर करवी होय तो आ प्रकारनी प्रक्रिया घणा अंशे मददरूप अने सरळता आपे छे. अने एटले ज आ पत्रिकाने ए प्रकारना तमाम फेरफारो आप्या छे. अस्तु...

केटलांक पर्वो एक दिवसना होय छे. केटलांक पर्वो बे दिवसना होय छे. केटलांक त्रण, चार के एथी वधु दिवसना होय छे. पण चातुर्मासनुं पर्व...

चातुर्मासनुं पर्व चार महिनानुं होय छे. ऋतुना प्रभावे थती जीवहिंसाथी बचवा जिनशासनना अणगार पूज्य गुरुभगवंतो योग्य स्थान अने योग्य काळने अनुरूप पोते चार महिना स्थिर थई पोतानी नजीक आवेला भव्यजीवोने स्वाध्याय, संयम अने तपना बळथी अत्यंत रीते प्रभावित अने आराधनामय बनावता होय छे. चातुर्मासनुं पर्व आम तो वरसाद अने एना कारणे थती विराधनाओथी बचवा माटेनी स्थिरता रूपे होवा छतांय परिणामे अनेक व्यक्तिओना जीवनमां आ पर्व परिवर्तनना पर्व रूपे अंकित थईने यादगार बनी जाय छे.

चातुर्मास दरम्यान पूज्य गुरुभगवंतश्रीनो मळतो संयोग आपणी आंतर चेतनाने आराधना साधना तरफ प्रेरे छे. अने एमनो संसर्ग आपणामां रहेली आराधकभावनी सुषुप्तिने खंखेरे छे. पराक्रमने खीलवी आपतुं आ चातुर्मासनुं पुनित पर्व गणी शकाय एटला दिवसो ज दूर छे. त्यारे दरेक आत्मार्थी अने आराधक आत्माओ आ पर्वना पुनित प्रसंगने पामीने जीवनने गुण वैभवथी समृद्ध करे...

आ अंकनी वात :- दर वखतनी जेम आ अंकमां पूज्य गुरुभगवंतश्रीए आत्मविकासनी अने आत्मोन्नती विषय उपर आपेला मननीय प्रवचनने अत्रे प्रकाशित न करता आ अंकमां पूज्य गुरुभगवंतश्रीना जीवन परिचयने संक्षिप्त पण सारभूत रीते प्रकाशित कर्युं छे.

आ अंकमां दर अंकनी जेम आ वखते जैन साहित्य संशोधकमां प्रकाशित फारसीभाषामय ऋषभजिन स्तवन अत्रे प्रकाशित कर्युं छे. वाचकोनी उपादेयता माटे स्तवननी साथे एनुं संस्कृत अने गुजराती विवरण मूळ कडीनी साथे ज लेवानो तेमज कठिन शब्दार्थोमां पण योग्य कडी क्रमांक हेठळ शब्दो आपवानो फेरफार कर्यो छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो अप्रकाशित कृतिना प्रकाशन रूपे भानुचंद्र गणिवरना शिष्य देवचंद्र गणिनी रचना पृथ्वीचंद्र गुणसागर रास अत्रे प्रकाशित कर्यो छे. शीलधर्मना महिमानुं गान करती अद्यावधि अप्रकाशित आ रचना श्रुतसागरना माध्यमे प्रकाशित थई रही छे. एनो अमने आनंद छे. शीलधर्म महात्म्य अने कविनी रचना-चातुरी उभयनो संगम आ रासमां थयो छे. जे वाचकोने बोधनी साथे संतोष आपशे... आ कृतिनुं प्राथमिक लिप्यंतर श्री जागृतिबेन डी. वोराए करीने अमने पाठव्युं छे. ए बदल एमनो हार्दिक आभार...

श्रुतसागर अंक ३८-३९मां प्रकाशित ब्राह्मीलिपि विषयक लेखने घणा वाचकोए वधाव्यो... पत्र अने फोनना माध्यमथी लिपि जिज्ञासुओए घणा अभिनंदन पाठव्या अमने... लिपि अभ्यासना लेखोनी ए ज श्रेणिमां आ वखते ग्रंथ लिपि विषयक एक सपरिचय अभ्यासपूर्ण लेख अत्रे प्रकाशित कर्यो छे. ग्रंथ लिपिना परिचयनी साथे ग्रंथ लिपि संबंधी विविध प्रकारनी माहितीओ, अक्षरोना वळांक अने मरोडनी स्थितिने समजवानुं सरळ बने एटला माटे आजे लखाता अक्षरोनी साथे ग्रंथ लिपिमां लखाता अक्षरोना लघु चार्ट विगेरे पण प्रकाशित करी लेखनी उपादेयतामां खास्सो वधारो थयो छे. आ लेख अने आ पत्रिकामां प्रकाशित विगतोना सेटींग माटे श्री संजयभाई गुर्जरनी महेनत पण दाद मांगी ले एवी छे.

पूज्य साध्वीजी भगवंत श्री जिनरत्नाश्रीजी म. सा. तरफथी संपादित उपाध्याय समयसुंदरगणि कृत यतिअंतिम आराधना आ अंकमां प्रकाशित करी छे. अप्रकाशित कृति संपादित करीने पाठववा बदल पूज्य साध्वीजी भगवंतश्रीनो खूब आभार...

आ अंकनुं पूज्य गुरुभगवंतश्रीना चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे विमोचित थवानुं सद्भाग्य रह्युं छे. एटले ज पूज्य गुरुभगवंतश्री अने एमनी पुनित नजरथी श्री संघना श्रेयार्थे प्रवर्तमान श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र-कोबानो परिचय थाय ए हेतुसर संस्थानी रूपरेखा आ अंकमां प्रकाशित करी छे.

पूज्य गुरुभगवंतश्रीना चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे प्रकाशित थनार कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूचि भाग १७नुं विमोचन थवानुं होवाथी आ अंकमां प्रकाशित थता सूचिपत्रो अने एनी विशेषताने जाणवा माटे कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूचिनो संक्षिप्त परिचय प्रकाशित कर्यो छे.

तो ऐतिहासिक सामग्री रूपे सम्राट संप्रति संग्रहालयमां रहेला धातुविभागना शिल्पोना लेखो प्रकाशित कर्या छे. आ लेखोमां जे क्रमांक नंबर आपेलो छे ए शिल्पोमां ज लेख मळे छे. ए सिवायना नंबर पर नोंधायेल वस्तुओमां कोई लेख विगेरे प्राप्त थतुं नथी. जे वाचकोए खास ध्यानमां लेवुं.

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब का संक्षिप्त परिचय

डॉ. हेमन्त कुमार

सांसारिक जीवन :

- **जन्म** : विक्रम संवत १९९१ भाद्रपद कृष्णपक्ष एकादशी मंगलवार, तदनुसार १० सितम्बर १९३५.
- **जन्म स्थान** : अजीमगंज, पश्चिम बंगाल
- **पिता का नाम** : श्री रामस्वरूपसिंहजी उर्फ श्री जगन्नाथसिंहजी.
- **माता का नाम** : श्रीमती भवानीदेवी
- **बचपन का नाम** : प्रेमचन्द/लब्धिचन्द्र
- **शिक्षा** : माध्यमिक स्तर तक
- **भाषा ज्ञान** : संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, बंगाली, गुजराती, राजस्थानी व अंग्रेजी.

साधुजीवन का प्रारम्भ :

- **दीक्षा ग्रहण** : वि. सं. २०११ कार्तिक (मार्गशीर्ष) कृष्णपक्ष ३ रविवार, १३ नवम्बर १९५४
- **दीक्षा स्थल** : साणंद
- **दीक्षा प्रदाता** : आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म. सा.
- **दीक्षा गुरु** : आचार्य श्री कल्याणसागरसूरीश्वरजी म. सा.
- **दीक्षा नाम** : मुनि श्री पद्मसागरजी म. सा.
- **गणिपद से विभूषित** : वि. सं. २०३० माघ शुक्ल पक्ष पंचमी, सोमवार, २८ जनवरी, १९७४, अहमदाबाद
- **पंन्यासपद से विभूषित** : वि. सं. २०३२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तमी, सोमवार, ८ मार्च, १९७६, जामनगर
- **आचार्यपद से विभूषित** : वि. सं. २०३३ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष तृतीया, शुक्रवार, ९ दिसम्बर, १९७६, महेसाणा

जिनशासन के समर्थ उन्नायक :

- जैन श्रमण संस्कृति की गरिमापूर्ण परंपरा में जिनका एक यशस्वी नाम है.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- ❖ व्यवहार-कुशलता, वाक्पटुता, कर्तव्य-परायणता आदि गुणों से जो विभूषित हैं.
- ❖ मानवमात्र के लिये जिनका देदीप्यमान जीवन प्रेरणास्पद एवं वरदान है.
- ❖ जिनशासन के उन्नयन हेतु समर्पित जिनका संपूर्ण जीवन है.
- ❖ अपनी मधुर वाणी से लाखों श्रोताओं को जिन्होंने धर्माभिमुख किया है.
- ❖ जिनशासन के गौरव में जिन्होंने चार-चाँद लगा दिये हैं.
- ❖ मानव मात्र के उपकार हेतु जो सतत् प्रयासरत हैं.
- ❖ जैन-दर्शन व प्राच्य विद्या के क्षेत्र में अवगाहन करने वालों के लिए जो रत्नाकर तुल्य हैं.
- ❖ श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा की स्थापना जिनकी सत्प्रेरणा से हुई है.
- ❖ आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा जिनकी अमरकृति है.
- ❖ विश्वमैत्रीधाम बोरीजतीर्थ के ऐतिहासिक जिनमंदिर निर्माण के जो प्रेरक हैं.
- ❖ श्री सीमंधर जिन मंदिर, महेसाणा के निर्माण में जिनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है.
- ❖ भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक-ऐतिहासिक-पुरातात्त्विक धरोहर के जो संरक्षक हैं.
- ❖ जिनभक्ति व शासनप्रभावना के प्रति जो पूर्ण समर्पित हैं.
- ❖ वात्सल्य, करुणा, दया और प्रेम की जो प्रतिमूर्ति हैं.
- ❖ जिनकी भाषा की सरलता, स्पष्ट वक्तृत्व, अभिप्राय की गंभीरता व प्रस्तुति की मौलिकता है.
- ❖ जिनके ओजस्वी प्रवचनों से व्यक्ति और समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है.

यशस्वी ऐतिहासिक कार्य :

- ❖ बाल-दीक्षा-प्रतिबन्ध प्रस्ताव को निरस्त कराकर पुनः बाल-दीक्षा का प्रारम्भ कराया.
- ❖ शत्रुंजय महातीर्थ के बाँध में होनेवाली मछलियों की जीव-हिंसा पर रोक लगवाई.
- ❖ मुम्बई महानगरपालिका के द्वारा विद्यालय के बच्चों को अल्पाहार में फूड-टॉनिक के रूप में अण्डा दिए जाने के निंदनीय प्रस्ताव को खारिज करवाया.
- ❖ राजस्थान सरकार द्वारा ट्रस्टों में अपना प्रतिनिधि नियुक्त करने के अध्यादेश को राज्यपाल को कुशल युक्तियों के द्वारा समझा कर वापस कराया.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

❖ राणकपुर तीर्थ में फाईव स्टार होटल के निर्माण पर रोक लगवा कर तीर्थ की पवित्रता को अक्षुण्ण बनाए रखा.

❖ इमरजेंसी के दौरान भारत के प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को राष्ट्रहित में मार्गदर्शन.

❖ नेपाल में पाद विहार करके सैकडों वर्षों के बाद प्रथम बार जैनाचार्य के रूप में पदार्पण किया.

❖ काठमाण्डु (कमल पोखरी) में आपकी निश्रा में श्री महावीरस्वामी जिनमन्दिर की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा हुई.

❖ आपकी निश्रा में विश्व हिन्दू महासभा का अधिवेशन काठमाण्डू में सम्पन्न हुआ, जिसमें विश्व के १४ देशों से अग्रणी हिन्दू प्रतिनिधियों ने भाग लिया था.

❖ जैन एकता, संगठन व जैन कॉन्वेन्ट-स्कूलों के आप सफल प्रेरणादाता रहे हैं.

❖ आपके पदार्पण से बरसों बाद दक्षिण भारत में धर्म आराधना व ज्ञान की मंद धारा तेजी से बहने लगी.

❖ गोवा प्रदेश में सैकडों वर्ष बाद जिनालय की भव्य अंजनशलाका-प्रतिष्ठा आपकी पावन निश्रा में सम्पन्न हुई.

❖ वालकेश्वर(मुम्बई) श्रीसंघ को देवद्रव्य संबंधी जैन परंपरा और सिद्धान्त का मार्गदर्शन किया.

❖ राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्माजी ने राष्ट्रपति भवन में आपके पावन पदार्पण करा के आशीर्वाद ग्रहण किया.

❖ भारतवर्ष की पवित्र भूमि हरिद्वार में प्रथम जिनमन्दिर रूप श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ की भव्य अंजनशलाका-प्रतिष्ठा कराई.

❖ पूज्यश्री की प्रेरणा से जोधपुर नरेश श्री गजसिंहजी ने महल में पिछले ४०० सालों से चली आ रही दशहरा के दिन भैंसे की बलि की प्रथा बंद करवाई.

❖ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ, जैन डॉक्टर्स फेडरेशन एवं जैन चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट विंग की स्थापना आपकी प्रेरणा से हुई, जो पूरे भारत के जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघों को अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान कर रही है.

❖ प्रभु महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी में मछली पकड़ने पर पाबन्दी एवं सरोवर की पवित्रता का शुभ संकल्प करवाया.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- गौतमस्वामी की जन्मस्थली कुण्डलपुर (नालन्दा) तीर्थ भूमि के मंदिर की महोत्सव पूर्वक प्रतिष्ठा हुई.
- हरिद्वार में सर्वधर्म के धर्मगुरुओं द्वारा सार्वजनिक अभिनंदन का सन्मान प्राप्त किया.
- श्री शान्तिनाथ जैन तीर्थ, बटवा का निर्माण करवाया.
- श्री नेमिनाथ जैन बावन जिनालय-प्राचीन तीर्थ रांतेज का पुनर्निर्माण कार्य करवाया.
- श्री संभवनाथ जैन आराधना केन्द्र, सारंगाजी आदि जैन तीर्थों के उद्धारक व मार्गदर्शन प्रदाता रहे हैं.

विविध उपाधियाँ :

- भूतपूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा राष्ट्रसन्त की उपाधि से विभूषित.
- वालकेश्वर(मुम्बई) श्रीसंघ द्वारा सम्मेतशिखर तीर्थोद्धारक के बिरुद से सम्मानित.
- राणकपुर-सादड़ी श्रीसंघ द्वारा श्रुतोद्धारक पदवी से सम्मानित.

शासन प्रभावना :

- **तीर्थयात्रा-विहार :** भारत के लगभग सभी छोटे-बड़े तीर्थ व सवा लाख किलोमीटर से अधिक पदयात्रा
- **प्रतिष्ठाएँ :** ८० से अधिक ❖ **उपधान तप :** १२
- **यात्रासंघ :** ११ ❖ **दीक्षाएँ :** ७०
- **शिष्य-प्रशिष्य :** ४२ (आचार्य - ४, पंन्यास - ५, गणिवर्य - ३)
- **साहित्य प्रकाशन :** लगभग २८ प्रकाशन - हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी में.

आपकी अमृतमयी वाणी :

'मैं सभी का हूँ, सभी मेरे हैं, प्राणी मात्र का कल्याण मेरी हार्दिक भावना है। मैं किसी वर्ग, वर्ण, समाज या जाति के लिए नहीं, अपितु सबके लिए हूँ। व्यक्ति राग में मेरा विश्वास नहीं है। लोग वीतराग परमात्मा के बतलाये पथ पर चलकर अपना और दूसरों का भला करें, यही मेरी हार्दिक शुभेच्छा है।'

जैनश्रमण संस्कृति के गौरव रूप आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी के चरणों हमारी, आपकी, सबकी नतमस्तक कोटिशः वंदना...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथ्वीचंद्र गुणसागर रास

संपा. जागृतिबेन डी. वोरा

हिरेन के. दोशी

जैनदर्शनमां बतावेला चार अनुयोग पैकीनो एक अनुयोग एटले कथानुयोग. चार प्रकारना अनुयोग आपणी परंपरामां मळे छे.

१. द्रव्यानुयोग. २. चरणकरणानुयोग

३. गणितानुयोग ४. धर्मकथानुयोग.

चारेय अनुयोगमां प्रधानपणे द्रव्यानुयोग छे. पण द्रव्यानुयोग समजवामां थोडो कठीन होई व्यक्तिनी योग्यता अने क्षमताओनी अपेक्षा राखे छे. ज्यारे धर्मकथानुयोग सरळ होई व्यक्ति पोताना उपादानने वधु ने वधु विशुद्ध बनावी शके छे.

धर्मकथानुयोग पौद्गलिक सुखमां रहेला जीवोने कथा अने दृष्टांतना माध्यमे आत्माना स्वरूपनुं भान करावी एनामां रहेली अनंत शक्तिओ अने सुषुप्त ऊर्जानुं प्रागट्य करी जीवनने सार्थकता बक्षे छे. जीवनमां सर्जाता उत्थान अने पतन माटे मनुष्य पोते अने पोताना विचारो ज कारणभूत होय छे. जेवा विचारोनी सेवना चालु होय, भविष्यनुं निर्माण पण एवुं ज थया करे छे. विचारो सारा तो भविष्य सुंदर, विचारो खराब तो भविष्य अंधारमय... सद्विचारोनी ताकातथी गमे तेवी बगडेली स्थिती पण सुधारी शकाय छे.

कथानुयोग मानव जीवनने सद्विचार अने दृढ संकल्प द्वारा उत्तमता अर्पे छे. कथानुयोग अशुभमांथी शुभमां अने शुभमांथी शुद्धमां लई जाय छे. अने एटले ज पूर्वाचार्योए कथानुयोगना आगमो अने ग्रंथो आपीने समग्र जीवराशि उपर महान उपकार कर्यो छे.

आवी ज एक कथा रास स्वरूपे अत्रे प्रकाशित करी छे. आम तो आ रचना विक्रमनी सत्तरमी सदीमां थई छे. पण आ कथानी घटना थयाने घणो काळ व्यतीत थई गयो छे. चार प्रकारना धर्म परमात्माए दर्शाव्या छे. एमां सौथी पहेलुं दान, बीजुं शील, त्रीजुं तप, अने चोथुं भाव. आम चार प्रकारमांथी बीजा शीलधर्मनुं महत्त्व अने एनुं गुणगान आ कथामां सर्वत्र छवायेलुं जोवा मळे छे. शीलधर्मना पालनथी थनारो लाभ अने एनुं पालन न करवाथी थनारा नुक्शानने कविए आ चरित्रना माध्यमथी दर्शाव्युं छे. रासना घाट उपरथी कर्ताए परंपरागत आ ज चरित्रनायकनुं कोई संस्कृत के प्राकृत चरित्र आँख सामे राख्युं होय एवुं जणाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे. अथवा संभावना ए पण पूरी छे के आ कथा प्रसंग एमने परंपराथी सांभळवा मळती कथाने आधारे रासनी रचना करी होय... रचनाना आधारने लईने रचनाकारे आ प्रकारनो कोई खुलासो कर्यो नथी.

आम तो आ कथानी शरूआत घणी लांबी छे. पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर वच्चेनो संबंध पण बहु जुनो अने पुराणो छे. पण रासकार तो अंतिम भवनी कथा-वस्तुने रासमां गुंथे छे. प्रस्तुत कथा नायको वच्चे शंखराजा अने कलावतीना भवथी संबंध थाय छे. ए पछीना कुल एकवीश जेटला भवो अलग अलग रूपे वन्ने मळे छे. कुल एकवीश भवमांथी अग्यार भव मनुष्य पर्यायना छे. अने दश भव देव पर्यायना छे. मनुष्य गतिना कुल अग्यार भवो नीचे मुजब दर्शाव्या छे.

पति-पत्नी तरीके छ भव, मित्र रूपे बे भव, भाई रूपे बे भव, अने पिता-पुत्र रूपे एक भव आम कुल अग्यार भवो आ रीते पसार कर्या बाद छेल्ला भवमां शंखराजानो जीव पृथ्वीचंद्र कुमार अने राणी कलावतीनो जीव श्रेष्ठिपुत्र गुणसागर तरीके जन्मे छे.

कृतिसार :- कृतिनी शरूआतमां कवि श्रुतदेवी भगवती शारदाने प्रणाम, नमस्कार मंत्रनुं स्मरण अने गुरुदेवना आशीर्वाद ग्रहण करीने कृतिनो प्रारंभ करे छे. कवि त्रीजी कडीना अंते 'बोलीशुं पृथ्वीचंद्र आख्यान' कही पोताना विषयनी वक्तव्यता स्पष्ट करे छे. कविए कृतिमां घणा स्थानो उपमा अने अलंकारनो प्रचुर उपयोग कर्यो छे. तो दृष्टांतो द्वारा पोताना कथित विषयनी महत्ताने पण बहु सारी रीते स्पष्ट करी छे. कृतिनी चोथी कडीथी ज कवि पोतानी काव्यप्रतिभाने शब्दोमां उतारी आपे छे. शीयळ विनाना व्यक्तिनो आदर अने शीयळ वगरना व्यक्तिनी वास्तविकता कविए केटलाय उदाहरण द्वारा दर्शावीने वाचकना परिणामने शील पालनमां वधु स्थिर कर्या छे. तो साथे साथे कथानी साथे प्रवाहित औपदेशिक तत्त्वने पण असरकारक रीते रजु करायु छे.

चौदमी कडीथी कृतिमां पृथ्वीचंद्र अने एनी आसपासनी विगतोने आवरी लेवामां आवी छे. विनीतानगरीमां हरिसींह राजानी पद्मावती राणीनी कुक्षिए पृथ्वीचंद्रनो जन्म थाय छे. कविए राणीनी वात आवता ज श्रेष्ठ स्त्रीओना लक्षणो जणाव्या छे. कवि पोतानी प्रतिभाओथी पोताना काव्यने अमरत्व प्रदान करता होय छे, एक खीलेलुं फूल खुश्बु वेरीने खरी जाय एम.

मध्यकालीन जैन साहित्यकारोनी प्रतिभा विशे जाणवुं होय तो आवी कथा के रास कृतिओ द्वारा बहु सरळताथी परिचय हाथवगो करी शकाय एम छे. बधा ज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुणो अने ग्रंथोनी वात अनुभवना बळे एमना काव्यमां जणाती जोवा मळे एवा साधु कविओ खरेखर मध्यकाळनी शोभा समान छे.

पृथ्वीचंद्रना परिणाम बदलाय छे. यौवनवये, त्याग अने तपना विचार आवे छे. भोगववानी क्षणे छोडवानो विचार स्फुरे छे. विनाशीमां अविनाशीनी वात जाणी गयेलो पृथ्वीचंद्र वैराग्यवासित थाय छे. जीव ज्यारे वैराग्य भीनो बने छे, एना आत्माने संवेगनो पुनित स्पर्श थाय छे, पछी जीवन आखुं बदलाई जाय छे. पृथ्वीचंद्र वैराग्य भीनो बनता स्वाभाविकपणे थती माता पितानी चिंता, पृथ्वीचंद्र साथे माता पितानो संवाद, आग्रहपूर्वक पृथ्वीचंद्रनुं आठ राजकुमारी साथे पाणिग्रहण, आठेय राजकुमारीने प्रतिबोध, अने राज्याभिषेक विगेरे घटनाओनी वात कविए चोवीश थी चोर्याशी कडीओमां सुंदर रीते रजु करी छे.

कविए दरेक घटनाओने एक सुंदर मजानुं रूपकाम कर्युं छे. घटनाओनी भीतर उछळतो प्रबळ संवेग, वाचन मात्रथी पृथ्वीचंद्र अने एनी आसपासनी घटनाओमां अनुभवातुं एक अजब प्रकारनुं नर्तन, व्यवहार जीवनमां अपनावी शकाय अने समाधि अने समताने हस्तगत करी शकाय आवुं घणुं बधु आ कृतिमांथी स्पर्शवा मळे छे.

ज्यां जीवने नथी जवानुं त्यां कर्मो लई जाय एवी बीना पृथ्वीचंद्रनी जेम आपणा सहु साथे बने छे ए वातने खूब ज सारी रीते आगळना पद्योमां रजु कराई छे. पृथ्वीचंद्रना राज्याभिषेकनी वात जणावीने कविए पृथ्वीचंद्रना घरवासने माछीमारनी जाळमां पडेली माछली साथे, के पारधीना पासमां फसायेला हरण साथे अने शिकारीए पकडेला मदमस्त हाथी साथे सरखावी, पृथ्वीचंद्रनी मनोस्थितिने सुंदर रीते शब्दांकित करी छे.

राजसभामां परदेशीनुं आगमन अने श्रेष्ठिपुत्र गुणसागरनी रजुआत आगळनी कडीओमां वाचवा मळे छे. देश देशांतरमां फरता फरता जोवा मळेला कौतुकोनी वात पृथ्वीचंद्र परदेशीने पूछे छे अने एना प्रत्युत्तरमां परदेशी श्रेष्ठिपुत्र गुणसागरनुं आखुं कथानक संभळावे छे. पृथ्वीचंद्र अने एमनी राणी, गुणसागर अने एमनी पत्निओ अने एमना माता पिता विगेरे मळीने कुल चोपन्न आत्माओ भावधारानी शुभता अने शुद्धताना परिणामे केवळज्ञान पामे छे.

आ प्रमाणे शंख राजा अने कलावतीना भवथी शरू थयेलो संबंध पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरमां विराम पामे छे. मित्रतानी क्षितिज उपर पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर शाश्वतभावे एक थई जाय छे, ओगळी जाय छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृति विशे :- प्रस्तुत कृति १७३ कडीमां पथरायेली छे. आखी कृतिमां ढाळ अने चोपाई बंधमां कृतिनी रचना थई छे. ढाळ क्रमांक अपायेल नथी. पण ढाळ अनुसार आठ ढाळनी आ रचना छे. रचनामां कविए पोतानी आवडतने कामे लगाडी कृतिने सुंदर ओप आपवानी पूरी तक लीधी छे. कविना वर्णननो स्पर्श वाचकने थया वगर रहेतो नथी. प्रसंगोचित कविनुं वर्णनसामर्थ्य कृतिनी उपादेयतामां वधारो करे छे. कृतिनी छेल्ली कडीमां कविए प्रहेलिका द्वारा करेलो वारनो निर्देश रचनामां चमत्कृतिनो अहेसास करावे छे.

कर्ता विशे :- कृतिनी छेल्ली कडीओमां मळता उल्लेख अनुसार प्रस्तुत कृतिना कर्ता भानुचंद्र गणिना शिष्य देवचंद्र छे. कडीनी छेल्ली गाथओमां कविए स्वयं पोतानो उल्लेख करीने कृतिनी विगतोने पूर्ण करी छे. भानुचंद्र गणिवर एमना समयमां बहु ख्याति प्राप्त साधु पुरुष हता. शत्रुंजयतीर्थनी यात्रानो वेरो भानुचंद्र गणिनी प्रेरणा अने महेनतथी बंध थयो होवाथी एमने शत्रुंजयकरमोचन एवुं बिरूद आपवामां आव्युं हतुं. एमनी साथे एमना शिष्य देवचंद्रजी पण आगवी प्रतिभा बळे विद्वद्जनोमां प्रिय हता. देवचंद्र गणि अने एमनी अन्य कृतिओना संबंधमां जाणवा माटे गुजराती साहित्यकोश मध्यकाळ (पेज नं. १८०), जैन गूर्जर कविओ भाग (भाग त्रीजो/पेज नं. २८७), हीरविजयसूरि रास, तेमज जैन परंपरानो इतिहास विगेरे ग्रंथो जोवा वाचकोने भलामण...

प्रत परिचय :- प्रस्तुत कृतिनी प्रत आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां क्रमांक ५७६५९नं.ना क्रमांक पर नोंधायेली छे. प्रतनुं आलेखन सुंदर अने एकसरखी ढबे शुद्ध रीते थयुं छे. कुल प्रतना पत्र एकवीश छे. एमां त्रण कृतिनो समावेश करवामां आव्यो छे. प्रतमां आलेखायेली त्रणेय कृतिओ भानुचंद्र गणिना शिष्य देवचंद्रजी महाराज द्वारा रचायेली छे. प्रतमां पत्र क्रमांक १A थी १०A सुधी नवतत्त्व रास, १०A थी १७A सुधी अत्रे प्रकाशित पृथ्वीचंद्र गुणसागर रास, अने १७A थी २१B सुधीमां शत्रुंजयतीर्थ चैत्यपरिपाटी स्तवननुं आलेखन थयुं छे. प्रतना लेखन संवत, प्रतिलेखक विगेरे कोई माहितीनो उल्लेख अत्रे करायो नथी. पण प्रतालेखनना आधारे कर्ताथी नजीकना समयमां एटले के १७मी सदीमां लखायेली होवानी संभावना व्यक्त करी शकाय छे. पत्र परिमाण कुल २५.५०X११.५० छे. अने एमां कुल १४ लाईन छे अने एक लाईनमां ४१ जेटला अक्षरोनुं आलेखन थयुं छे. कृतिगत दंड अने अंकस्थानो माटे लाल स्याहीनो उपयोग थयो छे. पत्रना मध्यभागे अक्षरालेखन विहिन चोरस तथा वापीकामय फुल्लिका छे. अक्षरो स्पष्ट अने बेठा घाटना सरळताथी उकेली शकाय एवा सुंदर छे. आ कृति अने एनी हस्तप्रतनी विगतो कैलास श्रुतसागर ग्रंथ सूचि भाग १४मां प्रकाशित थयेल छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथ्वीचंद्र गुणसागर रास

॥दूहा॥

प्रणमुं भगतिं भगवति भारती, जे तूठी आपइं शुभमति।
जस सेवइं सुर नर भूपति, जेहनइं नामइं सुख संपति ॥१॥

सारद शुभमति पूरो आस, आपो मुझनइं वचनविलास।
तुं **सरसति** कविजननी माय, सेवक उपरी करो पसाय ॥२॥

वली समरुं मनि मंत्र नवकार, चउदइंपूरवनुं जे सार।
श्रीगुरु केरुं पामी मान, बोलिशुं **पृथवीचंद्र** आख्यान ॥३॥

सीलवंतमांहि अतिभलो, चंद्र तणी परि जस निर्मलो।
तास रास सज्जन सांभलो, सीलवंत कहीइ गुणनिलो ॥४॥

सील विना सहु असुहामणुं, सुणयो तेहनां ओठां[१] भणु।
चंद्र विहूणी जिम रातडी, मूरिख साथिं जिम गोठडी ॥५॥

पति पाखइ[२] प्रमदा जेहवी, नरपति विण नगरी तेहवी।
महाव्रत पाखइं जिम अणगार, वस्त्र विहूणा जिम शणगार ॥६॥

भोजन घृत पाखइ जेहवुं, लोचन पाखइं मुख तिम कवुं[३]।
घोटिक[४] वेग विहूणो जेम, मयगल[५] दंत विहूणो तेम ॥७॥

जल पाखइ सरोवर जस्युं, देव पाखइ ते देवल कस्युं।
विनय विहूणो जेहवो शिष्य, जेहवो छाया पाखइं वृष्य ॥८॥

कंठ विहूणो गाइं गीत, सर विण वाणी कवइ कवीत्त।
बेटा मोटा जिम गुणहीन, प्रताप पाखइं भूपति दीन ॥९॥

खिमा विहूणो जेहवो यति, लाज विहूणी जेहवी सती।
प्रीति विहूणी जिम दंपती, लूण विहूणी तिम रसवती ॥१०॥

पांख विहूणो जिम पंखीओ, पुण्य विना मानव दुखिओ।
कुल नवि शोभइं विना आचार, सत्य विना तिम मुख आकार ॥११॥

लक्ष्मी पाखइं पुरुषप्रधान, पृथिवीमां न लहइं बहुमान।
तिम सील विना शोभा नवि लहइं, एह अरथ श्रीमुखि जिन कहइं ॥१२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हवइं ते **पृथिवीचंद्रकुमार,** कवण गामि ठामि अवतार।
तेहनो तात कवण ते राय, राणी-कवण ते तेहनी माय ।।१३।।

कवण परिं वइंरागी थयो, संयम पाली सुगतिं गयो।
सील बलिं केवल श्रीवरी, निसुणो भावि तेहनुं चरी ।।१४।।

सुविनीतानगरीनुं नाम, ठाम अछइं ते अतिअभिराम।
राज्य करइं राजा **हरिसींह**, न्यायवंत माहिं तस लीह ।।१५।।

तस घरि राणी **पद्मावती**, स्त्रीलक्षणलक्षितगुणवती।
नमणी-खमणी वंशविशुद्ध, करि घणु ही परि गुणवंत मुद्ध ।।१६।।

जे स्त्रीनइ गुह्य दक्षणभागि, दीसइं तिलक कुंकुमनइं रागि।
ते राजानी राणी थाय, अथवा पुत्र जणइं ते राय ।।१७।।

मसो जेहनइं अतिरातडो, नासाग्रइं होइ परगडो।
ते पटराणी थाइं सही, अथवा रायमाय ते कही ।।१८।।

जे स्त्रीनइ जिमणइं स्तनिसार, रक्ततिलक लांछन अधिकार।
तेहनइं कन्या होइं च्यार, ते प्रसवइं वली त्रणि कुमार ।।१९।।

जे नारिनइं डावइं कांनि, हाथे कंठि मसानइं वानि।
मसो तथा तिलक जो हुंति, पहिलइं गर्भि ते पुत्र प्रसवंति ।।२०।।

इत्यादिक लक्षण गुणवती, राणी छइं ते **पद्मावती**।
रायराणी विलसइ ते भोग, पंचविषयसुख तणो योग ।।२१।।

अनुक्रमि जायु पुत्र उदार, नामइं **पृथिवीचंद्रकुमार**।
क्रमि क्रमि वाधइं जिम ते बाल, तिम तिम महोच्छव करइ भूपाल ।।२१।।

बालपणइं ते बुधे आगलो, विद्या चउद भण्यो गुणनिलो।
सिलोक सुभाषित जाणइं सहु, धर्म तेणइं रसि रातो बहुं ।।२३।।

।।ढाल।।

एक दिन बइंठो यौवनवय ते गोखंडइं रे, जोइ जगह सरुप।
तीणइं अवसरि तिहां साधु एक देखी करी रे, देखइं पूरवभव भूप ।।२४।।

सील सोहामणो रे..

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधु तणा गुण समरइं कुमर वइरागीउ रे, लीणो तेणइं ध्यानिं।
सारे(रि)[8] पासे रमवानो रस छंडीउ रे, जाणइं जाउं रानि ।।२५।।

सील सोहामणो रे...

वली तिणइं तान मान राग रंग रस छंडीया रे, छंड्या गीत कवीत्त।
घोडा हाथी रामति[9] रमवी सहू तजी रे, उपशम आणी चित्त ।।२६।।

सील सोहामणो रे...

जातीसमरण पामीनइं ते जागीओ रे, भागी भवनी चांति[*]।
सील सुधारसमांहे कुंयरजी झीलतो रे, संयमनी करइं खांति ।।२७।।

सील सोहामणो रे...

एणइं अवसरि ते राजा-राणी चिंतवइं रे, कुमर न राचइं भोग।
यौवनवय पामीनइं वयरागी थयो रे, जाणे लीधो योग ।।२८।।

सील सोहामणो रे...

हवइं ते राजा राणी साजन सहु मली रे, परठइं परउ[*] अपार।
पाणीग्रहण करावो कुमरी आठनुं रे, पाडो पारि कुमार (?) ।।२९।।

सील सोहामणो रे...

राइं तेडाव्यो कुमरनइं तिहां भोलाववा रे, बोलावइं धरि नेह।
मीठे मीठे बोलडे बोलावीओ रे, तोहि न पल्हलइं तेह ।।३०।।

सील सोहामणो रे...

राय भणइं वछ! यौवनवय छइं ताहरी रे, ताहरी नवली वेस।
ए अवसर छइ भोग तणो भलो रे, तुं कांकरइं कलेस ।।३१।।

सील सोहामणो रे...

गीयरस तिय[10]रस तंति[11] तणा रस रुयडा रे, कछु कवित्तह भेय।
ए पंचइं जिणइं जगमाहिं नवि जाणीया रे, दैवइं डंख्या तेय ।।३२।।

सील सोहामणो रे...

मइं मंडाव्यामोटा[*] मंदिर मालीयां रे, ए ताहरुं छइं रज।
आठइं धरणी परणीनइं भोगवो रे, पंचविषय सुख आज ।।३३।।

सील सोहामणो रे...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तात वचन निसुणीनइं वलतुं इम भणइं रे, **पृथिवीचंद्रकुमार।**
हुं भवनाटिक नाची नाची ऊसनो[१२] रे, घात न रमुं वारवार ।।३४।।

सील सोहामणो रे...

मइं जोईनइं जोयुं तातजी एक मनां रे, ए संसार असार।
मन दढ करीनइं तप संयम हुं आदरुं रे, स्त्रीसुख दुखभंडार ।।३५।।

सील सोहामणो रे...

ए नारी रुपइं मुजनइं पास ज मंडीओ रे, हुं न पडु ए एणइं पासि।
जन्म अनंता आगइं विगूता एंहथी रे, घणुं दशा गर्भवासि ।।३६।।

सील सोहामणो रे...

वर वाधिणी वलगाडो मुझनइं तातजी रे, पणि म वलगाडो नारि।
एकवार वाधिणी हांइं दोहिली रे, पणि अनंतभव नारि ।।३७।।

सील सोहामणो रे...

वलि वलि तात वचन ते इम भणइं रे, सुणि सुणि माहरा पूत।
तुं जीव जीवन मुझ वल्लहो रे, कां भाजइं घर सुत ।।३८।।

सील सोहामणो रे...

तातवचन ते पाछु वाली नवी शक्यो रे, लाज करी मनमाह।
वली आठइं वहूअरनइं प्रतिबोधवा रे, गूंढइं मान्यो विवाह ।।

सील सोहामणो रे...

।।चोपई।।

कुमर विवाह मनाव्यो राय, अतिघणो उलट अंगी न माय।
आठ राय तेड्या तिणि वार, मागी कन्या तेहनी सार ।।३९।।

रुपइं त्रिभुवन मनमोहती, आठइं कन्या ते गुणवती।
निज पतिनइं प्रेमइं परणवा, ते सिणगार करइं नवनवा ।।४०।।

लगन लेईनइं परणावीया, उच्छव मेरु समाणा कीया।
हरख्यो मनमाहिं भूपती, वासुभुवनि पोहता दंपती ।।४१।।

आठ नारिस्युं ते परवर्यो, वास भुवनि वइंरागि भर्यो।
बइंठो सिंहासनि मनरली, ते सघली टोलइं तिहां मली ।।४२।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुख मोडइंनइं मटका करइं, रंगरोल तंबोल वावरइं।
देखाडइं परगट निज अंग, वांकी दष्टिं राखइं रंग ।।४३।।

एक चंदनस्युं चरचइं अंगि, गाढो भीडइं अंगोअंगि।
एक रगणी रंगि राती रमइं, नव नव रंग करंती भमइं ।।४४।।

पाए लागी बोलावइं एक, बोलइं बोल विकार अनेक।
दुखिणी आंसू पाडइं रडइं, दुख देखाडइनइं भुंइं पडइं ।।४५।।

मुखि मांडइं एकदस आंगली, दीनवचन बोलइं वलि-वलि।
स्वामी हवइं म दाखो छेह, तुम साथि अह्मे मांड्यो नेह ।।४६।।

एक दांतेस्युं तरणुं ग्रही, नयनबांण ताकीनइं रही।
एणी परि हाव-भाव बहु करी, विलविलती[13] विलखी[14] थई खरी ।।४७।।

बहु शृंगार तणी ओरडी, थाकी ते आठइं गोरडी।
पतिव्रता ते आलइं राही, दोय करजोडी आगलि रही ।।४८।।

हवइं ते **पृथिवीचंद्रकुमार**, निगुणी वयण अनेक अपार।
वइरागी उपशमभंडार, वलतो उत्तर भाखइं सार ।।४९।।

बूझो बूझो बूझो तह्मो, इंद्री वसि कीधां छइं अह्मो।
मोह तणी मति मूंको घणी, कषाय छंडो निजहित भणी ।।५०।।

भेद च्यार एहना छइं प्रगट, एक एक पाइं ते विकट।
क्रोध मांन मायानइं लोभ, त्रिहुं जगनइं उपजावइं क्षोभ ।।५१।।

सहजिं जीव सहू अतिविमल, ज्ञान दर्शन चारित्रइं सकल।
फटिकरत्न परि निर्मलजीव, कषाय च्यार पीड्यो करइं रीव[15] ।।५२।।

।। पूराढाल ।।

रे फरसराम क्रोधइं करी, क्षत्री क्षय कीध।
अनइं सभूमि बांभण हणी, नरग तणां फल लीध ।।५३।।

इम जाणी जीव जागीइं, तजीइं क्रोध कषाय।
रागद्वेष वली टालीइं, जिम शिवसुख थाय ।।५४।। ।।आंकणी।।

रे हरिकेसी जाति मद थकी, नीच कुलि अवतार।
जाति विद्या कुल लाभ तणो, मद म करि गमार ।।५५।।

इम जाणी जीव...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे महावीर मरीयचि भविं, कुलमद कर्यो अपार।
तिणि भव घणा भमी भमी, छेहडइं माहणकुलि अवतार ।।५६।।

इम जाणी जीव...

रे माया मूलथी टालीइं, मायाना बहु भेद।
मल्लिनाथ माया थकी, पाम्या स्त्री वेद ।।५७।।

इम जाणी जीव...

रे नवइं नंद लोभी थया, मेली कंचनकोडि।
कालिं ते देवे हरी, पोतइं आवि खोडि ।।५८।।

इम जाणी जीव...

रे पांचइं इंद्री जीतीइं, जिम टलइं कषाइं।
एकेकइं ते मोकलइं, जीव बहु दुख थाय ।।५९।।

इम जाणी जीव...

रे पांचइं इंद्री वसिकरो, मन आणो ठाणी।
मोटुं कारण मन तणुं, मन जीतइं निरवाणि ।।६०।।

इम जाणी जीव...

यतः

यथा आलिंग्यते पत्नी, तथा आलिंग्यते सुता।
मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयोः ।।६१।।

मुंड मुडाइं कहा................................ ।।६२।।

।।राग - आसाउरी।।

आपण पोहता वार अनंती, देवलोक मझारि।
जय जय नंदा जय जय भद्दा, जिहां करती सुरनारि ।।६३।।

पूजी परमेसरनी प्रतिमा, जाणुं नही सरुप।
सद्हण विण समकित पाखइं, जोया विमान सरुप ।।६४।।

दीठउं देवलोक आनंदइं, हीयडइं हरख न माय।
पडिया प्रमादिं पूरण कीधां, सागरपल्यनां आय ।।६५।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रीडा कीधी नाटिक निरख्यां, अवर नही उपयोग।
दुःख सवे मुंक्यां विसारी, विलशा(से) अमरीभोग ।।६६।।

परनी देवी देखी झूर्या, तृपति न पाम्यो जंत[१६]।
पूरी आय इसी परि आण्यो, देवलोक भव अंत ।।६७।।

वली आपण पणि वार अनंती, आव्या माणसमाहिं।
गर्भवासि बाला(ल)पणि बहुली, वेदन पडिया प्रवाहिं ।।६७।।

हुं नारी तुह्मे पुरुष सरूपिं, तुम्हे नारि हुं पुरुष।
इम घरवासिं वार अनंती, आपण भोगव्यां सुख ।।६१।।

हुं नरग मझारि विगूतो नारी, पडीओ सुरनइं पासि।
काल अनंत मोह वसि रलीओ, हवइं न रहु घरवासि ।।७०।।

इम कर्म तणइं वसि जीव रोलव्यो, तुम्हे विचारी जोओ।
माणसनो भव दोहिलो, लाधो ते कां आली[१७] खोओ ।।७१।।

क्रोध मांन माया मद छांडो, आणो मनि वइंराग।
अंतरंग लोचन ऊघाडी, मुंको ममताराग ।।७२।।

ते गुणवंती आलइं गोरी, वरने वचने जागी।
दोय कर जोडीनइं ते आठइं, कुमरनइं पाए लागी ।।७३।।

बलिहारी जाउं मोरी सासू, जिणइं जायो तुं पिउडा।
संसार तणां दुख छोडो स्वामी, आपो सिवसुख रूयडा ।।७४।।

प्रतिबोधाणी आठइं राणी, जाणी कुमर कहइं वात।
तुम्हे सील साचुं अंगि आदरो, जिहां न मलइं मुज तात ।।७५।।

।। ढाल ।।

कुमर वइंरागिं पूरीओ, उठ्यो साहसधीरो रे।
राजसभामाहिं गयो, प्रह उगमतइ वीरो रे ।।७६।। ।। आंकणी।।

कुमर वइंरागइं...

माडि मनि आरया धणी, पुत्र पालशइं राजो रे।
आठ बहू करशइं सही, सासूडीनां काजो रे ।।७८।।

कुमर वइंरागइं...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आंसू पाडइं दुःख धरइं, वली करइं विलापो रे।
तुं निसनेहो कां थयो, कुण कीधां मइं पापो रे ।।७९।

कुमर वइंरागइं...

वली वली माडी इम भणइं, वछ तुझ नवली वेसो रे।
सकलकला गुण तुं भर्यो, कीम दीजइं आदेसो रे ।।८०।।

कुमर वइंरागइं...

ताहरइं आठ अंतेउरी, सरखी राजकुमारर्यो रे।
विषय तणां सुख भोगवो, विषमो विषय विकारो रे ।।८१।।

कुमर वइंरागइं...

वछ! ए राज तुह्मारडुं, अह्मे हुया व्रतयोगो रे।
अवली गति तुह्मो कां करो, ल्यो ए राज्यनो भोगो रे ।८२।।

कुमर वइंरागइं...

एणी परिं मातपिता तणां, निसुणी वयण अनेको रे।
नीरागी ते नवि दीइं, वलतो ऊत्तर एको रे ।।८३।।

कुमर वइंरागइं...

इणइं अवसरि नृप ह[र]खिओ, उलट अंगि न मायो रे।
जोरइं पणि अणवांछतो, **पृथिवीचंद्र** कर्यो रायो रे ।।८४।।

कुमर वइंरागइं...

राज देईनइं कुमरनइं, पहराव्या सणगारो रे।
मस्तकि मुकुट सोह्रामणो, उरवरि नवसर हारो रे ।।८५।।

कुमर वइंरागइं...

राजकुली सघली मली, प्रणमइं राणा रायो रे।
जय जयकार सहु करइं, माथइं छत्र धरायो रे ।।८६।।

कुमर वइंरागइं...

मादल भुंगल भेरि-नफेरी, वाजइं ढोल नीसाणो रे।
नगरमाहिं सघलइं वरतावी, **पृथवीचंद्र**नी आणो रे ।।८७।।

कुमर वइंरागइं...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिम मयगल वनवासीओ, करतो केलि उल्हासो रे।
तेह अजाडी[१८]माहिं पड्यो, तिम कुंयर घरवासो रे ।।८८।।
कुमर वइंरागइं...

जिम ईच्छाचारी हरिणलो, पड्यो पारधी पासो रे।
झूरइं अहनिसि वापडो, तिम कुंयर घरवासो रे ।।८९।।
कुमर वइंरागइं...

जिम धीवर[१९] जालइं पड्यो, पामइं माछि(छ)लो त्रासो रे।
जिम पंखी पंजरि पड्यो, तिम कुंयर घरवासो रे ।।९०।।
कुमर वइंरागइं...

एक दिन बइंठो राजसभा, पूरी राय सुजाणो रे।
सुधन सारथवाह आवीओ, भेटि करइं बहुदाणो रे ।।९१।।
कुमर वइंरागइं...

राय भणइं सारथपती, कहो को अपूरव वातो रे।
तुम्हो थया देसाउरी[२०], जाणो बहु अवदातो रे ।।९२।।
कुमर वइंरागइं...

।। गाहा ।।

दीसइं विविहचरियं, जाणिज्जई सज्जण-दुज्जण विशेषो।
अप्पाणं च कलिज्जई, हिंडिज्जई तेण पुहवीए ।।९३।।

।।चोपई।।

सारथपति कहइं निसुणो राय, कांन तणो हवइं करो पसाय।
जो सांभलवानी छइं षांति[२१], तो हुं पभणुं छंडी भ्रांति ।।९४।।

गजपुर नाम नयर सुविचार, गढ मढ मंदिर पोलि उदार।
जिहां जिनमंदिर अतिहिं उत्तंग, परदेसी मनि पामइं रंग ।।९५।।

सेठ **रयणसंचय** तिहां वसइं, धनबलि जेह धनदनइं हसइं।
गरथवंत[२२] नर गुंगा करइं, गरथ[२३] विहूणो आंसू भरइं ।।९६।।

यतः

दोय जीहा गय[२४] वंकुडी[२५], तस रिपु स्वामी नारि।
तिणी नारि जे परीहरया, भूला भमइं संसारि ।।९७।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामचंद्र जब वनि संचर्या, सीता लक्ष्मणस्युं परवर्या।
गुरुवंदन करवा वनि गया, तब गुरु टलीनइं अलगा थया ।।९८।।

पुनरपि रावण जीति करी, आव्या तिहां जयलक्ष्मी वरी।
तब गुरु ऊठी साहमा वहइं, रामचंद्र पगि लागी कहइं ।।९९।।

रामचंद्र उवाच

स एवाऽहं स एव त्वं, तदेव कदलीवनं।
गमनावसरे नाभूत्, सांप्रतं तु किमादरः ।।१००।।

गुरुवाच

धनमर्जयकाऊरस्थ(?), धनं मूलमिदं जगत्।
अंतर नैव पश्यामि, निर्धनस्य मृतस्य च ।।१।।

।। चोपई ।।

धनवंतनइं कुलवंत सहु कहइं, पंडित पदवी धनवंत लहइं।
सगा-सगप्प(प)ण धन बलि थाय, धनवंत ते गुणवंत कहवाय ।।२।।

हवइं ते सेठ छइं धननो धणी, रतनराशि तेहनइं छइं घणी।
तस घरि नारि **सुमंगला** सती, कंत तणइं ते मनिभावती ।।३।।

गुणसागर नामइं तस पुत्र, जाणइ धर्म कला तणइं सूत्र।
यौवनवय पाम्यो ते सार, कन्या आठ जोई तेणी वार ।।४।।

तात वेवाही धरि उच्छाह, वारू[२६] केलवीइं[२७] विवाह।
मिली सवि अभरी अनुसारि, धवल-मंगल ते गाइं नारि ।।५।।

ईणइं अवसरि **गुणसागरकुमार**, विचरइं नगरमाहिं जिम अमर।
मधुकरी करता दीठा यती, जेहनइं पाप न लागइं रती ।।६।।

तस दरिसन दीठाथी ठर्यो, लही जातिनइं भव सांभर्यो।
आप काज करवानुं ध्यान, अंतरंग तस ऊघड्या कांन ।।७।।

थई वइरागी घरि आवीओ, मातपितानइं मनि भावीओ।
पाय लागीनइं मागइ मान, मुझनइं आपो संयमदान ।।८।।

वलतु मातपिता कहइं अस्युं, ताहरइं मनि एवुंस्युं वस्युं।
आ अवसर छइं विवाह तणो, अह्म मनि उलट छइं अतिघणो ।।९।।

For Private and Personal Use Only

अबला आठ कन्या सुकुमाल, अमरी सरखी कुमरी बाल।
अणबोल्या परणो तुह्मे पूत, तुह्म सारू छइं अह्म घर सूत ।।१०।।

तव कुंयर पगि लागी भणइं, निसुणो वीनती आदर घणइं।
ए संसार असार अपार, सगपण हूयां अनंतीवार ।।११।।

जिम जिम व्याप कुंटंबनो थाइं, तिम तिम जीव नरगमां जाइं।
देवलोकि वली हूओ देव, एकेंद्री थाय ततखेव ।।१२ ।

वली वनस[प]तिमाहिं भम्यो, दुःख अनंत तिहां पणि खम्यो।
इम योनि लाखचोरासीमाहिं, जीवनइं उपजवानी आहि[२८] ।।१३।।

जिम नाटकीओ नाटिक करइं, नव नव वेष करंतु फरइं।
जीव करइं तिम नव नव वेस, फरसइं चउदराज परदेस ।।१४।।

आगइं मइं कीधा संभोग, परणी मेल्या कुटंब संयोग।
मातपिता पुत्रादिक तणा, संबंध कीधा छइं अति घणा ।।१५।।

यत:

न सा जाई न सा जोणी, न तं ठाणं न तं कुलं।
न जाया न मूया जत्थ, सव्वे जीवा अणंतसो ।।१६।।

जे कन्या मुझ परणावस्यो, तेहनी कूखिं हुं वहु वशो।
जिनवर वचने ईम जाणीइं, ते कन्या किम घरि आणींइं ।।१७।।

तुं डाही माता सुणि मर्म, द्यो आदेश करुं जिम धर्म।
खिण एक रहवुं न खमइं हवइं, करो पसाय मोरइं मनि गमइं ।।१७।।

वच्छ ! दसमासामइं उअरिं धार्यो, पाली पोसी मोटो कर्यो।
माहरइं मनि छइं ए उच्छाह, माहिंरइं[२९] बइंसी करो विवाह ।।१९।।

पूरि मनोरथ हवइं मायनो, तुं सपुत्र भगतो उपनो।
कह्युं जो मानिसि जो माहरुं, तो हुं नवो दावो[३०] नहि करु ।।२०।।

मात तणुं हवइं वचन प्रमाण, करइं कुमर अवसर नो जाण।
संतोषाणो सहु परिवार, करइं सवे ते जय जयकार ।।२१।।

ससरानइं कहवराव्युं वही[३१], परणी चारित्र लेस्युं सही।
तव ते आठ विचारइं मली, वर बीजो जोस्युं मनरली[३२] ।।२२।।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोलइं कुमरी तव रडवडी[33], वर अवर वरवा आखडी[34]।
एहवो निश्चय जाण्यो यदा, लेई लगन सहु वलीओ तदा ।।२३।।

हवइं मोटा मांड्या मांडवा, बांध्या चंदरूआ नव-नवा।
टोले टोले करती गांन, नारि मली केलवइं पकवान ।।२४।।

खाजां चुरमा सेव-लाडूया, गल्या गांठीया नही पाडूया[35]।
मांडी मरकी मोदक जाति, झीणा फीणा दीधी पाति ।।२५।।

भली जलेबी घेवर घणा, मेवानी पणि[36] नही तिहां मणा।
खजूर खलहलां खारिकि द्राख, नीमजां परस्तांनी[37] कुण भाख ।।२६।।

चारोली चारबी अखोड, खातां पोहचइं मनना कोड।
बदाम गोटा मोटा वली, साकर दूधमाहिं तिहां भली ।।२७।।

पापड पापडी अनइं वडी वडां, शालि दालि धृत धोलपडवडां।
स्वजन जम्या दिधा तंबोल, कर्या छांटणा अतिरंगरोल ।।२८।।

गुणसागर वर तव संचर्या, माथइं मुगट मनोहर भर्या।
विविध कुसम टोडर[38] उरि हार, पहर्या अवर सवे शण्गार ।।२९।।

वरधोडइं सोहइं अतिभलो, वइरागी कुंअर गुणनिलो।
अनुक्रमि पोहतो तोरण बारि, जई वइठो मांडवा मझारि ।।३०।।

सवि शणगार तणी ओरडी, हरखी ते आवइं गोरडी।
कंत तणो कर झाली रही, हवई न जावा देसुं सही ।।३१।।

गुणसागर थई बइठो धीर, भावइं भावना एहवी वीर।
जीव एकलो छइं संसारि, को कहइं नो नथी निरधारी ।।३२।।

सुख विहचवा[39] मलइं सहु कोइं, दुख विहचवा न आवइं दोय।
सगासणीजा[40] अनइं कलत्र, मातपितानइं वाहला पुत्र ।।३३।।

स्त्री करिव लीउं निःसंचल्यु, देखी नमि राजा एकलुं।
प्रतिबोधाणो सुखीओ थयो, जीव एकलो ते गुगति गयो ।।३४।।

इम चींतवतो भावइं चढ्यो, मोह मदन साथिं अतिवढ्यो।
पाप पखाल्यां समतानीर, जीत्या कर्म महाभडवीर ।।३५।।

उपनुं केवल ज्ञानझमाल, सुर हरख्या आव्या ततकाल।
कंचनकमल रची पाइं नमइं, देवदुंदुभी वाजइं तिणइं समइं ।।३६।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते कोतिक कुमरी देखती, वइंरागिणि हूई गुणवती।
कर्म तणा मल सवि धोयती, केवल पामी आठइं सती ।।३७।।

वरकन्या केवल सुर कहइं, जे देखी सहु मनि गहगहइं।
मातपिता उपनो वइंराग, मोहतणो तेणे कीधो त्याग ।।३८।।

भावइं चढ्या आव्युं शुभध्यान, ते पणि पाम्या केवलज्ञान।
सकल कर्मनो आणी अंत, ते सतावीस थया भगवंत ।।३९।।

वइंठो कनक कमलि केवली, रायराणा वंदइं वली-वली।
जे पूछइं मनना संदेह, **गुणसागर** कहइं उत्तर तेह ।।४०।।

बइंठो दीठो हुं सभा मझारि, केवली बोलाव्यो तिणि वार(रि)।
सारथपति सांभले जे कहुं, तुं जाणइं छइं जाउ कइं रहुं ।।४१।।

ए कुतिग जोवा तुम भाव, तु **उवझापुरी** जाओ मान भाव।
कुतिग दीठुं इहा जेहवुं, तिहां राजभुवनि देखशो तेहवुं ।।४२।।

एह वचन निसुण्यां भइं तिहां, कुतिग जोवा आव्यो इंहां।
पूछी तुझो अपूरववात, तो मई कह्यो एह अवदात ।।४३।।

।।ढाल।।

वइंठो सिंघासण राजीओ मनमोहन,
पृथिवीचंद्र पवित्र लाल मनमोहन।
सारथपति पासइं सुणइं मनमोहन,
गुणसागर चरित्र लाल मनमोहन ।।।४४।।

गुणवंतना गुण सांभली मनमोहन,
उलट अंगि न माय लाल मनमोहन।
करइं प्रशंशा ते घणी मनमोहन,
धन धन ए रुषिराय लाल मनमोहन ।।४५।।

अहो ! एहनुं मनदृढपणुं मनमोहन,
अहो ! एहनो वइंराग लाल मनमोहन।
मांहिं रइं केवल लही मनमोहन,
साधिओ शिवपुरमाग लाल मनमोहन ।।४६।।

धन ते आठ अंतउरी मनमोहन,
धन जननी धन तात लाल मनमोहन।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अउठकोडी रोम उल्लसइं मनमोहन,
एह सांभलतां ए वात लाल मनमोहन ।।४७।।

इम चिंतवतां रायनइं मनमोहन,
आव्युं उत्तम ध्यान लाल मनमोहन।
अनित्य भावना भावतां मनमोहन,
पाम्युं केवलन्यान लाल मनमोहन ।।४८।।

तिणइं अवसरि तिहां आवीया मनमोहन,
सुर-असुरादिक वृंद लाल मनमोहन।
कमल रच्युं सोवनमइं मनमोहन,
तिहां बइठो पृथिवीचंद लाल मनमोहन ।।४९।।

दुंदुंभी वाजइं देवनी मनमोहन,
बइठी परषद जाण लाल मनमोहन।
अतिमधुरइं नादइं करी मनमोहन,
केवली करइं वखाण लाल मनमोहन ।।५०।।

प्रतिबोधाणी कामिनी मनमोहन,
आणइं मनि वइराग लाल मनमोहन।
उपशमरसमां झीलतां मनमोहन,
टाल्यो मनथी राग लाल मनमोहन ।।५१।।

भवनुं नाटिक निरखती मनमोहन,
ते पामइं शुभध्यान लाल मनमोहन।
क्षपकश्रेणि चढ्या पछी मनमोहन,
उपनुं पंचम न्यान लाल मनमोहन ।।५२।।

ते नरनारी केवली मनमोहन,
नवजण दीठां जाम लाल मनमोहन।
मातपिता भावइं चढ्यां मनमोहन,
पाम्या केवल ताम लाल मनमोहन ।।५३।।

नवजणनां मातापिता मनमोहन,
गणतां ते सत्तावीस लाल मनमोहन।
कुटुंब करयुं सहु केवली मनमोहन,
पोहती मनह जगीस लाल मनमोहन ।।५४।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरनारी सहु कोमल्युं मनमोहन,
आव्या राणाराय लाल मनमोहन।
केवल महिमा सहु करइं मनमोहन,
दीठइं आनंद थायइं लाल मनमोहन ।।५५।।

इणइं अवसरि पूछइं तिहां मनमोहन,
सुधन सारथपति एम लाल मनमोहन।
तुम बिहुं जण केवल तणो मनमोहन,
संबंध एक छइं केम लाल मनमोहन ।।५६।।

वलतुं भाखइं केवली मनमोहन,
सुणि सारथपति धन्य लाल मनमोहन।
अह्मो बिहुं पूरवभवि मनमोहन,
कीधां सरखा पुण्य लाल मनमोहन ।।५७।।

पुत्र पिता अह्मो हता मनमोहन,
आठ-आठए नारि लाल मनमोहन।
सहु साथिं संयम लीओ मनमोहन,
पाल्युं निरतीचार लाल मनमोहन ।।५८।।

बिहुं चारित्र आराधतां मनमोहन,
कर्म कर्या चकचूर लाल मनमोहन।
पोहुता सर्वारथसिधिं मनमोहन,
सुख लाधां भरपूर लाल मनमोहन ।।५९।।

तिहां सागर तेत्रीसनुं मनमोहन,
पूरण भोगवी आय लाल मनमोहन।
गुणसागर व्यवहारीओ थयो मनमोहन,
हुं आवी हुओ राय लाल मनमोहन ।।६०।।

पूरव प्रेम तणइं वसिं मनमोहन,
आठ नारि संपत्त लाल मनमोहन।
भोगकर्म नवि बांधीउं मनमोहन,
तिणइं हूया विषयविरत्त लाल मनमोहन ।।६१।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाम्यु केवल उजलुं मनमोहन,
दीठा चउदइं राज लाल मनमोहन।
साथिं शिवपुरि पोहचस्युं मनमोहन,
सारी निज निज काज लाल मनमोहन ।।६२।।

ए वृत्तांत सुणी तिहां मनमोहन,
बहुजण चारित्र लीध लाल मनमोहन।
सारथपति श्रावक थयो मनमोहन,
एह प्रश्न जेणइं कीध लाल मनमोहन ।।६३।।

जिम उदयाचलि ऊगीओ मनमोहन,
तिमिर निवारइं भाण लाल मनमोहन।
तिम **पृथिवीचंद्र** केवली मनमोहन,
टालइं संदेह जाण लाल मनमोहन ।।६४।।

विहार करइं भूमंडलिं मनमोहन,
बुझवइं जाण अजाण लाल मनमोहन।
दया मूल जिनधर्मनुं मनमोहन,
नित नित करइं वखाण लाल मनमोहन ।।६५।।

।।चोपाई।।

इम ते **पृथिवीचंद्रकुमार, गुणसागर** बेहु करइं विहार।
प्रतिबोधी नरनारी कोडी, सुगतिं पोहता पाप विछोडि ।।६६।।

ते चोपन जण केवल लही, साधिउ शिवपुर संयम ग्रही।
सीलिंइ नित-नवला शिणगार, सीलिंइ राज रमणिभंडार।।६७।।

सील वडु दीसइ संसारि, पालो सील सहू नरनारि।
सीलवंतनइ द्यइं सहु मान, सीलवंत घरि नवइ निधान ।।६८।।

सीलवंतमांहि जस लीह, सील पालवा हूया सीह।
ते तो **पृथवीचंद्रकुमार, गुणसागर** पणि बीजो सार ।।६९।।

सावलीनगर रही चोमासि, संवत **सोलछन्नुंइ** उल्लासि।
फागुण सुद एकादशि धारि, वार कहु ते हवइं विचारि ।।७०।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सायरसुतभगिनीपतिपुत्र, वयरीसुतवाहनभख्यसत्रु।
तेहनी गति जिहां तेहनुं रत्न, तेह वार जाणो कविरत्न ।।७१।।

पुष्य नक्ख्यत्रि कीधो रास, सीलवंत नो हुं छुं दास।
तपगछपति गुरु गोयम समान, **विजयदेवसूरि** युगहप्रधान ।।७२।।

तास पाट प्रगट्यो जिम भांण, **विजयसिंहसूरि** युगहप्रधान।
वाचक भानुचंद्रनो शीस, देवचंद्र प्रणमइं निशदीश ।।७३।।

।। इति श्री पृथ्वीचंद्रकुमार रास संपूर्णम् ।।

कठिन शब्दार्थ

१. **ओठां** = दृष्टांत
२. **पाखइ** = विना
३. **कवुं** = केवुं (?)
४. **घोटिक** = घोडो
५. **मयगल** = हाथी
६. **सारे(रि)** = सोगठांबाजी
७. **रामति** = रमत
८. **चांति** = (चिंता?)
९. **परठ** = शरत
१०. **तिय** = स्त्री
११. **तंति** = एक प्रकारनुं वाजिंत्र
१२. **ऊसनो** = खिन्न, क्षीण
१३. **विलविलती** = विलाप
१४. **विलखी** = लाचार, अनुपाय
१५. **रीव** = पोकार
१६. **जंत** = जीव
१७. **आलि** = फोगट, व्यर्थ
१८. **अजाडी** = माया
१९. **धीवर** = माछीमार
२०. **देसाउरी** = परदेशी
२१. **खांति** = क्षमा
२२. **गरथवंत** = धनवान
२३. **गरथ** = धन, नाणुं
२४. **गय** = गति
२५. **वंकुडी** = वांकुं
२६. **वारु** = सुंदर, उत्तम
२७. **केलवइ** = तैयार करवुं, रचवुं
२८. **आहिं** = स्थान
२९. **माहिंरइ (माहेरुं)** = लग्नविधिनो-मंडप
३०. **दाव** = आग्रह, आग्रहपूर्वकनी-मांगणी
३१. **वही** = वहिमां
३२. **मनरली** = मनना उमंगथी
३३. **पडवडी** = जाण
३४. **आखडी** = नियम, बाधा
३५. **पाडूया** = नठारुं, हलकुं
३६. **पणि** = दुकानमां
३७. **पस्तां** = पीस्ता
३८. **टोडर** = डमरानी कलगी
३९. **विहचवा** = वहेंचवा
४०. **सणीजा** = स्नेहीजन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जिनप्रभसूरिकृत फारसी भाषामां ऋषभदेव स्तवन

श्री जिनविजयजी

आ नीचे आपेलुं स्तवन जैन साहित्यमां एक नवी वस्तु छे. जैन ग्रंथकारोए भारतवर्षनी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, गुजराती, पंजाबी, कानडी, तामिळ, तेलुगु वगेरे आर्य अने द्रविडीय भाषाओमांनी घणीक भाषाओमां पोतानी अनेक कृतिओ करेली छे ते तो सुविदत ज छे, पण फारसी जेवी म्लेच्छोनी भाषामां पण जैनाचार्योए कांइ रचना करी हशे एनी कल्पना मने आ स्तवन जोयां पहेलां थइ शके तेम न हती.

जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरिना शिष्यो अकबर बादशाहना दरबारमां विशेषपणे रह्या हता तेथी तेमने बादशाहातनी राजभाषानो सारो परिचय थयो होवो जोइए ए देखीतुं छे अने तेना पुरावाओ पण तपास करतां मळी आवे तेम छे.

भक्तामर स्तवननी टीकामां के बीजे क्यांए मारा वांचवामां आवेलुं छे के सिद्धिचंद्र पंडित फारसी भाषा जाणता हता. पण ए विद्वाने फारसी भाषामां कांइ रचना पण करी हती के केम तेनो पुरावो अद्यापि मारी जाणमां आव्यो नथी. पण प्रस्तुत स्तवन तो एक रीते घणुं जूनुं कहेवाय. कारण के आना कर्ता श्रीजिनप्रभसूरि १४ मा सैकामां थएला छे. तेओ अला-उद्-दीनना जमानाना छे.

दिल्ली अने तेना आसपासना प्रदेशोमां ते घणो समय विचर्या होय एम तेमना संबंधे मळी आवती हकीकत उपरथी समजाय छे. अला-उद् दीन पछी दिल्लीनी गादिए आवनार महमूदशाह बादशाहना दरबारमां ते सूरिवर जता आवता हता अने ए बादशाहने पोतानी चमत्कृतिओ बतावी एनी जैन धर्म तरफ कांईक सहानुभूति मेळवी, मुसलमानोना हाथे थता जैन मंदिरोना नाशने केटलेक अंशे अटकाववामां तेमणे सफळता मेळवी हती.

आ विगत जोतां, तेमने फारसी भाषानो परिचय थाय अने तेमां कुतुहलथी खातरी आवी प्रभुस्तुति बनाववा प्रेराय ते प्रसंगप्राप्त छे. जिनप्रभसूरि समर्थ विद्वान् हता ए वात तो तेमना बनावेला विविधतीर्थकल्प, विधिप्रपा, संदेह विषौषधी, स्मरणटीका वगेरे जे केटलाक ग्रंथो मळी आवे छे ते उपरथी जणाइ आवे छे.

ए ग्रंथो उपरांत, संस्कृत प्राकृत भाषामां तेमणे अनेक स्तुति-स्तोत्रो रचेलां छे, जेओमांनां केटलांक प्रकट थएलां अने केटलांक अप्रगट रहेलां दृष्टिगोचर थाय छे. एम संभळाय छे के जिनप्रभसूरिने प्रभुस्तुतिओ रचवानो एक प्रकारनो जाणे नियम ज होय तेम प्रति दिवस तेओ कोई न कोइ नानी मोटी प्रभुस्तुतिनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रचना करता त्यारे ज तेओ मुखमां कोइ वस्तु लेता. कहेवाय छे के आ नियमने लइने तेमणे प्रायः ७०० जेटली स्तुतिओ वगेरेनी रचना करी हती.

जिनप्रभसूरिनी आवी उत्कट प्रभुभक्तिए, फारसी जेवी म्लेच्छभाषाने पण भगवान ऋषभदेवनी स्तुतिद्वारा पवित्र करी तेने जाणे जैनमुनिओना मुखमां प्रवेशवानो, जैन मंदिरोमां बोलवानो, अने जैनग्रंथ भंडारोमां स्थान पामवानो हक्क-परवानो करी आप्यो. नहिं तो **''न वदेद् यावनीं भाषां प्राणैः कंठगतैरपि''** आ जातना यावनी भाषा न बोलवा माटे राख्या करी राखेला रूढीपोषक शिष्ट नियमनो भंग करवानो अन्य प्रसंग तो मळवो ज कठिण हतो.

खरेखर भाषाविषयक जैन विद्वानोनुं उदार आचरण आखी हिंदुप्रजाने अनुकरण करवा लायक हतुं. जैनाचार्योए ब्राह्मणोनी माफक कोईपण भाषानी अवगणना करी नथी तेम ज कोइपण भाषाभाषी मुमुक्षुजनने माटे ज्ञानना द्वार बंध राख्यां नथी. एटलुं ज नहिं पण अनेक अति सामान्य भाषाओने पोतानी प्रतिभावाळी कृतिओथी अलंकृत करी, जैनसंतोए उच्च अने प्रगतिशील भाषाओमां स्थान मेळववानी अधिकारिणी बनावी दीधी छे.

वर्तमान आर्यप्रजा हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाळी अने पंजाबी वगेरे जे देश भाषाओ द्वारा पोतानो जीवित व्यवहार चलावी रही छे ते भाषाओनी मूळ जननी प्राचीन प्राकृतने जो जैन विद्वानोए न पोषी होत तो आजे आपणा निकट-पूर्वजोनी पूज्यवाणीनो भरमावशेष पण आपणे न मेळवी शक्या होत. आपणा पूर्वजोनी मातृभाषाने अमर बनाववानो संपूर्ण श्रेय जैन ग्रंथकारोने ज छे. अस्तु.

जेम, प्राचीन वस्तुओना संग्रह स्थानमां दुर्लभ्य जणाती कोइ वस्तु वधारे महत्त्वनी अने विशेष ध्यान खेंचवा लायक होय छे तेम जैन स्तवन, स्तुति, स्तोत्रो, आदिना संग्रहमां आ स्तवन पण वधारे महत्त्वनुं अने विशेष वस्तु जेवुं छे. आ स्तवननुं मूळ पानुं प्रवर्तक श्रीकांतिविजयजी महाराजना भंडारमांथी मळी आव्युं छे.

ए पानुं, जेम एनी अंते लखेलुं छे, पं. लावण्यसमुद्र गणिना शिष्य पं. उदयसमुद्र गणिए लख्युं हतुं. पानुं पंचपाटीना रूपमां लखेलुं छे. एटले के वच्चे मूळ स्तवन लखेलुं छे अने आसपास तथा ऊपर नीचे एम चारे बाजुए टीका लखेली छे.

टीकानी अंते पं. लावण्यसमुद्रगणिनुं ज नाम छे तेथी एम लागे छे के प्रथम मूळ स्तवन पं. लावण्यसमुद्रना शिष्य उदयसमुद्रे लखी दीधुं हतुं अने पछी ते उपर टीका तेमना गुरुए लखी दीधी हती. लख्यानी साल जो के छे नहिं तेथी पं. लावण्यसमुद्रनो समय जाणी शकवानुं बन्युं नहिं, पण अक्षरोनुं वळण अने पानानी स्थिति जोतां ते १७मा सैकाथी अर्वाचीन तो नहीं होय तेम लागे छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ स्तवनमां फारसी आरबी ने देशी-अपभ्रंश ए त्रण भाषाना शब्दोनो प्रयोग थएला छे. एम ए स्तवननी संस्कृत टिप्पणी लखनारनुं कथन छे अने ते बराबर छे. **कामु** (कडी ३जी), **छोडिय** (कडी ६), **जिम** (कडी १०), वगेरे शब्दो अपभ्रंश-गुजराती छे अने बीजा फारसी-आरबी छे.

ए फारसी-आरबी शब्दोने पण स्वभाषाना प्रत्ययो लगाडी अर्ध देशी जेवा बनावी लेवामां आव्या छे. दाखला तरीके खिदमत, रहमान, सलाम, हराम, जानवर वगेरे शब्दोने बदले **खत्तमथु** (कडी ३), **रहमाणु** (कडी ५), **सलामु, हरामु** (कडी ७), **जानूउरु** (कडी ८) इत्यादिरूपमां लखेला शब्दो लइ शकाय. वळी केटलाक शब्दो तो एवा पण छे के जे आजे गुजराती भाषामां खूब प्रचार पामेला होइ जाणे गुजरातीना ज रूढ शब्दो न होय तेवा लागे छे. उदाहरण तरीके, हकीकत, **दोस्ती** (कडी २), **खुदा** (कडी ३), **फरमान** (कडी ५), **जंग** (कडी ६), **अगर** (कडी ७), वगेरे शब्दो आपणने तो अतिपरिचित होइ ते विदेशी छे एम भास पण थवो कठिण छे.

जिनप्रभसूरिना जमानामां-आजथी ६०० वर्ष पहेलाना वखतमां-तो आपणा लोकोने आ शब्दोनो नवो ज परिचय थयो हतो तेथी ते वखते तो आ शब्दो शुद्ध फारसी-आरबी भाषाना ज शब्दो तरीके स्पष्टपणे ओळखाय अने गणाय ए समजाय तेवुं छे.

जिनप्रभसूरिनी आ कृतिने फारसी भाषानी कोइ शुद्ध कृति तरीके तो आपणे न ज गणी शकीए. कारण के एमां कांइ ए भाषा विषयक पांडित्यनुं सूचन तो जराए ज नहि. पण कुतुहलोत्पादक कृति तरीकेनुं एनुं स्थान आपणा स्तवनादि संग्रहमां अवश्य राखवा लायक छे.

फारसी-आरबी-गुजराती भाषानी काची खीचडी जेवी आ एक वस्तु छे. एवी उपमा आपीए तो ते बराबर बंध बेसती जणाशे. अगर, देशी छंदो रूप सूतरना दोरामां शीखाउ माळीए जेम तेम गुंथेली फारसी-आरबी-अपभ्रंश शब्दरूप गुलाब, मोगरा अने चंपाना फूलोनी आ एक माळा छे, एम पण आ स्तुतिने कही शकीए तो ते पण योग्य लेखाशे.

आ स्तुतिनी कुल ११ कडीओ छे, जेमां पहेली बे कडीओ गाथा छंदमां बनावेली छे. पछीनी ६ कडीओ दुहा छंदमां, अने ते पछीनी एक कडी चतुष्पदी एटले चउपाइ छंदमां बनावेली छे. १०मी कडीनुं छंद बराबर ओळखातुं नथी. छेल्ली कडी इंद्रवज्रा छंदनी छे.

वांचकोना ज्ञाननी खातर आ स्तवनो सरल गुजराती सार अहिं आपी देवा ठीक थइ पडशे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जिनप्रभसूरिकृत फारसी भाषामां ऋषभदेव स्तवन

अल्लाल्लाहि तुराहं कीम्वरु सहियानु तुं मरा ष्वांद।
दुनीयक समेदानइ घुरमारइ बुध चिरा नह्यं ।।१।।

संस्कृत व्याख्या :- अल्लाला. हे पूज्य! तवाहं कर्मकरः। त्वं च पृथिवीपतिर्मम स्वामी। वसुधालोकान् जानासि। हे देव! चिरा कस्मात् अस्मान्न संभालयसि। यतस्त्वं मेदिनीं सर्वामपि वेत्सि, ततो मां दुःखिनं [कथं] न वेत्सीत्यर्थः।

गाथार्थ :- हे पूज्य! हुं तारो सेवक नोकर छुं अने तुं पृथ्वीपति जेवो मारो स्वामी छे. तुं तो जगतना बधा लोकोने जाणे छे-ओळखे छे तो पछी मने शा माटे लांबा समयथी संभारतो नथी?

येके दोसि जिहारि पंच्य शस ल्ल्य हस्त नो य दह।
दानिरिमंद हकीकत आकिलु तेयसु तुरा दोस्ती ।।२।।

संस्कृत व्याख्या :- एको द्वौ त्रयश्चत्वारः पंच षट् सप्त अष्टौ नव दश वा ते एव नरा गुणिनो मध्यस्थाः साधवो येषां त्वदीया मैत्री। कोऽर्थः एको वा द्वौ वा यावत् दश वा त एव गुणिनो येषां त्वय्यनुरागो नापरे। गाथाद्वयं।

गाथार्थ :- जगतमां, एक बे त्रण चार पांच छ सात आठ नव के दश जे कांई तारी साथे मैत्री धरावनारा, नरो छे ते ज गुणवान अने साधु पुरुष छे.

आनिमानि खतमथु खुदा बिरत्तवि किंचि बिवीनि।
माहु रोजु सो जामु मुरा ये कुय दिलु विनिसीनि ।।३।।

संस्कृत व्याख्या :- हे स्वामिन्! अस्मदीयां भक्तिं किंचित् अल्पमात्रां शृणु आलोकय। विज्ञप्तिको शृणु विनयं च विलोकय इत्यर्थः। मासं दिवसं रात्रिं यामं एकमपि मम दिलु हृदये विनसिनी उपविश इत्यर्थः।। खतमथुर्भक्तिर्यथा-

आलोवोमसुआरदुः खतमथुर्भक्तिः सुराद्गायनं
नृत्यं स्याद्रसकुर्नयश्च हश्मु रूढिस्तदा काइदा।
अन्यायोपि हरामु रोगतिरथो दिव्यादिका जूमला
संघातस्य स यातनिहोरक इति स्याद्विक्रयः व्योध्वनी।।*

---

* टीप्पणकारे आ पद्य कोइ कोश ग्रंथमांथी अहिं आपेलुं छे. आमाना शब्दोनो खयाल बराबर नथी आवतो. पण आ पद्य उपरथी ए वात जणाय छे के आगळना वखतमां फारसी अने संस्कृत एम द्विभाषाकोष आपणा विद्वानोए बनाव्या हता.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाथार्थ :- हे स्वामिन्! अमारी सेवा-भक्ति तरफ जरा-तरा पण जो अने मास, दिवस, रात्री के छेवटे एक प्रहर पण आवीने अमारा दिलमां निवास कर.

तुं मादर तुं फिदर बुध तुं ब्रादर तुं आमु।
नेसि विहेलिय तइं अवरि बीजे मोरइ कामु ।।४।।

संस्कृत व्याख्या :- त्वं.... माता त्वं विमुच्य अपरेण बीजे किमपि मम कार्यं नेभि नास्तीत्यर्थः।

गाथार्थ :- हे प्रभु! तूं ज मारी माता, मारो पिता अने भाइ छे. तने छोडीने बीजा कोईनी साथे मारे कशुं काम नथी.

महमद मालिम मंतरा ईब्राहिम रहमाणु।
इहं तुरा कुताबीआ मेदिहि मुक्यल्फरमाणु ।।५।।

संस्कृत व्याख्या :- त्वं महमदो विष्णुः, ईब्राहिमो ब्रह्मा, रहमानो महेश्वरः त्वमेव। अथ रहत्यागे इति चौरादिको विकल्पे णिजो धातुः। रहति रागद्वेषौ त्यजतीत्येवं शक्तः। शक्तिवयस्ताच्छील्ये इति शानङ्। आन्मोत आने मोंताः णत्वे कृते रहमाण इति रूपं। सर्वेपि देवास्त्वमेव। मालिमः पंडितो मम त्वं। इहं एषोऽहं, तुरा तव कुताबीआ लेखशालिकः। मे मेदिहि मम फुरमाण आदेशं देही, किंकर-वाणि अहं। पंडितो हि शिष्यस्यादेशं ददातीति भावः।

गाथार्थ :- हे प्रभु! तुं ज महमूद-विष्णु छे, तुं ज इब्राहीम-ब्रह्मा छे अने तुं ज रहेमान-महेश्वर छे. सर्व देव ते तुं ज छे. तुं ज पंडित छे, अने हुं तारो लहीओ छुं. तेथी तुं मने तारुं फरमान लखवा आप.

फरमूद तुरा जु मेकुनइ मेचीनइ न सुधंग।
खोसु शलामय आदतनु अर्ज्जदि छोडिय यंग ।।६।।

संस्कृत व्याख्या :- फरमूद तुरा तव आदिष्टं यो मेकुनइ करोति, सधंग दुःखानि न मेचीनइ न चुंटयेत्। खोसं सुखं, शलामथ कुशलं, आदत माहात्म्यं, नु नव्यं, अर्ज्जदि लभते। कथंभूतः छोडियर्यंगः मुक्तकलह इति संबोधनं गतद्वेष इति भावः।

गाथार्थ :- दुनियाना जंग-झगडाथी पर थयेला हे मालिक! जे तारा फरमान प्रमाणे नथी वर्ततो ते दुःखोमांथी छूटवानो नथी अने सुख, सौभाग्य, अने सहायता मेळववानो नथी.

सादि न खस्मि नवा अगर तं कुय तुरा सलासु।
बंदि पलात सु मे दिहइ वासइ न हर हरामु ।।७।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संस्कृत व्याख्या :- सादिति तुष्टो न वा मेति। अगर यद्यपि, त्वं कुय क्वापि, तुरा सलामु तव नमस्कारः, यंदित्ति ईदृशः। किं च, षलात राजप्रसादः, स मेदिहइ ददाति। हर इति प्रत्यर्थे त्वां प्रतिनमस्कारो हरामु व्यर्थं, निवासइ न भवति। कोऽर्थः यदि न तुष्टो न रुष्टोऽसि ततस्तव नमस्कारो राजप्रसादं कथं ददाति, कथं व्यर्थो न स्यादित्यर्थः।

गाथार्थ :- हे प्रभु! मारा नमस्कारने लइने तूं जो तुष्टमान न थाय अने मने जो कोइ बक्षीस न आपे तो पछी ए मारो करेलो नमस्कार हराम-व्यर्थ नहि थइ जाय?

जानूउरु यो मेकुसइ मिदिहदि सो न विहस्ति।
बुचिरुक् बिल्लइ दोजखी धंग बहुत तसु हस्ति ।।८।।

संस्कृत व्याख्या :- जानूउरु ति जीवान्, यो मेकुसइ हंति, स विहस्ति स्वर्गं, न मिदिहदि न प्राप्स्यति। किं तु बिल्ल इति निश्चितं, बुचिरुक् स्थूलानि, दोजखीधंग नरकदुःखानि प्रभूतानि, तस्य हस्ति भवंति। अतएव तव सेवकों जंतून्न हंतीत्यर्थः। दूहक षट्कं।

गाथार्थ :- हे प्रभु! जे मनुष्य जनावरोने-पशुओने मारे छे ते स्वर्गमां नहि जाय पण चोक्कस रीते ते दोजखमां--नर्कमां ज जाय छे, तेथी तारो जे सेवक छे ते कोइ जीवने मारतो नथी.

अस्तारां तेरीखु बदानु साले साते दीग सरानु।
चिस्मदीदयं बुध रू तुरा बूदी कार सऊ बस मरा ।।९।।

संस्कृत व्याख्या :- अस्तारां नक्षत्रं, तेरीखु तिथिः, छ, (छ?) इति भाषाविशेषे, दानु शरीरं, साले स्वत्सरः, साते घटिका, दीग प्रभातं, नु वाक्यालंकारे। सरात (म?) थ्यं एतानि स्थानानि, भव्यानि अद्य मम जानाति, रे यतः, चिस्म नेत्रद्वयेन, तुरा तव रू मुखं दीद दृष्टं, कार प्रयोजनानि, सउ सर्वाणि कार्याणि संपूर्णानि बभुवुरिति भावार्थः। चतुष्पदी छन्दः। दीद इति विलोकितं। तथा च-

आदिष्टां फरमु इति वस्तुलिखितं गृल्फूं गृहीतं नतां
स्लफ दीद विलोकितः परिहृतं हिरतुं जुडा योजितं।
दत्तं दाद तिपीदमध्य चटितं जहं यदभ्याहितं
गुस्त कृतं च कर्तुं तदहो भग्नं व इस्किस्तयं ।।

गाथार्थ :- आ नक्षत्र, आ तारीख, आ साल, आ घडी, आ प्रभातः बधी वस्तुओ आजे मारे माटे सफळ थई छे कारण के एमां में मारी बे आंखोथी तारा दीदारनां दर्शन कर्यां छे. बस, मारां बधां कामो पूरां थयां छे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माही उरतुरु गाज गाउनर खू (ग) पलंगो।
आहू मुरवा मुरुगु रोरु गामेसि कलागो।
मगस सितारक मारु वाजु गावसु ताउसग।
ऊयजकु मखलु कतानु खइख सगु वत वुज मूसग।
दुजस्व उसार नकासु जनि दरजी उ जरी हजामु।
ते वासइं जिम मेकुनइं सिरिजिन तुरा सलासु ।।१०।।

संस्कृत व्याख्या :- मही मत्स्यः, उरतुरु उष्ट्रः, गाउ गौः, गाउनर बलीवर्दः, खूग शूकरः, पलंगश्चत्रकः, आहू कृष्णसारः, गुरुवा मार्जारः, मुरुग कुर्कुटः, रोरु व्याघ्रः, ग्रामेसि महिषी, कुलग काकः, मगस मक्षिकाः, सितारिका कावरिः, मारु पन्नगः, वायु (बाजु) श्येनः, गावसु ऋक्षुः, ताऊसग मयूरः, ऊयजकु गृहगोधीका, मखलु तीड, कुतान मत्कुणः, खयख चंचटः, सगु श्वा, बत हंसाः, बुज अजा, मूसग मूषकाः, एतैः शब्दैः तिर्यंचः प्रतिपादिताः। सांप्रतं, कुमानुषयोनयः-दूर्जयौ खउसार चर्का (चर्म?) कारः, नकासु चित्रकारः, जनि महिला, दरजीउ सूचिकः, जरी सुवर्णकारः, हजाम नापित इत्यादि अन्या अपि विक्रेतेजातयो ग्राह्याः। जातिग्रहणे तज्जातीयस्यापि ग्रहणमिति वचनात्। हे जिन! ते वासइं भवंति ये तव नमस्कारं (न) कुर्वंति। कोऽर्थः-तव नमस्कारमकृत्वा तिर्यग्योनौ पूर्वोक्तस्वरूपेषु सत्वेषु कुमानुषत्वे च जीवा उत्पद्यंत इति भावः।

गाथार्थ :- जे तने नथी नमता ते मत्स्य, ऊंट, गाय, बळद, सूअर, चित्रा, हरण, बीलाडी, मरघडा, वाघ, भेंस, कागडा, माखी, कावर, सर्प, बाज, रींछ, मोर, घरोळी, तीड, माकड, चांचड, कुतरा, बतक, बकरा, मूषक आदि तिर्यंचनी-पशु, पक्षिनी योनिमां, तेम ज चमार, चितारा, दरजी, सोनार हजाम के स्त्रीआदिनी नीच मनुष्यजातिमां पेदा थाय छे.

शहरु दिह उलातु छत्रु स्वाफूर ऊदु
मिरिकि जरु नवातु ष्वांद रोजी दरास।
कसव पिसि तुरा इं नो सरा मेखुहाइ
रिसइ हथमु दोस्ती वंदिने मेदिहीति ।।११।।

संस्कृत व्याख्या :- शहरु पत्तनं, दिह ग्रामः, उलात देशः, छत्रु छत्र, छत्र ग्रहणात् राज्यं ज्ञेयं। खाफूरु कर्पूरं, ऊदु अगुरुः, मिसकि कस्तुरी, जरु सुवर्ण नवातु शर्करा, ष्वांद स्वानिन्, रोजी विभूतिः, दरास विस्तीर्णः, कसव ईक्षुः, पिमि (सि?) पार्श्वे, तुरा तव, इं एष मल्लक्षणो जनः। नो नैव, शरामज्ज पूर्वोक्तं वस्तुजातं, मेषुहीई याचेत, किंतु हे ऋषभ हथमु न्यायं, दोस्ती सर्वस्यापि मैत्री

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंदिने इयदेव त्वं मे व्हीति देयाः। कोऽर्थः अहं अ (न्य) त किमपि न याचे किंतु त्वं मम न्यायं मैत्रीमेव देया इति भावार्थः।

अस्मिंस्तवने क्वचित् पारसी क्वचित् आरब्बी क्वचिदपभ्रंशो ज्ञेयः। तुरा मरा इति सर्वत्र संबंधे संप्रदाने च ज्ञातव्यं। तथा च कुरानकारः-

अजइव्य त्वया दानसंबंध संप्रदाययोः।
रा सर्वत्र प्रयुज्येतान्यत्र वाव्यं सू रूपतः ॥
आनि मानि अस्मादीयं किं चि कियच्चं दिरीदृशं।
चुनी हमचुनीन् तादृक् वंदिनं इयदेव च ॥
वाजे किमपि इत्यादि कुरानोक्तं लक्षणं सर्वत्र विज्ञेयं संप्रदायाच्च।

गाथार्थ :- हे जिन! हुं तारी पासे शहर, गाम, देश, सोनुं, अगर, कस्तुरी, कपुर, खांड, सेलडी आदि एवी कोइ सारी नरसी वस्तुनी याचना नथी करतो. तुं तारा बंदाने-सेवकने एक मात्र न्याय्य भरेली मैत्री आप-अर्थात् आ सेवकने तुं तारी मित्रतानी बक्षीस आप, एटलुं ज हुं तने वीनवुं छुं.

॥ इति श्री ऋषभदेव स्तवनं सटीकमिदमलिख ॥

॥ श्री जिनप्रभसूरिकृतिरियं ॥ पं. लावण्यसमुद्रगणि नंजारग्रामे ॥

॥ इति श्री जिनप्रभसूरिकृत-पारसीभाषया श्रीऋषभदेवस्तवनं समाप्तमिति ॥

॥ पं. लावण्यसमुद्रगणिशिष्य उदयसमुद्रगणि लिखितं । छ । छ ॥

कठिन शब्दार्थ

आ स्तवनमां जे फारसी-आरबी शब्दो आपेला छे ते अपभ्रष्टरूपमां छे. कारण के एओनां शुद्धरूप अने शुद्ध उच्चार तो जे ए भाषाओनो पूरो पंडित होय ते ज जाणी-करी शके. कर्णोपकर्णथी सांभळीने कोइ पण भाषानुं शुद्ध ज्ञान थइ शकतुं नथी.

ए ज्ञान माटे तो ते भाषानां व्याकरण, कोष अने साहित्यग्रंथोनो खास अभ्यास थवो जोइए. केवळ कोइ भाषा बोलनारा लोकोना उपलक परिचयथी जाणी लीधेलो अने कर्णोपकर्ण सांभळी लीधेली भाषा यथार्थरूपमां अवगत थइ शकती नथी. ए रीते जे भाषानुं ज्ञान थाय छे ते प्रायः अपभ्रष्ट स्वरूपनुं होय छे.

जिनप्रभसूरिनुं फारसी-आरबी भाषाना शब्दोनुं ज्ञान पण अर्थात् आवा ज स्वरूपनुं होवुं जोइए. कारण के जे शब्द प्रयोगो आ स्तवनमां करेला छे ते पोताना मूळस्वरूप करतां विलक्षण रूपमां ज दृष्टिगोचर थाय छे. जे रूपमां ए शब्दो आ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्तवनमां गोठवेला छे ते रूपमां तो ए भाग्ये ज, ए भाषाना अभ्यासीने ओळखाय तेम छे. आ स्तवन उपर संस्कृत टिप्पण आपेलुं छे. ते जो न होत तो आ स्तवननो भावार्थ समजवो पण कठण थई पडत.

परंतु संस्कृत टिप्पणमां आपेला ए अपभ्रष्ट शब्दोना संस्कृत पर्यायोना लीधे एओनुं मूळ स्वरूप जाणी लेवामां सारी मदद मळे छे अने ए मददना योगे, जेटला शब्दोनां यथार्थ स्वरूप समजी शकाय तेटलां समजी लेवा अगे पुरातत्त्व मंदिरनी समितिना सभ्य अध्यापक श्री नदवी, जेओ फारसी-आरबीना पूरा पंडित छे, तेमनी पासे केटलोक प्रयास कर्यो हतो. ए प्रयासना परिणामे जे शब्दो बराबर समजाया ते बधा शुद्ध रूपमां नीचे आपीए छीए. जे केटलाक शब्दो बराबर नथी समजाया, तेओनी आगळ (?) आवां शंकाचिन्हो मूक्यां छे. बधा शब्दो कडीवार लीधा छे.

कडी क्रमांक १ :

अल्लाल्लाहि = अल्लाह इल्लाही, मारा इश्वर, **तुरा** = तारो अगर तने. **कीम्वरु** = (?) **सहियान्** = शाहेजहान् अथवा शाहान्, जगतनो मालिक **मरा** = मारो अगर मने, **चिरा** = शा माटे. **ख्वांद** = खाविंद, स्वामी.

कडी क्रमांक २ :

येके = यक, एक, **दो** = बे. **सि** = से, त्रण. **जिहारि** = चहार, च्यार. **पंच्य पंज** = पांच. **शस** = छ. **लजय** = सात (शप्त?). **हस्त** = आठ. **नोय-नोह** = नव. **दह** = दस. **दानिसिमंद-दानिशमंद** = बुद्धिमान. **हकीकत** = हकीगत. **आकिलु** = आकिल्, होंसिआर. **दोस्ती** = मित्रता.

कडी क्रमांक ३ :

आनिमानि = आमन्, तो मारो. **खतमथु** = खीदमत, सेवा. **विस्नवि** = बिश्नवि, सांभळो. **बिबीनि** = बिबीं, जुओ. **माहु** = माह, महिनो. **रोजु** = रोज, दिवस. **सो** = शब्, रात्र. **जाम** = (याम?-सं.), **मुरा** = मारा. **दिलु** = दिल, हृदय. **बिनिसी** = बेसो.

कडी क्रमांक ४ :

मादर = माता. **फिदर** = पिदर, पिता. **ब्रादर** = भाइ. **आमु** = आम, सर्व. **नेसि** = नेस्त, नहि.

कडी क्रमांक ५ :

महमद = महम्मूद, ईश्वर. **मालिम** = मुअल्लीम, **उस्ताद** = शिक्षक. **कुताबीआ** = कातिब, लखनार. **मेदिहि** = मिददेह, मने आप. **मुक्यलू** = म्यकवाल, कहेलुं. **फरमाण** = फरमान, आज्ञा.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कडी क्रमांक ६ :

फरमूदतुरा = तारुं कहेलुं. **मेकुनइ** = मेकुनि, न करवुं. **मेचीनई** = (?), **सुधंग** = खधंग, तीर, जखम. **खोसु** = खुश, सुख. **शलामश** = सलामत. **आदत** = अर्जदि (अर्ज?), **यंग** = जंग, लडाइ.

कडी क्रमांक ७ :

सादि = शादी, खुशी, **खस्मी** = दुश्मनावट. **क्रुय** = कोई. **बंदि** = बदिन्, आवुं, **खलात** = खलअत, भेट. **वासदि** = वासद, थवुं. **हरामु** = हराम, व्यर्थ.

कडी क्रमांक ८ :

जानूउरू = जानवर, पशु. **मेकुसइ** = मिकुशी, मारवुं, **मिदिहदि** = मिददेह, मेळववुं. **विहरित्त** = बेहस्त, स्वर्ग. **बुचिरुक्** = बुजुर्ग, मोटा. **बिल्लई** = बल्ल, वलके. **हस्ति** = हयाती.

कडी क्रमांक ९ :

अरत्तारां = सितारा, तारा. **तेरीखु** = तारीख, तिथि. **बदानु** = बदन, शरीर. **साले** = साल, वर्ष. **साते** = साअत, घडी. **चिरमदीदयं** = चरमदीदं, जोवुं. **बूदी** = थवुं. **कार** = काम.

कडी क्रमांक १० :

माही = माछलुं. **उरत्तुरु** = उश्तर्, ऊंट. **गाउ** = गाय. **गाउनर** = गौनर, वळद. **खूगु** = खोक्, सुअर. **पलंगो** = पलंग, चित्रो. **आहु** = हरण. **गुरुबा** = गुरब, बीलाडी. **मुरुग** = मरघुं. **सेरु** = शेर, वाघ. **गामेरि** = गोमेश, भेंस. **कुलग** = कलाग, कागडो. **मगस** = मांखी. **सितारक** = (?), **मारु** = मार्, सर्प. **बाजु** = बाज. **गावसु** = (?), **ताउसग** = ताउस, मोर. **मखलु** = सर्व जीवधारी वस्तुओ. **सगु** = सगू कुतरुं, **बत** = हंस. **वुज** = बकरी. **मूसग** = मूस, उंदर. **दुज** = दुर्ज, तीतर. **नकासु** = नक्काश, चित्रकार.

कडी क्रमांक ११ :

शहरु = शहर, नगर. **दिह** = गाम. **उलात** = विलायत, देश. **खापूर** = कापूर, कपूर. **ऊदु** = ऊद, अगर. **मिसिकि** = मिशूक, कस्तूरी. **जर** = सोनुं. **नवातु** = नबात्, साकर. **दरास** = दराझ, फेलाएलुं. **कराब** = करब, साकर. **इ** = आ. **सरा** = शरह, सर्व. **मेखुहाई** = मिख्वाही, चहावुं.

(जैन साहित्य संशोधक, वि.सं. १९८३, खंड-३, अंक-१)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ लिपि : एक अध्ययन

डॉ. उत्तमसिंह

ग्रंथ लिपि हिंदुस्तान की प्राचीन लिपियों में से एक है। इसका उद्भव लगभग सातवीं-आठवीं सदी में ब्राह्मी लिपि से हुआ। जैसा हम पूर्व में उल्लेख कर चुके हैं कि हिंदुस्तान की समस्त प्राचीन लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही निःसृत हुई हैं[1] अतः ब्राह्मी को समस्त लिपियों की जननी कहा गया है। कालान्तर में ब्राह्मी लिपि के दो प्रवाह हुए-**एक उत्तरी ब्राह्मी** तथा **दूसरा दक्षिणी ब्राह्मी**। **उत्तरी ब्राह्मी** से शारदा, गुरुमुखी, प्राचीन नागरी, मैथिल, नेवारी, बंगला, उडिया, कैथी, गुजराती आदि विविध लिपियों का विकास हुआ। जबकि **दक्षिणी ब्राह्मी** से दक्षिण भारत की मध्यकालीन तथा आधुनिक कालीन लिपियाँ अर्थात् तामिळ, तेळुगु, मळयाळम, ग्रंथ, कन्नडी, कलिंग, तुळु, नंदीनागरी, पश्चिमि तथा मध्यप्रदेशी आदि लिपियों का विकास हुआ। अतः ग्रंथ लिपि को शारदा लिपि के समकालीन कहा जा सकता है। इसका चलन विशेषरूप से दक्षिण भारत के मद्रास रियासत, विजयनगर, कांचीपुरम्, त्रिचनापल्ली, मदुरई, त्रावनकोर, ववकलेरी, वनपल्ली, सिरुमल्ला आदि प्रदेशों में अधिक रहा। जिस समय उत्तर भारत में विशेषकर काश्मीर प्रान्त में शारदा लिपि फल-फूल रही थी उसी समय दक्षिण भारत में इस लिपि का विकास हुआ।

ग्रंथ लिपि ताडपत्र पर लिखने के लिए सबसे उपयुक्त लिपि मानी गई है। विदित् हो कि यह लिपि ताडपत्र पर शिलालेख, ताम्रलेख आदि की तरह नुकीली कील द्वारा खोदकर लिखी जाती थी। तत्पश्चात उन अक्षरों में काली स्याही भरने का विधान था। इस लेखन-पद्धति का सबसे बडा फायदा यह है कि यदि उन ताडपत्रों की स्याही फीकी पड जाये अथवा उड जाये तो भी अक्षर विद्यमान रहते हैं। उन अक्षरों में पुनः स्याही भरी जा सकती है। आज भी कई ग्रंथागारों में ग्रंथ-लिपिबद्ध अनेकों ग्रंथ ऐसे मिलते हैं जिनके अक्षरों में स्याही नहीं भरी है, केवल ताडपत्र पर अक्षरों को खोदकर लिख दिया गया है। लेकिन उन्हें पढा जा सकता है, विषय-वस्तु का लिप्यन्तर भी किया जा सकता है। संभवतः ग्रंथ लिखने अथवा लिखवाने वाले के पास स्याही का अभाव रहा होगा, जिस कारण ताडपत्रों पर ग्रंथ लिखकर छोड दिया गया होगा और अक्षरों में स्याही नहीं भरी जा सकी होगी। क्योंकि उस समय ग्रंथ लेखन हेतु स्याही, ताडपत्र, भोजपत्र,

---

१. देखें श्रुतसागर, अंक-३८-३९, (ब्राह्मी लिपि : एक अध्ययन), मार्च-अप्रेल २०१४.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कागज, कपड़ा, कलम आदि ग्रंथ लेखन-सामग्री एकत्रित करना इतना सरल नहीं था। अर्थात् साधन-सामग्री का बहुत अभाव था। आज भी श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा के आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ग्रंथागार में ऐसे अनेकों ग्रंथ-लिपिबद्ध प्राचीन ताडपत्रीय ग्रंथ विद्यमान हैं जिनके अक्षरों में स्याही नहीं भरी है, लेकिन उन्हें पढ़ा जा सकता है।

विदित् हो कि तत्कालीन स्याही अथवा विविध रंग आदि बनाने के लिए प्राकृतिक वस्तुओं जैसे-भांगुरा, गोंद, लोह, विविध वृक्षों की छाल, पुष्प, पत्ती, गुठली आदि का इस्तेमाल किया जाता था। जिसके कारण ये रंग अथवा स्याही चिरकाल पर्यन्त स्थाई रह सकें। इसका प्रमाण हमारे ग्रन्थागारों में विद्यमान प्राचीन पाण्डुलिपियों को देखने मात्र से मिल जाता है। विविध प्राचीन ग्रंथों में स्याही, ताडपत्र, कागज आदि लेखन-सामग्री तैयार करने विषयक उल्लेख भी मिलते हैं। जिनमें काला भांगुरा तथा बबूल के गोंद का वर्णन करते हुए तो यहाँ तक कहा गया है कि- **'गोंद संग जो रंग भांगुरा मिले तो अक्षरे-अक्षरे दीप जले'**। आज भी इस बात के पूर्णतः स्पष्ट साक्ष्य विद्यमान हैं। हमारे ग्रंथागारों में ऐसे अनेकों ग्रंथ संगृहीत हैं जिनका आधार (कागज या ताडपत्र) पीला पड गया है अथवा पूर्णतः जीर्ण हो चुका है लेकिन उस पर उत्कीर्ण अक्षरों की स्याही आज भी चमकती हुई दिखाई पड़ती है। ऐसा लगता है 'मानो कि प्रत्येक अक्षर दीपक की तरह चमक रहा हो'।

ग्रंथ-लिपिबद्ध ताडपत्रों की एक खासियत यह है कि, यदि इन ग्रंथों पर लंबे समय से बेदरकारी के कारण अत्यन्त धूल-मिट्टी अथवा कालिख जमा हो गई हो तो इन्हें पानी से धोया भी जा सकता है। विदित् हो कि ऐसा करने से लिखे हुए अक्षरों को किसी प्रकार की हानि नहीं होती है। लेकिन ऐसा करते समय पाण्डुलिपि विशेषज्ञों का मार्गदर्शन लेना चाहिए। क्योंकि इस प्रक्रिया में विशेष ध्यान रखना होता है कि उन पत्रों को धोने के बाद सुखाने के लिए आवश्यकतानुसार योग्य ताप एवं नमी प्रदान किया जाये।

अस्तु प्राचीन भारतीय इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, संपादन एवं पुनःलेखन में ग्रंथ-लिपिबद्ध साहित्य की अहम भूमिका रही है। इस लिपि में लिखित सामग्री मूल पाठ के निर्धारण एवं कर्तुःअभिप्रेत शुद्ध आशय तक पहुँचने में प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत् करती है। इसके नामकरण एवं उद्भव और विकास विषयक विविध अवधारणाएँ निम्नवत् है-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ लिपि नामकरण विषयक अवधारणा :

ग्रंथ लिपि का निर्माण दक्षिण भारत में संस्कृत के ग्रंथ लिखने के लिए हुआ। क्योंकि वहाँ प्रचलित तामिल लिपि में अक्षरों की न्यूनता के कारण संस्कृत भाषा लिखी नहीं जा सकती। प्राचीन तामिळ लिपि में सिर्फ अठारह व्यंजन वर्णों का चलन है, जिनसे तामिळ भाषा का साहित्य तो लिखा जा सकता है लेकिन संस्कृत भाषाबद्ध साहित्य लिखना संभव नहीं। अतः संस्कृत के ग्रंथ लिखने के लिए इस लिपि का आविष्कार हुआ। संभवतः इसी कारण इसे ग्रंथ लिपि (संस्कृत ग्रन्थों की लिपि) नाम दिया गया। इस लिपि के अक्षरों का लेखन करते समय एक ग्रन्थि (गांठ) जैसी संरचना बनाकर अक्षर लिखने की परंपरा मिलती है, जिसके कारण भी इसका नाम ग्रंथ लिपि पडने की संभावना है। विदित् हो कि दक्षिण क्षेत्र के लेखक अपने अक्षरों में सुन्दरता लाने के लिए अक्षर-लेखन में प्रयुक्त होनेवाली लकीरों (खडीपाई एवं पडीपाई) को वक्र और मरोडदार बनाते थे। इन लकीरों के आरंभ, मध्य या अन्त में कहीं-कहीं ग्रन्थियाँ भी बनाई जाती थीं। इन्हीं कारणों से इस लिपि के अक्षरों की संरचना ग्रन्थि (गाँठ) के समान बनने लगी और धीरे-धीरे इसके अक्षर अपनी मूल ब्राह्मी लिपि से भिन्न होते चले गये।

ग्रंथ लिपि की विशेषताएँ :

- यह लिपि ब्राह्मी तथा अन्य भारतीय लिपियों की तरह बायें से दायें लिखी जाती है।
- ताडपत्रों पर लिखने के लिए यह लिपि सर्वाधिक उपयोगी, सरल और सटीक लिपि मानी गयी है।
- यह लिपि ताडपत्रों पर शिलालेख एवं ताम्रलेख आदि की तरह लोहे की नुकीली कील द्वारा खोदकर लिखी जाती है।
- इस लिपि में शिरोरेखा का चलन नहीं है। विदित् हो कि ब्राह्मी तथा गुजराती लिपियाँ भी शिरोरेखा के बिना ही लिखी जाती हैं। लेकिन शारदा, नागरी आदि लिपियों में शिरोरेखा का चलन है।
- इस लिपि में समस्त उच्चारित ध्वनियों के लिए स्वतन्त्र एवं असंदिग्ध चिह्न विद्यमान हैं। अतः इसे पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है।
- इस लिपि में अनुस्वार, अनुनासिक एवं विसर्ग हेतु स्वतन्त्र चिह्न प्रयुक्त हुए हैं, जो आधुनिक लिपियों में भी यथावत् स्वीकृत हैं।
- इस लिपि में व्याकरण-सम्मत उच्चारण स्थानों के अनुसार वर्णों का ध्वन्यात्मक विभाजन है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- ❖ इस लिपि का प्रत्येक अक्षर स्वतन्त्ररूप से एक ही ध्वनि का उच्चारण प्रकट करता है, जो सुगम और पूर्णरूप से वैज्ञानिक है।
- ❖ इस लिपि के अक्षरों का आकार समान है व शलाका प्रविधि से टंकित करने का विधान मिलता है।
- ❖ अक्षरों की बनावट ग्रन्थि के आकार की है। प्रत्येक अक्षर में एक सूक्ष्म ग्रन्थि बनाकर लिखने की परंपरा है।
- ❖ इस लिपि के अक्षर लेखन की दृष्टि से सरल माने गये हैं, जिन्हें ताडपत्रों पर गतिपूर्वक लिखा जा सकता है।
- ❖ इस लिपि के समस्त अक्षर सलंग समानान्तर और अलग-अलग लिखे जाते हैं।
- ❖ इस लिपि में अनुस्वार को अक्षर के ऊपर न लिखकर उसके सामने लिखा जाता है। ब्राह्मी लिपि मे भी यही प्रक्रिया अपनाई गई है।
- ❖ इस लिपि में **'आ, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ'** की मात्राएँ अक्षर के आगे या पीछे समानान्तर लगाई जाती हैं। अर्थात् उपरोक्त मात्राओं में से कोई भी मात्रा अक्षर के ऊपर या नीचे नहीं लगती है।
- ❖ इस लिपि में संयुक्ताक्षर लेखन हेतु अक्षरों को ऊपर-नीचे लिखने की परंपरा मिलती है। अर्थात् संयुक्ताक्षर लिखते समय जिस अक्षर को पहले बोला जाये या जिस अक्षर को आधा करना हो उसे ऊपर तथा बाद में बोले जानेवाले दूसरे अक्षर को उसके नीचे लिखा जाता है। ब्राह्मी लिपि में भी संयुक्ताक्षर लेखन हेतु यही परंपरा मिलती है। प्राचीन-नागरी-लिपिबद्ध पाण्डुलिपियों में भी कुछ संयुक्ताक्षर इसी प्रकार ऊपर से नीचे की ओर लिखे हुए मिलते हैं।
- ❖ इस लिपि में रेफ सूचक चिह्न उस अक्षर के नीचे से ऊपर की ओर लगाया जाता है। जबकि दीर्घ 'ई' की मात्रा आधुनिक नागरी लिपि में प्रचलित रेफ की तरह लगती है तथा ह्रस्व 'इ' की मात्रा आधुनिक नागरी में प्रचलित दीर्घ 'ई' की मात्रा की तरह लगती है।
- ❖ इस लिपि का ज्ञान हिंदुस्तान में प्रचलित अन्य प्राचीन लिपियों को सरलतापूर्वक सीखने-पढने एवं ऐतिहासिक तथ्यों को समझने में अतीव सहायक सिद्ध होता है।
- ❖ इस लिपि में लिखित ग्रंथसंपदा को शुद्ध पाठ की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि यह लिपि कागज पर लिखने की परंपरा से प्राचीन है तथा इसमें पाठान्तर की संभावना कम रहती है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

- ❖ इस लिपि में विपुल साहित्य लिखा हुआ मिलता है। आज भी हिंदुस्तान का शायद ही कोई ऐसा ग्रंथागार होगा जिसमें ग्रंथ-लिपिबद्ध पाण्डुलिपियों का संग्रह न हो।
- ❖ इस लिपि में निबद्ध ग्रंथ अमूल्य निधि के रूप में माने गये हैं, जो अपने संग्रहालय की शोभा में चार-चाँद लगा देते हैं।
- ❖ इस लिपि में संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाबद्ध साहित्य को शतप्रतिशत शुद्ध लिखा जा सकता है।

ग्रंथ लिपि की वर्णमाला :

शिलाखण्डों, ताडपत्रों ताम्रपत्रों एवं लोहपत्रों आदि पर उत्कीर्ण इस लिपि में प्रयुक्त स्वर एवं व्यंजन वर्णों की संरचना निम्नवत् है-

स्वर वर्ण लेखन प्रक्रिया

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
𑌅	𑌆	𑌇	𑌈	𑌉	𑌊	𑌋	𑍠
लृ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
𑌌	𑍡	𑌏	𑌐	𑌓	𑌔	𑌂	𑌃

व्यंजन वर्ण लेखन प्रक्रिया

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
𑌕	𑌖	𑌗	𑌘	𑌙	𑌚	𑌛	𑌜	𑌝	𑌞
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
𑌟	𑌠	𑌡	𑌢	𑌣	𑌤	𑌥	𑌦	𑌧	𑌨
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श
𑌪	𑌫	𑌬	𑌭	𑌮	𑌯	𑌰	𑌲	𑌵	𑌶
ष	स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	ळ			
𑌷	𑌸	𑌹	𑌕𑍍𑌷	𑌤𑍍𑌰	𑌜𑍍𑌞	𑌳			

संयुक्ताक्षर लेखन प्रक्रिया

जैसा कि हमने ऊपर ग्रंथ लिपि की विशेषता वर्णित करते हुए कहा है कि इस लिपि में संयुक्ताक्षर लिखने हेतु ऊपर से नीचे की ओर लिखा जाता था। आर्थात् जिस अक्षर को आधा लिखना हो उसे ऊपर लिखकर दूसरे अक्षर को उसके नीचे या किंचित समानान्तर लिखदिया जाता था। अतः इस प्रक्रिया के तहत इन संयुक्ताक्षरों को निम्नवत् लिखने का विधान है-

क् + ष् = क्ष	त् + र् = त्र	ज् + ञ् = ज्ञ

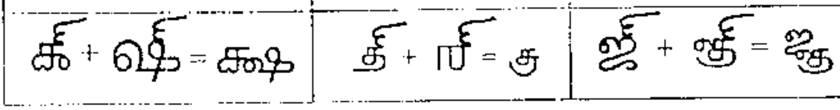

हलन्त चिह्न लेखन प्रक्रिया

इस लिपि में शुद्ध हलन्त के लिए (ꣳ) चिह्न प्रयुक्त हुआ है।

विदित हो कि यह चिह्न अक्षर के ऊपर लगाया हुआ मिलता है। अर्थात् नागरी लिपि में जिस प्रकार किसी वर्ण के ऊपर रेफ का चिह्न लगाया जाता है, उसी प्रकार ग्रंथ लिपि में यह हलन्त चिह्न लगाया जाता है। उदाहरण स्वरूप यहाँ कुछ वर्णों में हलन्त चिह्न लगाकर इस प्रक्रिया को निम्नवत् समझा जा सकता है-

च्	छ्	ख्	प्	फ्	थ्	स्	ह्	य्	र्	ल्	व्	ज्	द्	ण्

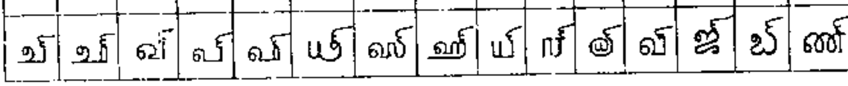

इसके अलावा 'क् ट् त् न् म्' आदि इन पाँच वर्णों में अपवादस्वरूप हलन्त चिह्न लगाने का विधान उपरोक्त चिह्न से कुछ भिन्न है, जो निम्नवत् है-

क्	ट्	त्	न्	म्

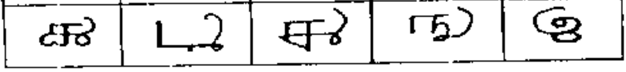

अवग्रह चिह्न लेखन प्रक्रिया

इस लिपि में अवग्रह के लिए (Z) चिह्न प्रयुक्त हुआ है। यथा-

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम् = 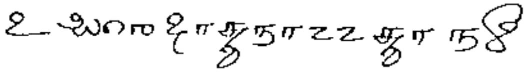

मात्रा लेखन प्रक्रिया

इस लिपि में मात्रा लेखन हेतु विशेषतः निम्नोक्त चिह्नों का प्रयोग हुआ है-

आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ	अनुस्वार	विसर्ग

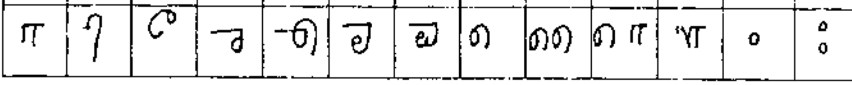

इनमें से **'आ, उ, ऊ, ऋ, ए ,ऐ, ओ, औ, अनुस्वार तथा विसर्ग'** की मात्राएँ वर्ण के आगे या पीछे समानान्तर लगाई जाती हैं। अर्थात् उपरोक्त मात्राओं में से कोई भी मात्रा उस वर्ण के ऊपर या नीचे नहीं लगती है। जबकि ह्रस्व 'इ' की मात्रा नागरी लिपि में प्रयुक्त दीर्घ 'ई' की मात्रा की तरह लगती है तथा दीर्घ 'ई' की मात्रा नागरी लिपि में प्रयुक्त **'रेफ चिह्न'** की तरह लगती है। तथा **'रेफ चिह्न'** उस वर्ण के आगे (दायीं ओर) नीचे से ऊपर की ओर लगता है। यथा-

क	का	कि	की	कु	कू	कृ	कॄ	के	कै	को	कौ	कं	कः

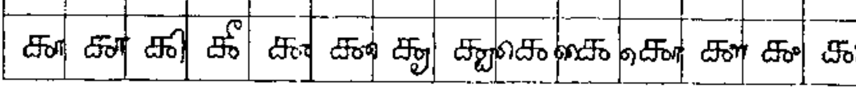

रेफसूचक चिह्न-

इस लिपि में रेफ के लिए (ɺ) चिह्न प्रयुक्त हुआ है। यथा-

र्क	र्का	र्कि	र्की	र्कु	र्कू	र्के	र्कै	र्कौ	र्कं

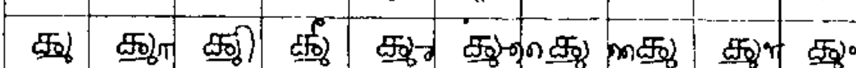

क्र	ग्र	श्र	श्री	त्र	द्र	ज्र	प्र	ह्र	स्र

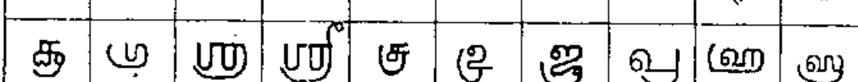

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ लिपि की बारहखडी

क	का	कि	की	कु	कू	कृ	कॄ	के	कै	को	कौ	कं	कः
𑌕	𑌕𑌾	𑌕𑌿	𑌕𑍀	𑌕𑍁	𑌕𑍂	𑌕𑍃	𑌕𑍄	𑌕𑍇	𑌕𑍈	𑌕𑍋	𑌕𑍌	𑌕𑌂	𑌕𑌃
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खृ	खॄ	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
𑌖	𑌖𑌾	𑌖𑌿	𑌖𑍀	𑌖𑍁	𑌖𑍂	𑌖𑍃	𑌖𑍄	𑌖𑍇	𑌖𑍈	𑌖𑍋	𑌖𑍌	𑌖𑌂	𑌖𑌃
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गृ	गॄ	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
𑌗	𑌗𑌾	𑌗𑌿	𑌗𑍀	𑌗𑍁	𑌗𑍂	𑌗𑍃	𑌗𑍄	𑌗𑍇	𑌗𑍈	𑌗𑍋	𑌗𑍌	𑌗𑌂	𑌗𑌃
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घृ	घॄ	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
𑌘	𑌘𑌾	𑌘𑌿	𑌘𑍀	𑌘𑍁	𑌘𑍂	𑌘𑍃	𑌘𑍄	𑌘𑍇	𑌘𑍈	𑌘𑍋	𑌘𑍌	𑌘𑌂	𑌘𑌃
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङृ	ङॄ	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
𑌙	𑌙𑌾	𑌙𑌿	𑌙𑍀	𑌙𑍁	𑌙𑍂	𑌙𑍃	𑌙𑍄	𑌙𑍇	𑌙𑍈	𑌙𑍋	𑌙𑍌	𑌙𑌂	𑌙𑌃
च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	चॄ	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
𑌚	𑌚𑌾	𑌚𑌿	𑌚𑍀	𑌚𑍁	𑌚𑍂	𑌚𑍃	𑌚𑍄	𑌚𑍇	𑌚𑍈	𑌚𑍋	𑌚𑍌	𑌚𑌂	𑌚𑌃
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छृ	छॄ	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
𑌛	𑌛𑌾	𑌛𑌿	𑌛𑍀	𑌛𑍁	𑌛𑍂	𑌛𑍃	𑌛𑍄	𑌛𑍇	𑌛𑍈	𑌛𑍋	𑌛𑍌	𑌛𑌂	𑌛𑌃
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जृ	जॄ	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
𑌜	𑌜𑌾	𑌜𑌿	𑌜𑍀	𑌜𑍁	𑌜𑍂	𑌜𑍃	𑌜𑍄	𑌜𑍇	𑌜𑍈	𑌜𑍋	𑌜𑍌	𑌜𑌂	𑌜𑌃
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झृ	झॄ	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
𑌝	𑌝𑌾	𑌝𑌿	𑌝𑍀	𑌝𑍁	𑌝𑍂	𑌝𑍃	𑌝𑍄	𑌝𑍇	𑌝𑍈	𑌝𑍋	𑌝𑍌	𑌝𑌂	𑌝𑌃
ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञृ	ञॄ	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः
𑌞	𑌞𑌾	𑌞𑌿	𑌞𑍀	𑌞𑍁	𑌞𑍂	𑌞𑍃	𑌞𑍄	𑌞𑍇	𑌞𑍈	𑌞𑍋	𑌞𑍌	𑌞𑌂	𑌞𑌃

For Private and Personal Use Only

ट	टा	टि	टी	टु	टू	टृ	टॄ	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
𑌟	𑌟𑌾	𑌟𑌿	𑌟𑍀	𑌟𑍁	𑌟𑍂	𑌟𑍃	𑌟𑍄	𑌟𑍇	𑌟𑍈	𑌟𑍋	𑌟𑍌	𑌟𑌂	𑌟𑌃
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठृ	ठॄ	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
𑌠	𑌠𑌾	𑌠𑌿	𑌠𑍀	𑌠𑍁	𑌠𑍂	𑌠𑍃	𑌠𑍄	𑌠𑍇	𑌠𑍈	𑌠𑍋	𑌠𑍌	𑌠𑌂	𑌠𑌃
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डृ	डॄ	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
𑌡	𑌡𑌾	𑌡𑌿	𑌡𑍀	𑌡𑍁	𑌡𑍂	𑌡𑍃	𑌡𑍄	𑌡𑍇	𑌡𑍈	𑌡𑍋	𑌡𑍌	𑌡𑌂	𑌡𑌃
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढृ	ढॄ	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
𑌢	𑌢𑌾	𑌢𑌿	𑌢𑍀	𑌢𑍁	𑌢𑍂	𑌢𑍃	𑌢𑍄	𑌢𑍇	𑌢𑍈	𑌢𑍋	𑌢𑍌	𑌢𑌂	𑌢𑌃
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णृ	णॄ	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
𑌣	𑌣𑌾	𑌣𑌿	𑌣𑍀	𑌣𑍁	𑌣𑍂	𑌣𑍃	𑌣𑍄	𑌣𑍇	𑌣𑍈	𑌣𑍋	𑌣𑍌	𑌣𑌂	𑌣𑌃
त	ता	ति	ती	तु	तू	तृ	तॄ	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
𑌤	𑌤𑌾	𑌤𑌿	𑌤𑍀	𑌤𑍁	𑌤𑍂	𑌤𑍃	𑌤𑍄	𑌤𑍇	𑌤𑍈	𑌤𑍋	𑌤𑍌	𑌤𑌂	𑌤𑌃
थ	था	थि	थी	थु	थू	थृ	थॄ	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
𑌥	𑌥𑌾	𑌥𑌿	𑌥𑍀	𑌥𑍁	𑌥𑍂	𑌥𑍃	𑌥𑍄	𑌥𑍇	𑌥𑍈	𑌥𑍋	𑌥𑍌	𑌥𑌂	𑌥𑌃
द	दा	दि	दी	दु	दू	दृ	दॄ	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
𑌦	𑌦𑌾	𑌦𑌿	𑌦𑍀	𑌦𑍁	𑌦𑍂	𑌦𑍃	𑌦𑍄	𑌦𑍇	𑌦𑍈	𑌦𑍋	𑌦𑍌	𑌦𑌂	𑌦𑌃
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धृ	धॄ	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
𑌧	𑌧𑌾	𑌧𑌿	𑌧𑍀	𑌧𑍁	𑌧𑍂	𑌧𑍃	𑌧𑍄	𑌧𑍇	𑌧𑍈	𑌧𑍋	𑌧𑍌	𑌧𑌂	𑌧𑌃
न	ना	नि	नी	नु	नू	नृ	नॄ	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
𑌨	𑌨𑌾	𑌨𑌿	𑌨𑍀	𑌨𑍁	𑌨𑍂	𑌨𑍃	𑌨𑍄	𑌨𑍇	𑌨𑍈	𑌨𑍋	𑌨𑍌	𑌨𑌂	𑌨𑌃

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private and Personal Use Only

प	पा	पि	पी	पु	पू	पृ	पॄ	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
𑌪	𑌪𑌾	𑌪𑌿	𑌪𑍀	𑌪𑍁	𑌪𑍂	𑌪𑍃	𑌪𑍄	𑌪𑍇	𑌪𑍈	𑌪𑍋	𑌪𑍌	𑌪𑌂	𑌪𑌃
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फृ	फॄ	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
𑌫	𑌫𑌾	𑌫𑌿	𑌫𑍀	𑌫𑍁	𑌫𑍂	𑌫𑍃	𑌫𑍄	𑌫𑍇	𑌫𑍈	𑌫𑍋	𑌫𑍌	𑌫𑌂	𑌫𑌃
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बृ	बॄ	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
𑌬	𑌬𑌾	𑌬𑌿	𑌬𑍀	𑌬𑍁	𑌬𑍂	𑌬𑍃	𑌬𑍄	𑌬𑍇	𑌬𑍈	𑌬𑍋	𑌬𑍌	𑌬𑌂	𑌬𑌃
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भृ	भॄ	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
𑌭	𑌭𑌾	𑌭𑌿	𑌭𑍀	𑌭𑍁	𑌭𑍂	𑌭𑍃	𑌭𑍄	𑌭𑍇	𑌭𑍈	𑌭𑍋	𑌭𑍌	𑌭𑌂	𑌭𑌃
म	मा	मि	मी	मु	मू	मृ	मॄ	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
𑌮	𑌮𑌾	𑌮𑌿	𑌮𑍀	𑌮𑍁	𑌮𑍂	𑌮𑍃	𑌮𑍄	𑌮𑍇	𑌮𑍈	𑌮𑍋	𑌮𑍌	𑌮𑌂	𑌮𑌃
य	या	यि	यी	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
𑌯	𑌯𑌾	𑌯𑌿	𑌯𑍀	𑌯𑍁	𑌯𑍂	𑌯𑍃	𑌯𑍄	𑌯𑍇	𑌯𑍈	𑌯𑍋	𑌯𑍌	𑌯𑌂	𑌯𑌃
र	रा	रि	री	रु	रू	रृ	रॄ	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
𑌰	𑌰𑌾	𑌰𑌿	𑌰𑍀	𑌰𑍁	𑌰𑍂	𑌰𑍃	𑌰𑍄	𑌰𑍇	𑌰𑍈	𑌰𑍋	𑌰𑍌	𑌰𑌂	𑌰𑌃
ल	ला	लि	ली	लु	लू	लृ	लॄ	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
𑌲	𑌲𑌾	𑌲𑌿	𑌲𑍀	𑌲𑍁	𑌲𑍂	𑌲𑍃	𑌲𑍄	𑌲𑍇	𑌲𑍈	𑌲𑍋	𑌲𑍌	𑌲𑌂	𑌲𑌃
व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
𑌵	𑌵𑌾	𑌵𑌿	𑌵𑍀	𑌵𑍁	𑌵𑍂	𑌵𑍃	𑌵𑍄	𑌵𑍇	𑌵𑍈	𑌵𑍋	𑌵𑍌	𑌵𑌂	𑌵𑌃
श	शा	शि	शी	शु	शू	शृ	शॄ	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
𑌶	𑌶𑌾	𑌶𑌿	𑌶𑍀	𑌶𑍁	𑌶𑍂	𑌶𑍃	𑌶𑍄	𑌶𑍇	𑌶𑍈	𑌶𑍋	𑌶𑍌	𑌶𑌂	𑌶𑌃

ष	षा	षि	षी	षु	षू	षृ	षॄ	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
𑌷	𑌷𑌾	𑌷𑌿	𑌷𑍀	𑌷𑍁	𑌷𑍂	𑌷𑍃	𑌷𑍄	𑌷𑍇	𑌷𑍈	𑌷𑍋	𑌷𑍌	𑌷𑌂	𑌷𑌃
स	सा	सि	सी	सु	सू	सृ	सॄ	से	सै	सो	सौ	सं	सः
𑌸	𑌸𑌾	𑌸𑌿	𑌸𑍀	𑌸𑍁	𑌸𑍂	𑌸𑍃	𑌸𑍄	𑌸𑍇	𑌸𑍈	𑌸𑍋	𑌸𑍌	𑌸𑌂	𑌸𑌃
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हृ	हॄ	हे	है	हो	हौ	हं	हः
𑌹	𑌹𑌾	𑌹𑌿	𑌹𑍀	𑌹𑍁	𑌹𑍂	𑌹𑍃	𑌹𑍄	𑌹𑍇	𑌹𑍈	𑌹𑍋	𑌹𑍌	𑌹𑌂	𑌹𑌃
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षृ	क्षॄ	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
𑌕𑍍𑌷	𑌕𑍍𑌷𑌾	𑌕𑍍𑌷𑌿	𑌕𑍍𑌷𑍀	𑌕𑍍𑌷𑍁	𑌕𑍍𑌷𑍂	𑌕𑍍𑌷𑍃	𑌕𑍍𑌷𑍄	𑌕𑍍𑌷𑍇	𑌕𑍍𑌷𑍈	𑌕𑍍𑌷𑍋	𑌕𑍍𑌷𑍌	𑌕𑍍𑌷𑌂	𑌕𑍍𑌷𑌃
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रृ	त्रॄ	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
𑌤𑍍𑌰	𑌤𑍍𑌰𑌾	𑌤𑍍𑌰𑌿	𑌤𑍍𑌰𑍀	𑌤𑍍𑌰𑍁	𑌤𑍍𑌰𑍂	𑌤𑍍𑌰𑍃	𑌤𑍍𑌰𑍄	𑌤𑍍𑌰𑍇	𑌤𑍍𑌰𑍈	𑌤𑍍𑌰𑍋	𑌤𑍍𑌰𑍌	𑌤𑍍𑌰𑌂	𑌤𑍍𑌰𑌃
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञृ	ज्ञॄ	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः
𑌜𑍍𑌞	𑌜𑍍𑌞𑌾	𑌜𑍍𑌞𑌿	𑌜𑍍𑌞𑍀	𑌜𑍍𑌞𑍁	𑌜𑍍𑌞𑍂	𑌜𑍍𑌞𑍃	𑌜𑍍𑌞𑍄	𑌜𑍍𑌞𑍇	𑌜𑍍𑌞𑍈	𑌜𑍍𑌞𑍋	𑌜𑍍𑌞𑍌	𑌜𑍍𑌞𑌂	𑌜𑍍𑌞𑌃

ग्रंथ लिपी में संयुक्ताक्षर लेखन अभ्यास

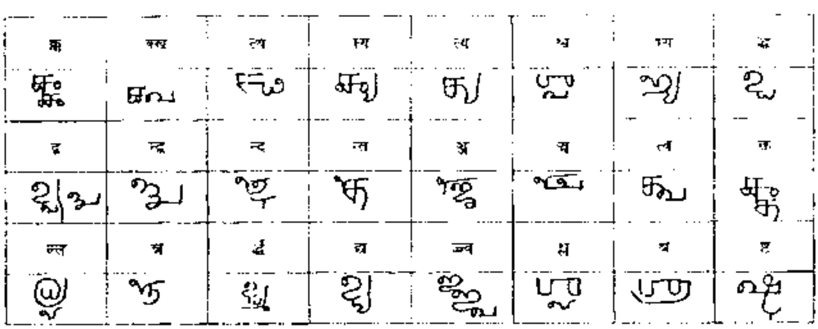

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ लिपि में संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द लेखन अभ्यास

तीर्थंकर	[illegible]
अरिहन्त	[illegible]
सिद्ध	[illegible]
आचार्य	[illegible]
ब्राह्मी	[illegible]
सुन्दरी	[illegible]
कनिष्क	[illegible]
मुग्ध	[illegible]
चर्चा	[illegible]
अर्चना	[illegible]
प्रार्थना	[illegible]
अर्जुन	[illegible]
लज्जा	[illegible]
निरञ्जन	[illegible]
ईश्वर	[illegible]
खड्ग	[illegible]
वित्त	[illegible]
भक्त	[illegible]
ग्रंथ	[illegible]
पद्म	[illegible]
श्लोक	[illegible]
ज्वलन्त	[illegible]

भविष्य	[illegible]
क्षत्रप	[illegible]
उज्ज्वल	[illegible]
ज्वलन्त	[illegible]
चिक्कण	[illegible]
क्लेश	[illegible]
वक्तृत्वम्	[illegible]
स्तवनम्	[illegible]
शक्तिः	[illegible]
पाण्डुलिपि	[illegible]
हस्तप्रत	[illegible]
सल्लकी	[illegible]
गुञ्जारव	[illegible]
रूपम्	[illegible]
रुष्ट	[illegible]
वञ्चना	[illegible]
उत्थान	[illegible]
शुद्धिः	[illegible]
द्वयम्	[illegible]
क्रय	[illegible]
विक्रय	[illegible]
चञ्चलाक्षी	[illegible]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिध्वनि	[illegible]
धीरेन्द्र	[illegible]
दर्शन	[illegible]
स्मृति	[illegible]
कैवल्यम्	[illegible]
ज्ञानबिन्दु	[illegible]
विद्यालय	[illegible]
मम्मटाचार्य	[illegible]
अर्चट	[illegible]
आह्लाद	[illegible]
पश्चिम	[illegible]
सरस्वती	[illegible]
पङ्कज	[illegible]
क्वचित	[illegible]
शान्ति	[illegible]
तथ्य	[illegible]
स्नान	[illegible]
वह्नि	[illegible]
उत्कृष्ट	[illegible]
प्रशिष्य	[illegible]
नृपेन्द्र	[illegible]
व्याख्या	[illegible]

बुद्धि	[illegible]
विद्वान	[illegible]
आज्ञा	[illegible]
पन्था	[illegible]
प्रश्न	[illegible]
उत्तर	[illegible]
मार्ग	[illegible]
अर्धम्	[illegible]
वञ्चना	[illegible]
द्वन्द्वम्	[illegible]
यज्ञः	[illegible]
विष्णुः	[illegible]
कल्याणम्	[illegible]
अञ्जनशलाका	[illegible]
कार्यालय	[illegible]
पल्लव	[illegible]
वल्लभेन्द्र	[illegible]
पन्ना	[illegible]
कन्नौज	[illegible]
पूज्य	[illegible]
पुण्यम्	[illegible]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ लिपि के अंकों का विकासक्रम

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
௧	௨	௩	௪	௫	௬	௭	௮	௯	௰

ग्रंथ लिपि में नमस्कार महामंत्र लेखन अभ्यास

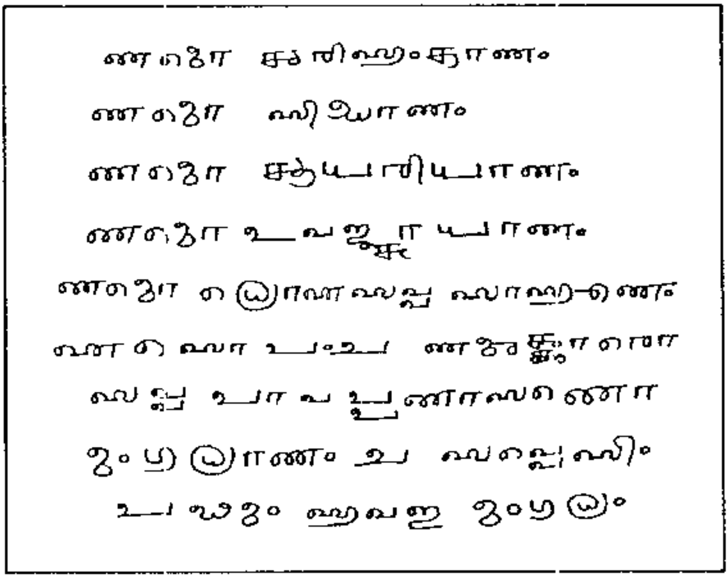

ग्रंथ-लिपिबद्ध भक्तामरस्तोत्र ग्रंथ का ताडपत्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्रंथ-लिपिबद्ध एक शिलालेख

प्राचीन भारतीय श्रुतपरंपरा को जीवित रखने में इस लिपि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। दक्षिण भारत के अनेकों राजवंशों का इतिहास ग्रंथ-लिपिबद्ध पुरालेखों के आधार पर ही रचा गया है। आज इस लिपि का पठन-पाठन पूर्णतः लुप्त हो चुका है। और इस लिपि के जानने वाले भी गिने-चुने ही रह गये हैं। जबकि इस लिपि में संरक्षित प्राचीन साहित्य हमें प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो रहा है। विदित् हो कि इस लिपि का चलन तो विशेषकर दक्षिण भारत में रहा लेकिन इसमें निबद्ध साहित्य हिंदुस्तान के समस्त भण्डारों में मिल जाता है। आज हिंदुस्तान का शायद ही कोई ऐसा ग्रंथागार होगा जिसमें ग्रंथ-लिपिबद्ध साहित्य संगृहीत न हो। इससे पता चल जाता है कि यह लिपि अपने समय में कितनी अधिक प्रचलित और प्रामाणिक रही होगी।

यद्यपि राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन-नई दिल्ली द्वारा भारत के विविध शिक्षाकेन्द्रों में समय-समय पर आयोजित होनेवाली **'पाण्डुलिपि एवं पुरालिपि अध्ययन कार्यशालाओं'** के माध्यम से इस लिपि को जीवित रखने के प्रयास किये जा रहे हैं, जो सराहनीय हैं। लेकिन इस क्षेत्र में यदि और भी शिक्षण संस्थाएँ एवं समाजसेवी विद्वान् आगे आयें तो भारतीय श्रुतपरंपरा को सदियों तक जीवित रखनेवाली इस पुरातन धरोहर को लुप्त होने से बचाया जा सकता है।

अस्तु हमने यहाँ ग्रंथ लिपि का किंचित् परिचय प्रस्तुत् करने का प्रयास किया है। आशा है विद्वान् गवेषक इस प्राचीन भारतीय धरोहर को युग-युगान्तरों तक जीवित रखते हुए आगे आनेवाली पीढियों तक सुरक्षित पहुँचाने का प्रयास करेंगे। धन्यवाद!!!

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संदर्भ ग्रन्थ

१. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, संपा. गौरीशंकर हीराचंद ओझा

२. अशोक कालीन धार्मिक अभिलेख, संपा. - गौरीशंकर हीराचंद ओझा एवं श्यामसुन्दरदास

३. प्राचीन भारतीय लिपिशास्त्र एवं मुद्राशास्त्र, लेखक - एम.पी.त्यागी एवं आर.के.रस्तौगी

४. अशोक अने एना अभिलेख, लेखक - गंगाशंकर शास्त्री

५. अशोकना शिलालेखो, लेखक - भरतराम भानुसुखराम महेता

६. भारतीय पुरालिपि विद्या, लेखक - दिनेशचंद्र सरकार

७. लिपि विकास, लेखक - राममूर्ति मेहरोत्रा एम.ए.

८. भारतीय पुरालिपि विद्या, लेखक - दिनेशचंद्र सरकार

९. ब्राह्मीलिपि का उद्भव और विकास, संपा. डॉ. ठाकुरप्रसाद वर्मा

१०. अशोक की धर्मलिपियाँ (भाग-१) - काशी नागरीप्रचारिणी सभा

११. अशोकना शिलालेखो ऊपर दृष्टिपात, लेखक - श्री विजयेन्द्रसूरि

१२. भारतीय पुरालिपि शास्त्र, लेखक - जार्ज ब्यूलर

१३. वातायन (भारतीय लिपिशास्त्र एवं इतिहास के कुछ नवीन संदर्भ), लेखक - डॉ. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'

१४. संस्कृत पाण्डुलिपिओ अने समीक्षित पाठसंपादन-विज्ञान- प्रो. वसंतकुमार एम. भट्ट, नियामक भाषा साहित्य भवन, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

१५. प्राचीन भारतीय लिपि एवं अभिलेख, लेखक - डॉ. गोपाल यादव

१६. ब्राह्मी सिक्के कैसे पढें, लेखक - श्री प्रदीप दत्तुजी वनकर

१७. भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अने लेखन कला, लेखक-मुनिश्री पुण्यविजयजी म.सा.

१८. ग्रंथलिपि वर्णमाला - डॉ. एस. जगन्नाथजी, अड्डीयार पुस्तकालय, मैसूर

१९. पाण्डुलिपि विज्ञान, लेखक - डॉ. सत्येन्द्रजी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर से प्रकाशित

२०. शारदा मंजूषा, संपा. डॉ. अनिर्वाण दास, वाराणसी से प्रकाशित

For Private and Personal Use Only

सम्राट् संप्रति संग्रहालयना प्रतिमा लेखो

संकलन - हिरेन के. दोशी

आजे आपणी पासे परंपरा अने श्रमण संस्कृतिनो क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नथी. इतिहासना अप्रकाशित केटलाय तत्त्वो ग्रंथ भंडारो, ताम्रपत्रो, शिलालेखो, अने प्रतिमालेखोमां धरबायेला छे. प्रतिलेखन पुष्पिकाओ, ताम्रपत्रो, शिलालेखो, अने प्रतिमालेखो आवी केटलीय ऐतिहासिक सामग्रीओथी ऐतिहासिक तत्त्वनुं अनुसंधान करी शकाय छे. आवी ऐतिहासिक साधन सामग्रीओमां प्रतिमालेखो अग्रता क्रमे छे,

प्रतिमा लेखोमां सामान्यथी बे प्रकार मळे छे. १ पाषाण प्रतिमा लेखो २ धातु प्रतिमा लेखो, धातु प्रतिमानी अपेक्षाए पाषाण प्रतिमामां लेखो बहु ओछा प्राप्त थाय छे. प्रतिमा लेखोमां श्रमण परंपरा अने तत्कालीन श्राद्ध परंपरा अखंड रूपे प्राप्त थाय छे.

श्रमण परंपराना इतिहासमां खूटती कडीओनुं अनुसंधान करवामां प्रतिमा लेखो बहु महत्त्वनो भाग भजवे छे. पूज्यपाद् गुरुदेव श्रीमद् आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज प्रभु शासनना आवा ऐतिहासिक मूल्योनी काळजी अने जतन माटे सतत उद्यमशील अने कांईक करी छूटवानी भावना धरावी, प्रभु शासननी शान अने गरिमाने हृष्ट पुष्ट करता रहे छे. पूज्य गुरुमहाराजना अथाग प्रयत्नथी निर्मित आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर अने सम्राट् संप्रति संग्रहालयमां आवी केटलीय ऐतिहासिक सामग्रीओ संकलित, संग्रहीत अने सुरक्षित छे. संग्रहालयमां रहेला धातु अने पाषाण प्रतिमाना लेखो अहीं प्रस्तुत छे. आ लेखोने उतारी आपवानुं पुण्यकार्य परम पूज्य शासनसम्राट्श्री नेमिसूरिजी म.सा.ना समुदायना आचार्य भगवंत श्रीसोमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज साहेब अने एमना शिष्य परिवारे करी आप्युं छे. संग्रहालयमां जे क्रमांके धातु-प्रतिमाओ नोंधायेल छे. ते क्रमानुसार ज प्रतिमाना लेखो प्रकाशित करीए छीए.

---

१. विभागीय नं. ११६, सिद्धचक्रजी, एकलतीर्थी

।। संवत् १९०७ना माघ सुकल ३ वार सोमे श्रीश्रीमालज्ञाति लघुशाखायां सा. करमचंद तत्पुत्र सा. मोतीभाई स्वश्रेयोर्थ श्रीसीधचक्र कारापितं प्रे.(प्र.) श्री तपागछे श्री सौभाग्यवीजेजीः ।।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२. विभागीय नं. १६१, चंद्रप्रभस्वामी भगवान, पंचतीर्थी

संवत् **१५२९** वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ५ तिथौ श्रीश्रीमालज्ञातीय......भार्या ......उ पुत्र खेताकेन...श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीकमलचंद्र-सूरिणांपट्टे श्रीहेमरत्नसूरिभिः...

३. विभागीय नं. १६२, आदिनाथ भगवान, एकलतीर्थी

संवत् **१४१८** फाल्गुन शु. १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघे श्री विमलसेनदेवाः।। लंभकंप्रकान्तवेसा सीलण भार्या मेहपो पुत्र संवना तद्भार्या मूल्हा तयो पुत्र होले भार्या नतो तयोः पुत्र आनंदः ।। आत्मकर्मक्षयनिमित्ते प्रतिष्ठापिता।।

४. विभागीय नं. १६३, सुविधिनाथ भगवान, पंचतीर्थी

संवत् **१६६७** वर्षे वैशाख वदि २ गुरौ पूज्यश्रीअंचलगच्छे श्रीधर्ममूर्तिसूरिस्वराणां आचार्य श्रीकल्याणसागरसूरीणामुपदेशेन सूरतिवास्तव्य सा. तेजपालसुत सा. राजपालेन सुविधिनाथः ।।

५. विभागीय नं.१६४, शांतिनाथ भगवान, एकलतीर्थी

सं. **१४४१** वर्षे फागुण शुदि १० सोमे प्राग्वाट व्य. कडूआ भार्या सावल पुत्र....... नाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीरत्नप्रभ-सूरीणामुपदेशेन ।। शुभं ।।

६. विभागीय नं. १६५, पार्श्वनाथ भगवान, एकलतीर्थी

सं. **१४** .... ज्ञातीय आंचलिक .... निज....... श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं ।।

७. विभागीय नं. १६६, जिनप्रतिमा, एकलतीर्थी

.... श्रीश्रीमालज्ञाति.................. कारेत प्र. श्रीबलभद्रसूरिभिः

८. विभागीय नं.१६७, शांतिनाथ भगवान, एकलतीर्थी

सं. **१४५७** वर्षे वदि ९ ऊपकेश ज्ञा. श्रे. सीधर भा. पाल्हणदे पु. श्रे....................? श्री शांतिबिं. उपकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्यसंताने प्रति. श्रीकक्क-सूरिभिः ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९. विभागीय नं. १६९, पार्श्वनाथ भगवान, पंचतीर्थी

सं. १३५४ वर्षे मा.................... श्रेयसे श्रीश्री ५ श्रीबिंबं कारितं प्रति. तपागछे श्रीश्रीश्रीश्री रत्नशेखरसूरिसरैः ।। श्रीलक्ष्मी(सागर)सूरिभिः ।।

१०. विभागीय नं. १७१, जिनप्रतिमा, एकलतीर्थी

सं. **१६२२** पोष वदि **१** भदाकेन ।।

संकेतसूचि

सा. = साह, शाह	प्र. = प्रतिष्ठितं
व्य. = व्यवहारी	ज्ञा. = ज्ञातीय
श्रे. = श्रेष्ठी	भा. = भार्या
पु. = पुत्र	बिं. = बिंब
प्रति. = प्रतिष्टित	सं. = संवत

❖ धर्मप्राप्ति माटेनी योग्यताने जाणवा माटे...

❖ जीवनमां धर्म अने धर्ममां जीवन उतारवा माटे...

❖ जीवनने अशांति, असमाधि, अने अंतरायथी उगरवा माटे...

❖ जीवनने सद्वांचन, समता, अने सौम्यता प्रगटाववा माटे...

प्रकाशित थई रह्युं छे, श्री प्रियदर्शनी मीठी कलमे लखायेलुं पुस्तक...

जीवन धर्म

लेखक :- पू. आचार्य विजय भद्रगुप्तसूरीश्वरजी म. सा.

प्रकाशक :- श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा

For Private and Personal Use Only

उपा. श्रीसमयसुंदरगणिकृता
यतिअंतिमआराधना

सा. जिनरत्नाश्रीजी

प्रस्तुत संपादनमां उपा. श्रीसमयसुंदरजी कृत **'यतिअंतिमआराधना'** प्रस्तुत छे. तेनुं बीजुं नाम साधुआराधना छे. मरणसमय पहेलां साधुभगवंतोए आत्मशुद्धि माटे केवा प्रकारनी आराधना करवी जोइए तेनुं वर्णन आ शास्त्रमां छे. तेनी भाषा राजस्थानी छे. आ लघुकृतिनी रचना राजस्थानना रिणिगाममां थइ छे. बीकानेर प्रांतना सरदारशहर पासे राजगढ स्टेशनथी ४१ माइल दूर रिणिगाम छे.

ते रिणी तारानगर नामे प्रसिद्ध छे. गाममां शिखरबद्ध देरासर छे. मूळनायक श्रीशीतलनाथजी १००० वर्ष प्राचीन छे. प्रतिमा पर सं. १०५८ नो लेख छे. ६० वर्ष पहेला अहीं जैनोना चार घर हतां. देरासरनो वहीवट यति श्री पनालालजी संभाळता हता. उपा. श्रीसमयसुंदरजीए अहीं चोमासुं कर्युं छे तेथी पूर्वे अहीं घणां घर हशे तेवुं अनुमान थइ शके.

उपा. श्री समयसुंदरजी तो विदग्ध विद्वान हता. तेमणे अनेक शास्त्रोनी रचना करी छे. तेमनो परिचय अने तेमनी रचनाओ विषे महो. विनयसागरजी म.नो लेख वांचवा भलामण छे.

आ लेखमां तेमनी रचनाओमां 'यतिअंतिमआराधना'नुं नाम नथी तेथी आ कृति अप्रगट छे एम कही शकाय. महो. समयसुंदरजीना गीतो माटे राजस्थानमां उक्ति प्रचलित हती-

'राणा कुंभारा भींतडा और समयसुंदररा गीतडा'

महाराणा कुंभाराए राजस्थानने मोगलोना आक्रमणथी बचाववा किल्लाओ बनाव्या हतां, तेनी भींतो अभेद्य हती, अने एथी ज आ उक्ति आखा राजस्थानमां प्रचलित हती. तेनी जेम ज महो. समयसुंदरजीना गीतो पण घेर-घेर गवातां.

प्रस्तुत कृतिमां उपा. श्रीसमयसुंदरजीए साधुभगवंतने अंतिमसमये करवानी आराधनानुं वर्णन कर्युं छे. साधुजीवनमां वडीदीक्षा अने पदवी जेटलां महत्त्वना छे तेटली ज महत्वनी अंतिम आराधना छे.

भगवाननी प्रतिष्ठा माटे श्रेष्ठ मुहूर्त जोवाय छे. वडीदीक्षा पदवी माटे श्रेष्ठ मुहूर्त जोवामां आवे छे तेम अंतिम आराधना माटे पण श्रेष्ठ मुहूर्त पसंद करवामां आवे छे. प्रतिष्ठा, वडीदीक्षा अने पदवी श्रेष्ठ गुरुनी निश्रामां करवामां आवे छे तेम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंतिम आराधना माटे श्रेष्ठ गुरुनी निश्रा अपेक्षित छे. उपा. श्रीसमयसुंदरजीए आ वात उपर भार मूक्यो छे.

साधुओनी अंतिम आराधनाना छ प्रकार कह्यां छे. एटले के मरण पूर्वे समाधि इच्छता साधुए छ काम अवश्य करवानां छे. **उत्तराध्ययनसूत्र**मां कह्युं छे -

सोहि उज्जुअभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ ।

जे शुद्ध छे ते ज धर्मनो अधिकारी छे. अंतिम समये समाधि ते ज राखी शके जेनो आत्मा शुद्ध होय छे. आत्मशुद्धिना छ पगथियां छे. तेने ज अंतिम आराधना कहे छे. अंतिम आराधनाथी आत्मा शुद्ध थाय छे. आत्मशुद्धिथी समाधि मळे छे. ते छ अधिकार आ प्रमाणे छे -

१) सम्यकत्वनी शुद्धि.

२) अढार पापस्थानकनो त्याग.

३) चोराशीलाख जीवयोनिनी क्षमापना.

४) संयमनी विराधनानुं मिच्छामि दुक्कडं.

५) दुष्कृतनी गर्हा.

६) सुकृतनी अनुमोदना.

अंतिम आराधनाने स्वीकार करवानो विधि आ प्रमाणे बताव्यो छे. सारा मुहूर्तमां भोजन करी लीधा पछी शरीरने पवित्र करवुं. एटले शरीरथी बाधाओ टाळी देवी. चतुर्विध संघने बोलाववो. सामे भगवाननी प्रतिमा स्थापवी.

इरियावहियं करवी, चैत्यवंदन करवुं, मुहपत्तिनुं पडिलेहण करवुं, बे वांदणा आपवा अने गुरुने आराधना सूत्र संभळाववानी विनंति करवी त्यारपछी गुरु छ अधिकारने विस्तारथी संभळावे.

१) सम्यकत्वनी शुद्धि : सम्यक्त्व मोक्षसाधनानो पायो छे. सद्‌गतिनुं कारण छे. एथी सर्वप्रथम तेनी शुद्धि करवामां आवे छे. अरिहंत मारा देव छे. सुसाधु मारा गुरु छे. भगवाने कहेलुं तत्त्व ज सत्य छे. आ वातने याद करी सम्यक्त्वनी शुद्धि करवी.

२) अढार पापस्थानकनो त्याग : अढार पापस्थानकनुं विस्तारथी वर्णन करीने, विशेषरूपे तेनो त्याग करवाथी प्रेरणा गुरु करे छे.

३) चोराशीलाख जीवयोनिनी क्षमापना : त्रीजा अधिकारमां चोराशीलाख जीवयोनिना भेद अने तेनी १० प्रकारे थयेली विराधनानुं मिथ्यादुष्कृत गुरु करावे छे. १० प्रकारनी विराधना इरियावहियं सूत्रमां दर्शावी छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४) संयमनी विराधनानुं मिच्छामि दुक्कडं : आ अधिकारमां पांच महाव्रत अने छठ्ठां रात्रिभोजनविरमणव्रतनी विराधनानुं विस्तारथी वर्णन छे.

५) दुष्कृतनी गर्हा : पांचमां अधिकारमां भिक्षाना ४२ दोष, पांच आहारना दोष, साध्वाचारना अतिचार, पंचाचारनी विराधना, १० प्रकारना यतिधर्मनी विराधना, चरणसित्तरी अने करणसित्तरीनी विराधना वगेरे दुष्कृत्योनी गर्हा करावे छे.

६) सुकृतनी अनुमोदना : जीवनमां करेलां सुकृत याद करावे छे. पांच महाव्रतोनो स्वीकार कर्यो, अष्टप्रवचनमातानुं पालन कर्युं, आगमशास्त्रोनो अभ्यास कर्यो-कराव्यो, शास्त्र लख्यां, शुद्ध कर्यां, बीजाने वांचवा प्रत आपी, अरिहंतनी, साधुनी, ग्लाननी, तपस्वीनी, गुरुनी, वाचनाचार्यनी वैयावच्च करी, योग वहन कर्या, तीर्थयात्राओ करी, अनेक प्रकारनां तप कर्यां, काउस्सग्ग कर्या, भावना भावी, नवकार गण्या, चरणसित्तरी अने करणसित्तरी सारी रीते पाळी, आ बधा सुकृतोनी अनुमोदना गुरु करावे. ते पछी विशेष रूपे पच्चक्खाण आपे. अभिग्रह आपे, चार शरणनो स्वीकार करावे. आ रीते अंतिम समयनी आराधना गुरु संभळावे छे.

कृतिनो रचनासंवत वि. सं. १६८५ छे. आ कृतिनी एकमात्र प्रत प्राप्त थइ छे. ते कया भंडारनी छे, तेनी खबर नथी. प्रतनी लंबाइ २२.७ से.मी. अने पहोळाइ १२ से.मी. दरेक पत्र पर १४ पंक्ति छे. अने दरेक पंक्तिमां ३९ अक्षर छे. तेनो लेखनसमय संवत् १८९९ पोष वद-३ सोमवार छे.

आ प्रत पं. दुलीचंदे विक्रमपुरमां लखी छे. प्रत घणे भागे शुद्ध छे. तेनी पहेली प्रतिलिपि अमृतभाई पटेले करी छे. प्रतनी भाषा जूनी राजस्थानी छे. मोटे भागे समजी शकाय तेवी छे. अशुद्ध पाठने संपादन समये सुधारी लेवामां आव्यां छे. अस्पष्ट पाठनी साथे(?) चिह्न दर्शाव्युं छे. अधूरा पाठने पूरा करी पादटीपमां दर्शाव्या छे. एकंदरे आ कृति अंतिम आराधनामां खूब सहायक बने तेवी छे.

यतिअंतिमआराधना

स्वस्तिकल्याणकर्त्तारं नत्वा श्रीशीतलं जिनम्।
अहमाराधनां वक्ष्ये यति(ती)नामात्मशुद्धये ।।

तत्रास्यां यत्याराधनायां षडधिकारा ज्ञेयाः। तथाहि - (१) पूर्वं सम्यक्त्वशुद्धिः (२) ततोऽष्टादशपापस्थानकपरिहारः (३) ततः चतुरशीतिलक्षजीवयोनिक्षामणम् (४) संयमविराधनाया दुष्कृतदानं (५) ततो दुष्कृतगर्हा (६) ततः सुकृतानुमोदना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्रादौ आराधनाविधिः प्रोच्यते-तथाहि शुभसौम्यवारे शुभवेलायां भोजनानन्तरं देहं शुचिं कृत्वा सर्वसङ्घमाकार्य अग्रेस्थापितश्रीवीतरागप्रतिमाया अग्रे सम्मुखीभूय ईर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य चैत्यवन्दनां कृत्वा मुखवस्त्रिकां प्रतिलेख्य वन्दनकद्वयं दत्त्वा आराधनाकृद् भणति 'भगवन्! आराधनासूत्र सुणावौ।' गुरुर्भणति -'विधिपूर्वक सांभलौ।' तथाहि-

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥१॥

देव तौ श्रीवीतरागदेव अढारै दूषणैं करी रहित, देवतां कोडि तिणैं महित, चौतीस अतिसयैं विराजमान, पैंतीस वाणीगुणकरी सौभित, आठ महाप्रातिहार्य तिणें करी युक्त, अनन्तगुणनिधान, सर्व देवमांहे प्रधान, देवाधिदेव ते माहरै देव एहवो सरदहज्यौ (१) गुरु तो सुसाधु जे पंचमहाव्रतरा धरणहार, बयालीस आहार दूषणना टालनहार, छजीवनिकायना पीडाहर, अढारै सहस्र शीलांगरथना धारक, संसारसमुद्रतारक, पांचे सुमिते सुमिता, त्रिहुं गुप्ते गुप्ता, ज्ञानदर्शनचरित्रकरि मोक्षमार्गसाधक, वीतरागदेवनी आज्ञारा आराधिक, क्रियाकलापरावधान, सदा धर्मध्यानकुक्षीसंबल, चरित्रपात्र, निर्मलगात्र एहवा साधु भगवंत माहरे गुरु एहवो सरदहिज्यौ (२) धर्म तो श्रीकेवलीभगवंतनो भाख्यौ आज्ञारूप, दयामयी, दुर्गति पडतां प्राणीयांने धारे, जे करै ते संसार समुद्रने तरै एहवो वीतरागदेवनो धर्म ते माहरे धर्म (३) इतनें सुध समकित तुमनें उचरायो ॥१॥

हिवै अढारै पापस्थानक कहै छै ते सांभलीनें सरदहिज्यौ-

आसवकसायबंधणकलहाभक्खाणपरपरीवाओ।
अरइरइपेसुन्नं मायामोसं च मिच्छत्तं ॥१॥

पांचे आश्रव वारंवार सेव्या हुवै।

तिहां पहिलो आश्रव **प्राणातिपात** कीधो हुवै। ते किम? पृथवी[१] अप्[२] तेउ[३] वाउ[४] वनस्पति[५] बेंद्री[६] तेंद्री[७] चौरेंद्री[८] पचेंद्री[९] ए नवविधि जीव अभिहया वत्तिया इत्यादि दशप्रकारे करी इणभवैं परभवैं जाणतां अजाणतां मनवचनकायायै करी दुहव्या हुवै (दुहाव्या हुवे) दुहवतां अनुमोद्या हुवै ते अरिहंतनी साखिं[१] सिद्धनी साखिं[२] देवनी साखिं[३] आत्मनि साखिं[४] गुरुनी साखिं[५] मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

बीजौ आश्रव **मृषावाद** बोल्यौ हुवै। ते किम? हासें करी, क्रोधे करी, माने करी, मायाए करी, लोभें करी बोल्यौ हुवै। वलै कन्यालीक[१] गवालीक[२] भौमालीक[३] थापणमोसो[४] कीधो हुवै। कुडी साख दीधी हुवै। इणभव परभव जाणतां अजाणतां ते मिच्छामि दुक्कडं॥२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीजो आश्रव **अदत्तादान** लागो हुवै। ते किम? पारकी वस्तु चौरी हुवै चौरावी हुवै चौरतां अणुमोदी हुवै। इणभव परभव जाणतां अजाणतां ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

चौथो आश्रव **मैथुन** सेव्यौ हुवै। ते किम? देवसंबंधी, मनुष्यसंबंधी, तिर्यंचसंबंधी सेव्यौ हुवै। आपणी पारकी स्त्री, आपणो पारको पुरुष तेहनी कायाने विषै लोलुपता कीधी हुवै। इणभव परभव जाणतां अजाणतां ते मिच्छामि दुक्कडं ।।४।।

पांचमो आश्रव **परिग्रह** राख्यौ हुवै। ते किम? ते कहै छै-चवदै उपगरण। कहया छै तेहथी अधिका राख्या हुवै अथवा पाछले भव अथवा गृहस्थावास वसतां धन्य-धान्य-क्षेत्र-वास्तु-रूप्य-सुवर्ण-कूप्य-द्विपद-चतुःपदादिक नवविध परिग्रह अपरमित राख्या हुवै ते ऊपर घणी मूर्च्छा कीधी। इणभव परभव जाणतां अजाणतां मिच्छामि दुक्कडं ।।५।। वली क्रोध[६] मान[७] माया[८] लोभ[९] घणा कीधा हुवै।

वली राग घणौ कीधौ हुवै ते राग त्रिहुं भेदें। ते किम? स्त्रीने पुरष उपर राग, पुरषने स्त्री उपर राग, पुरषने पुरष ऊपर राग, (स्त्रीने स्त्री उपर राग,) ते कामराग[१] कुटुंब परिवार ऊपर राग ते स्नेहराग[२] आपणे मति ऊपर कदाग्रह ते दृष्टिराग[३] ।।१०।।

इम द्वेषना पिण त्रिण भेद ।।११।।

वले लोकासु वेढवाड कीधा हुवै ।।१२।।

वले लोकांने कूडा कलंक दीधा हुवै ।।१३।।

वले छता अछता दूषण प्रकासनें पारकी निंदा कीधी हुवै ।।१४।।

वली दुःख पामीने आकुलव्याकुलता कर अरइ वेई हुवै अनै सुख पामीने रइ वेई हुवै ।।१५।।

वली पैशून्य कीधौ हुवै, राजा हजूर चाडी खाधी हुवै, केहनै दंडाया मुंडाया हुवै ।।१६।।

वली माया सहित मृषावाद बोल्यौ हुवै अथवा आपणि मोसो कीधो हुवै ।।१७।।

वली महामाई, चामुंडा, चौसठी, नगरकोटी, गौत्रदेवी प्रमुखः वली यक्ष, गोगा, क्षेत्रपाल, विनायक, पश्चिमाधीश, हरिहर प्रमुख कुदेवने देव मान्या हुवै। वली जोगी, सन्यासी, कडी, कापडी, तापस, दरवेस, शेष मुल्ला, मुंडिया, सोफी, आचारभ्रष्ट पासत्था ओसन्ना प्रमुख कुगुरु ने गुरुबुद्धें मान्या हुवै। वली मिथ्यात्वी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्ररूप्यो हिंसारूप अधर्म ते धर्मबुद्धे मान्यौ हुवै १८ एवं अढारै पापस्थान यतीपणैंमै अथवा ग्रहस्थपणामै सेव्या हुवै ते इणभव परभव जाणतां अजाणतां मिच्छामि दुक्कडं ।।२।।

हिवै चौरासी लाख जीवाजोनि कहै छै। ते खामज्यौ। सात लाख पृथवीकाय तेहना ए भेद-स्फटिक, मणि, रत्न,प्रवालि, हिंगुल, हरिताल, मणिसाल, पारो, सुरमौ, सोनो, रूपौ, तांबो, लोह, कथीर, जसद, सीसो, साते धात, गेरु, खडीवांनी, अरणेटो, पलेवा, अभ्रक, तुरी, वस्त्र रंगणरी माटी, ऊखरखेत्ररी माटी, पाषाण, खर पृथवी प्रमुख भेद। एह पृथवीनो खर प्रमुखनो बावीस हजार वरस उत्कृष्टो आउखो, आंगुलरो असंख्यातमो भाग देहमान, शणिना फूल जे पृथवीना खंडमाहे जे जीव छै ते जीव पारेवा जेहवी जे काया करै तो जंबूद्वीपमाहै समावै नहीं। ते पृथवीकाय रूपैं रसैं गंधै फरसें करी सातलाख जोनि जाणवी। ते पृथवीकायना जीवानै जाणतां अजाणतां आरंभादिकै करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१।।

हिवै अप्काय कहै छै। ते अप्कायना अनेक भेद। ते किम? आकासनो पाणी, धरतींनो पाणी, ओस, हिम, करहा, नेह, धुंहर, घनोदधि प्रमुख। एह अप्कायनो सात हजार वरसरो उत्कृष्टो आउखो, आंगुलरे असंख्यातमे भाग देहमान। एक पाणीरा बिंदु में असंख्य ता जीव सरसुं जेहवी काया करै तो जंबूद्वीप माहैं मावैं नहीं। ते अप्काय जीवनी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।२।।

हिवै अग्निकायरा भेद कहै छै । अग्नि, अंगारा, मुम्मुर, झाल, भोभर, अंगीठी, कोडुं, दीवी, चराक रोहि में अग्नि लगावै चकमक, विजली प्रमुख। एह अग्निकाय चिणोठी जितनी मांहे असंख्याता जीव ते खस-खस जेवडी काया करै तो जंबूद्वीपमांहे नहीं मावै। इणारी सात लाख योनि, तीन अहोरात्र उत्कृष्ट आउखो। अग्निकाय आरंभादिकै करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

हिवै वायुकायरा भेद कहै छै । ते कुण कुण? गुंजवात, उद्भ्रामकवात, उत्कालिकावात, मंडलवात, महावात, शुद्धवात, भूतेलियो, वातोलियो, कोरण, वाउलि, धनुवात, तनुवात प्रमुख। वायुकायनो तीन हजार वरसरो उत्कृष्टो आउखो, अंगुल प्रमाण आकास भागवर्त्तिमांहे असंख्याता जीव ते लीख सरीखी काया करै तो जंबूद्वीपमाहे न मावै। सात लाख जोनि। ते वायुकाय आंरभादिकें करी विराधना

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीधी हुवै इणभव परभव जातां ते मिच्छामि दुक्कडं ।।४।।

हिवै वनस्पतिकायरा भेद कहै छै। ते वनस्पति बिहुं भेदे-प्रत्येक अने साधारण। ते प्रत्येकना अनेक भेद ते कुण कुण? आंबा, नींबू, कदंब, असोग, नाग, पुन्नाग, धव, खदिर, वड, पींपल, करीर, बोरटी, खेजडा, फोग, आक, धत्तूरा, केला, खडतृण, हरीवेलि, पान, फूल, बीज, छाल, कमल प्रमुखा। प्रत्यैक वनस्पतिरै मूलमांहे असंख्याता जीव ।।१।। कंदमांहे असंख्याता जीव ।।२।। संधमांहे असंख्याता जीव ।।३।। छालमांहे असंख्याता जीव ।।४।। शाखमांहे असंख्याता जीव ।।५।। पडिशाखामांहे असंख्याता जीव ।।६।। पानमांहे एक जीव ।।७।। फूलमांहे अनेक जीव ।।८।। फलमांहे जितरा बीज तितरा जीव ।।९।। सिंघोडा बि जीव। तेह हजार जोजन झाझेरा पद्मद्रहादिकमें कमल छै तेहनो देहमान दस हजार वरसनो उत्कृष्टो आउखो। दश लाख योनि। प्रत्येक वनस्पतिनी आरंभादिकें करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।५।।

हिवै साधारण वनस्पति अनंतकाय। तेहना अनेक भेद। कंदमूल, अंकुर, किरालय, सेवाल, भूंफोड, पांचवरणी फूगण, गाजर, पंचांग, मूला, सूरण, लसण, तेज, आदो, थोहर, कुवारपाठो, गुग्गल, गिलोय, गोथ, लीली, हलदर, रत्तालू, पिंडालू प्रमुख। एह वनस्पतिमांहे सूइरा अग्रभागमांहे अनंताजीव जघन्य अने उत्कृष्ट पिण अंतर्मुहुर्तनो आउखो, चवदै लाख जीवयोनि। एह साधारण वनस्पतिनी आरंभादिके करी विराधना करी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।६।।

हिवै बेइंद्री जीव कहे छै। जेहनै स्पर्शन अने जीभ ए बे इंद्री ते संख, कवडा, गंडोला, जलोक, अलसीया, लद्द, कृमिया, पुरागाडर, चूडेल, तंबोलिया, वाला, काष्टकीट, चंदणग जीवविशेष प्रमुख अनेक भेद। बारै जोजन संख प्रमुखरो देहमान, बारै वरस उत्कृष्ट आउखो, दोय लाख योनि। बेइंद्री जीवनी आरंभादिकें करी विराधना कीधी इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।७।।

हिवै तेइंद्री जीव कहै छै। जे जीवनें स्पर्शन, रसन, घ्राण ए तीन इंद्री ते तेंद्री। कुण? कानसिलायो, माकण, जूं, लीख, कीडी, मक्कोडा, उदेही, घीवेल, ईली, चर्मजूं, गोंगीडा, जात, गदहीया, चोरकीडा, गोबरना कीडा, धानरा कीडा, कुंथुवा, गोपालिका, चिंचड, ईलका, ममोला, जलौक प्रमुख। तेइंद्रीनो उगणपचास दिनरो उत्कृष्टो आउखो, त्रिण कोस कानसलाया प्रमुखो देहमान, दोय लाख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोनि। एह तेइंद्री जीवनी आरंभादिके करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।८।।

हिवै चौरेंद्री जीव कहै छै। जे जीवनें स्पर्श न, रसन, घ्राण, चक्षु ए च्यार इंद्री ते चौरींद्री। ते कुण कुण? वीछू, ढिंकुण, भमरा, भगरी, तीडी, माखी, डांस, मसक, भणहणा, कूंता, पतंगीया, कंसारी, खडमांकडी, गोगा, गावडी प्रमुख। तेहनो छ मासनो उत्कृष्टो आउखो, एक योजन प्रमाण भमरादिकनो देहमान, दोय लाख जोनि। ए चौरिंद्री जीवनी आरंभादिके करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।९।।

हिवै पंचेद्रीना भेद कहै छै। जेहने स्पर्शन, रसन, घ्राण चक्षु, श्रोत्र ए पांच इंद्री जेहनै(जेहने) ते पंचेद्री। तेहना च्यार भेद- नारकी, देवता, मनुष्य, तिर्यंच ४। नारकीना चवदै भेद स्वेतांवरकारी सात परजाप्ता सात अपरजाप्ता। ते नारकीनो तेतीस सागरनो उत्कृष्टो आउखो। दस हजार वरसनो जघन्य आउखो। पांचसै धनुष देहमान उत्कृष्टो। चार लाख नारकीनी योनि। ते नारकी जीवांने परमाहम्मी देवता करी छेदन, भेदन, ताडन, तर्जना, क्रक्रच, विदारण, त्रपुपान, कुंभीपाक पाचन, कदर्थनादिके विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१०।।

देवताना च्यार भेद कहै छै। भवनपति[१] व्यंतर[२] ज्योतिषी[३] वैमानिक[४]। तेहनो जघन्य दसहजार वरसनो आउखो। उत्कृष्टो तेतीस सागरोपम आउखो। सात हाथ देहमान। च्यार लाख जीवा योनि। देवतानें मंत्र, जंत्र, तंत्रै करी आकर्षण कीधा हुवै, दुख दीधा हुवै, दीसता नहीं छै ते भणी छतां अछता थाप्या हुवै, इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।११।।

तिर्यंचना पांच भेद। ते कुण कुण? जलचर ते माछला, काछवा प्रमुख। तीयां समूर्च्छिम गर्भिज विहुंरो उत्कृष्टो पूर्वकोडिवर्षनो आऊखो। हज्जार योजन स्वयंभूरमणना माछला प्रमुखनो देहमान। थलचर ते कुण? सीह, वाघ, चीतरा, अष्टापद, हाथी, घोडा, खच्चर, ऊंट, बलद, गाय, खर, भेंस, छाली, हिरण, रोझ, ससीया, सूयर, रींछ, सांबर, कूतरा, सियाल, बिल्ली प्रमुख। ते युगलीयानो तीन पल्योपम उत्कृष्टो आऊखो। तीन कोस देहमान अने संख्याता आऊखाना धणी। तियांरो पूर्वकोड उत्कृष्टो आऊखो। छ कोस देहमान। खेचर उ पंखी। ते कुण कुण? हंस, बगला, सारस, सींचाणा, सामली, गृध, काग, गूघू, कबूतर, चिडकला, नीलटांस, सूवटा, मोर प्रमुख। तिणांरो पल्योपमरो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आउखो। धनुषपृथक्त्व देहमान। उरपरसर्प ते कुण कहियै? स्वालै उ सर्प प्रमुख। तिणांरो पूर्वकोडि उत्कृष्टो आउखो। हजार जोजन देहमान। भुजपरसर्प्प ते कुण? गोह, नउलीया, गिलोइ, वांभणी प्रमुख तिणांरो पूर्व कोड उत्कृष्टो आउखो। कोस प्र(पृ)थक्त्व देहमान। इयां पांचारी च्यार लाख योनि। इयां तिर्यंचानें छेदन, भेदन, कदर्थन, अंगावयवकर्त्तन, नासाविंधन, अतिभारारोपण, पृष्ट(ष्ठ)गालन, डांभदान, कर्कसप्रहारदांन, चारपांणीनिषेध, विस्मरण, तापन, पीडन, व्यथोत्पादनादिके करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१२।।

हिवै मनुष्यना भेद कहै छै। त्रिण सय तिडोत्तर ३०३। ते किम? पेंतालीस लाख जोजन मनुष्य क्षेत्रमांहे पांच भरत (५) पांच एरवत (५) पांच महाविदेह (५) ए पनरै कर्मभूमि। पांच हेमवत (५) पांच एरन्नवत (५) पांच हरिवर्ष (५) पांच रम्यक (५) पांच देवकुरु (५) पांच उत्तरकुरु (५) ए तीस अकर्म्मभूमि। छप्पन अंतरद्वीप एक सो एक (१०१) गर्भज पर्याप्ता, एक सो एक (१०१) गर्भजा अपर्याप्ता, एक सो एक (१०१) समूर्च्छिम ए सर्व भेला कीधां त्रिणसयतीन भेद (३०३)। ते केइ अनार्य, केइ ब्राह्मण, केइ क्षे(क्ष)त्रिय, केइ वैश्य, केइ शूद्र, केइ राजा, केइ रंक, केइ दृष्ट, केइ अदृष्ट, केइ ज्ञात, केइ अज्ञात, केइ श्रुत, केइ अश्रुत, केइ स्वजन, केइ परजन, केइ शत्रु, केइ मित्र, केइ प्रत्यक्ष, केइ परोक्ष, अनेक भेद। ते युगलीया मनुष्य छै तिणांरो तीन पल्योपमरो उत्कृष्टो आउखो। तीन कोस देहमान। बीजा मनुष्यारो पूर्वकोडि उत्कृष्टो आउखो। पांचसै धनुष देहमान। इयां मनुष्याने ताडन, तर्जन, छेदन, भेदनादिके करी पीडा करी हुवै अथवा अभिहया वत्तिया इत्यादिक दश प्रकारै करी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१३।।

अथ संयम विराधना मिथ्यादुःकृ(ष्कृ)तं। तत्र पञ्चमहाव्रतानि रात्रिभोजन-विरमणसहितानि गृहीत्वा विराधितानि भवन्ति। कथम्? तथाहि - सचित्त पृथवी, माटी, मुरड, खडी, खांणि, खुणी हुवै अथवा ए ऊपर पग आया हुवै। सचित्त लूण सेंधव खाधा हुवै अथवा उसामांहे घाल्या हुवै। वली सचित्त हरीयाल, हींगलू प्रमुख वांद्या हुवै। नगरमांहे पेसतां पग न पूंज्या हुवै। इत्यादिक प्रकार करी पृथवीकाय जीवांरी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं।।१।। सचित्त पाणी अथवा मिश्र पाणी पीयो हुवै। सचित्त पाणीसुं वस्त्र-डील धोया हुवै। नदी वा(ना)हला लंघ्या हुवै। वरसतै मेहमै चाल्या हुवै। धुंहरमाहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंगोपंग हलाया हुवै। इत्यादिकें करी अप्पकायरी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।२।। वली सचित्त अग्निकाय आभडतै विहर्यो हुवै। अंगीठी कीधी हुवै। कोउ ताप्या हुवै। दीवा कीधा हुवै। आग उलंगी हुवै। दावानल लगाया हुवै। चकमकसुं अथवा आक अरणीसुं अग्नि पाडी हुवै। वीजली दीवा प्रमुखनी उजेही लगाइ हुवै। इत्यादिक प्रकारै करी अग्निकाय जीवरी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

वली वायुकाय विराध्या हुवै। ते किम? वींजणासुं छेहडासुं वायरो घाल्यो हुवै। फूंक मारी हुवै। उघाडै मुंहडै बोल्या हुवै। वस्त्रादिक झटकाया हुवै। इत्यादिक वायुकाय जीवरी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।४।।

वली प्रत्येक वनस्पति साधारण वनस्पति स्वादे खाधी हुवै। फल, फूल, पान हरी त्रोड्या हुवै। नील, फूलण, सेवाल विराध्या हुवै। जडीबुंटी त्रोडी काढी हुवै। आक भांजी आकदूध लीधो हुवै। धातुर्वाद पारो कमावतां उषधीयांरा रसरी पुट दीधी हुवै। इत्यादिक प्रकार करी वनस्पति जीवांरी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।५।।

हिवै बेंद्री विराध्या हुवै। ते किम?। अणगल्यौ पांणी वावर्यो हुवै। जुलाब लेइ क्रमगिंडोला पाड्या हुवै। अंगउपंगै जोकदराइ (जड़ो देवरावी) हुवै। पग हेठ अलसीया, चूडेलि गाडर, प्रमुख पीडाणा होवै (हुवै)। पग हेठ आया हुवै। वाला टंकाया हुवै। इत्यादिकें करी बेंद्री जीवनी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।६।।

हिवै तेंद्री जीवना भेद कहै छै। ते किम? मांकण पाटमांहेथी काढ्या हुवै। दूहाणा हुवै। जूं लीख काढी हुवै। धूपदराणी हुवै। छपीलो (?) गमाड्यो हुवै। कीडी, मकोडा, उदेही, घोवेलि, ईली, गदहीया, कुंथुवा, जउआ, पग हेठ आया हुवै। इत्यादि प्रकारै करी तेंद्री जीव विराध्या हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।७।।

हिवै चौरिंद्री जीव विराध्या हुवै। ते किम?। माखी, डांस माछर डील लागा उडाया हुवै। हरताल वाटतां माखी मूइ हुवै। ढांम रंगतां रेगन, अलसी, तैल उपर माखी, कूत, माछर, पतंगीया प्रमुख जीव मूआ हुवै। कंसारी, भमरा, तीड,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विछू, प्रमुख दुहव्या हुवै। इत्यादिकै करी चौरेंद्री जीव विराध्या हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।८।।

हिवै पचेंद्री जीव विराध्या हुवै। ते किम? कूता, बिल्ली, गाय, भेंस, घोडा, उंट(ऊंट), प्रमुखनौ घा(डउ) उ प्रहार घाल्यौ हुवै। चिडकला, काग, पारेवा प्रमुख उडाया, बीहाव्या, त्रासव्या हुवै। एहना माला पाड्या हुवै। साप अजगर उलारी नांख्या हुवै। रूपा, खिडी, हिरण प्रमुख डावा जीमणा आण्या हुवै। ऊंट, घोडा, बलद, खर, हाथी ऊपर चढ्या हुवै। मांदा असकत थकां अथवा इयां उंठ(ऊंट) प्रमुख ऊपर उपगरण पोथी प्रमुख भार घाल्या हुवै। ओषध देइ गर्भ पाड्या हुवै। मूत्र, विष्टा, श्लेषम, वात, पित्त, रूधिर, वीर्य, प्रमुख अंतर्मुहूर्त मांहे वोसराव्या नहीं हुवै। असंख्यात समूर्छिम पंचेंद्री जीव अपर्याप्ता ऊपना हुवै। क्रोधें करी चेला गुरुभाई अनेरा यती, गृहस्थनें चुंहटी, डोरा बूसट, टूंबो, चपेट, डांडा मार्या हुवै। वली इर्या सोझो नहीं हुवै। राति चाल्या हुवै। पच्चखांण करी सुंस लेइ भांग्या हुवै। आरंभ-समारंभ करी प्राणातपात करी पहिलो व्रत विराध्यो हुवै। इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१।।

हिवै बीजो व्रत विराध्यौ हुवै। ते किम? क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, हास्य, रति, अरति, करी; मृषा भाषा करी सावद्य भाषा बोली हुवै। पारकी निंदा कीधी हुवै। उत्सूत्र बोल्या हुवै। तूं जाव तूं आव ए काम करि इत्यादि अवधारणी भाषा बोली हुवै। आंधाने आंधो कहयो, कांणानें कांणो कहयो, कोढीयाने कोढीयो कहै, देवालीयाने देवालीयो, चोरनै चोर, जारने जार, इत्थादि वचने करी परनै असाता ऊपजावी ते साची भाषा पिण बोली हुवै। वली मृग गया पूर्व दिस, आहेडी पूछ्यां कह्यो 'पश्चिम दिस गया'। मलेछादिक देहरो उपासरो पाडिवा आवै छै, यतीनै मारवा आवै छै, पूछै 'अठै देहरो उपासरो जती छै?' ति वारै कहै 'नही छै' एहवै कारणें ए जूठ बोल्यो हुवै। इत्यादि प्रकारै करी बीजो व्रत विराध्यौ हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।२।।

हिवै तीजो व्रत विराध्यो हुवै। ते किम? स्वामिअदत्त[१] जीवअदत्त[२] तीर्थंकरअदत्त[३] स्वकीयगुरुअदत्त[४] ए चतुर्विधि अदत्त लीधो हुवै। त्रिण, छार, डगल, पाषांण, थंडिला भूमि 'अणुजाणइ जस्सावग्गहो होत्ति' एहवुं वचन कह्यां विना संग्रह्या हुवै। साधु-साधवी-गृहस्थना साछ, पीछ, पातरा, लूगडा, पाटि, पाटला, अन्न, पाणी, ओषध प्रमुख अणकहयां वपराया हुवै। इत्यादिक प्रकारै त्रीजो व्रत विराध्यौ हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिवै चोथो व्रत विराध्यो हुवै ते किम? साधवी मथेणनी(?) बीजी पिण कोइ भेखधारणी, कुंवारी, बुधवा, सूहव(वा), वैश्या, स्त्रीसुं, कर्मविशेष सराग वात कीधी, संघट्टो कीधो, आलिंगन दीधो हुवै। जाणतां अथवा स्वप्न मांहे इतरा थोक (?) कीधा हुवै। वली नव ब्रह्मचर्य वाडि भांजी हुवै। स्त्रीपशु संसक्त वसति भोगवी हुवै ।।१।। स्त्रीसुं सराग वात कीधी हुवै ।।२।। बि घडी मांहि स्त्रीनें आसण बेठा हुवै ।।३।। स्त्रीनां अंगोपंग कुच-कक्ष-उदर प्रमुख सरागपणे जोया हुवै ।।४।। कुड्यनै आंतरै स्त्री-पुरुष काम क्रीडा करतां दीठा, रांभल्या हुवै ।।५।। गृहस्थावास मांहे काम क्रीडा करी हुवै ते संभारी हुवै ।।६।। प्रणिताहारउ घीना चूवता कवल सरस आहार लीधा हुवै ।।७।। शरीरनी विभूषाउ फूटरा दीसवा भणी अंगोल कीधी हुवै, मूंछ कतरावी हुवै, कांने पट्टा रखाया हुवै ।।८।। सखरा वस्त्र, केसरिया वस्त्र सखरी कांबल पहिरीनें वरणांगी कीधी हुवै ।।९।। मकार चकार भकार प्रमुख गाल दीधी हुवै। देवांगणारी वंछा भोग मनमें धारी हुवै। इत्यादि प्रकार करी चौथा व्रतनी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।४।।

हिवै पांचमो व्रत विराध्यो हुवै। ते किम? थिवर कल्पीना चवदै उपगरणथी कारण विना मूर्च्छा करी अधिका उपगरण वस्त्र, पात्र, डांडा, डंडासणा, दोहणा, कुंडा, ढांकणी, प्रमुख राख्या हुवै। लोभनें बाह्य द्रव्य राख्या हुवै। लोभनें मोती, मांणक, मुंगीया, छुरी, कतरणी, नहरणी, सूइ, नखलो, पाछणो, अरगतीसार, चींपडी, चीपीयो, वाटको वाटकी, थाली, धातुरी सिली, त्रांबारी स्याहीरी डबी,मसरी, वावरी, प्रमुख सात धातुरो कोइ राछ पीछ राख्यौ हुवै। पोथी पाना प्रमुख धर्मोपगरण ग्यानको उपगरण छै तो पिण ते ऊपर ममता अधिकी कीधी हुवै। इत्यादि प्रकार करी पांचमा व्रतनी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।५।।

हिवै छठ्ठो रात्रिभोजन विरमण व्रत विराध्यो हुवै ते किम? असन[१] पांन[२] खादिम[३] स्वादिम[४] चतुर्विध आहारनो रात्रि परिभोग कीधो हुवै। लगवगती वेला आहारपाणी कीधो हुवै। राति विहरीनें दिनें खाधो हुवै। संनिधी राखी खाधो हुवै। झोली ठांम खरड्या राख्या हुवै। गोचरी पडिकमतां चोविहार न कीधो हुवै। करीनै भागो हुवै। इत्यादि प्रकार करी छट्ठा व्रतनी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।६।।

।। इति संजम विराधना मिथ्या दु:कृ(ष्कृ)त दानं ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ दुःकृ(ष्कृ)तगर्हा आहारना वै(बै)तालीस दूषण लागा हुवै। ते किम? साधुनै अर्थे सचित वस्तु अचित्त कीधी हुवै ते आधाकर्मी कहीजै ।।१।। ते पहिलो। लाडूनो चूर्ण प्रमुख फासू (फ) हुतो अनै गुडादिक तवावीनै संस्कार कीधो ते उद्देसक कहीजै ।।२।। जे आधाकर्मी आहार ते अवयव मिश्रित ते पूतकर्म्म कहीजै ।।३।। जे साधु असाधु प्रमुख निमित्त नीपायो ते मिश्र कहीजे ।।४।। साधु निमित्ते दूध, दही प्रमुख राखी मुंक्यौ ते थापना कहीजै ।।५।। काज क्रिया वर उपगरण साधु निम(मि)त्त पहिलो पछै करै ते आहार प्राभूत (प्राभृत) कहीजै ।।६।। अंधारै आहार छै अनै गोख बारी प्रमुख साधु निमत्ते उघाडी उजवालो करनै आहार द्यै ते प्रादुःकरण कहीजै ।।७।। द्रव्यादिक देर मोल आंणीनें द्ये ते क्रीतक कहीजै ।।८।। साधु निमित्ते ओछीने आंणी द्यै ते पाडिच्च (पामिच्च) कहीजै ।।९।। साधु निमित्ते कोद्रव प्रमुख देईनै शाल प्रमुख आणीने विहरावै ते परिवर्तित कहीजे ।।१०।। घरथी उपासरै आणीनै द्यै ते अभ्याहृत कहीजै ।।११।। गोबर प्रमुख करी कोठी, कलशो प्रमुख भाजन मुद्रित कीधो छै ते मुद्रा उखेलनै द्यै ते उद्भिन्न कहीजे ।।१२।। मालादिकनै विषये उंचो आहार छै ते नीसरणी प्रमुख करी उतारनें द्यै ते मालाहृत कहीजै ।।१३।। दासदासीना हाथ प्रमुखथी खोसी द्यै ते उछेद कहीजै ।।१४।। सामान्य श्रेणि समुदाई भक्ति छै ते एक साधुने द्यै ते अनिसृष्ट कहीजै ।।१५।। पोतारै अर्थे आधण दीधो छै अनें साधु निमित्तें पांशुली चावल प्रमुख अधिका ऊ(ओ)रै ते आहार अध्यवपूरक कहीजै ।।१६।। ए सोले पिंडोद्गम दोष कहीजै।

हिवै सोलै उत्पादना दोष कहै छै। गृहस्थारा छोकराने रमायकै साधु आहार लै ते धात्रीपिंड दोष ।।१।। दूतनी परै ग्रामग्रामना देशदेशना समाचार कहीनै आहार ले ते दूतीपिंड कहीजै ।।२।। निमित्त प्रकासने आहार ल्यै ते निमित्त पिंड कहीजै ।।३।। आपणी जात गोत प्रकासनै आहार ल्यै ते आजीवकापिंड कहीजै ।।४।। दातारनी जेहनै विषै भक्ति छै तेहनी प्रशंशा करीनें आहार ल्यै ते वणीमगपिंड कहीजै ।।५।। गृहस्थनै उषध, भेषज, चिकित्सा कर्म्म करीनै आहार ल्यै ते चिकित्सादोष पिंड ।।६।। क्रोध करी आहार ल्यै ते क्रोधपिंड ।।७।। मान अभिमान करी आहार ल्यै ते मानपिंड ।।८।। माया केलवीनें आहार ल्यै ते मायापिंड ।।९।। लोभै करी आहार ल्यै ते(लोभपिंड) ।।१०।। पूर्व संस्तवना करी ल्यै ते) पूर्व संस्तवदोष कहीजै ।।११।। पछै संस्तवना करी ल्यै ते पुच्छा संस्तवपिंड कहीजै ।।१२।। विद्या प्रजुंजीनै आहार ल्यै ते विद्यापिंड ।।१३।। मंत्र प्रंजुजीन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आहार ल्ये ते मंत्रपिंड ।।१४।। चूर्ण देइनै आहार ल्यै ते चूर्णपिंड ।।१५।। गर्भ साडी-पाडी आहार ल्यै ते मूल कर्म्मपिंड ।।१६।। ए सोलह उत्पादना दोष एवं ।।३२।।

दश वली एषणा दोष। आधाकर्मादि दूषण करी संकित आहार ।।१।। आधाकर्मादिक दूषण करी म्रक्षत आहार ।।२।। सचित्त उपर निक्षप्ति मुंक्यौ आहार ।।३।। फासू आहार ऊपर सचित्त मुंक्यौ ते पिहत ।।४।। सचित्त पृथवीयादिकनें विषय संहरी दीधो ते संहृत ।।५।। अतिबालक अतिवृद्ध अयोग्यदायक तिण दीधो आहार ।।६।। सचित्त मिश्र आहार ।।७।। सम्यक अपरगत आहार ।।८।। वसादि लिप्त आहार ।।९।। छर्दित परशाट आहार ।।१०। एवं ।।४२।।

पांच मांडलना दूषण। क्षीर, खांड, घृत जुदा विहर्या जीमतां भेला करी जीम्या ते संयोजना ।।१।। बत्तेस कवलांथी अधिको जीमै ते अप्रमाण ।।२।। आहारनै विषये गृद्ध थको जीमै ते अंगारदोष ।।३।। अंतप्रांत अनिष्ट आहार जीमतो द्वेष आंणे ते धूमदोष ।।४।। वेदनादिक छर्दि कारण विना आहार ल्यै ते अकारण दोष ।।५।। एवं सेंतालीस दोषमांहिलो जे कोइ दोषण लागो हुवे इणभव परभव जातां ते मिच्छामि दुक्कडं।

वली सज्जातरनें घरें विहर्यो हुवै। अग्रपिंड लीधो हुवै। गृहस्थनै भाजनै आहार कीधो हुवै। गृहस्थनै सखर पंचामृत आहार जीमतां देखीनें वांछा कीधी हुवै। एकै पातरै सगलां धरांनी एकठी भिक्षा अरस विरस विहरी देखीनै दुगंछा कीधी हुवै। आपणो विहर्यो आहार पासत्थादिक पांचनै अथवा अन्यदर्शनीनै अथवा गृहस्थनै दीधो हुवै। अंघोल कीधो हुवै। दाढी मुंछ गाथैरा कांबरा केस कतराया हुवै, मुंडाया हुवै। साबुसु लुगडा धोया हुवै। इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं।

वली ग्यानरा आठ अतीचार लगाया हुवै। ते किम? कालवेलायें सिद्धांत भण्यो नहीं हुवै अथवा अकालै सिद्धांत भण्यो हुवै ।।१।। भणावणहाररो विनय न कीधो हुवै ।।२।। भणावणहारने बहुमान अंतरंग प्रीत नहीं धरी हुवै ।।३।। योग तप उपधांन विना सिद्धांत वांच्या हुवै ।।४।। विद्यागुरु ओलव्यौ हुवै ।।५।। सूत्र ।।६।। अर्थ ।।७।। सूत्रार्थ ।।८।। बेहुं खोटा भण्या कहया हुवै। भणतां गुणतां सूत्र अर्थ लेतां देतां किणहीनुं अंतराय कीधो हुवै। छती परत भणवा लिखवा न दीधी हुवै।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानद्रव्य खाधो हुवै। पुस्तक प्रमुख वेच्या हुवै। सूक्ष्म अर्थ सरदह्या न हुवै। इत्यादि प्रकार करी ज्ञान विराधना (जाणतां अजाणतां) इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।१।।

हिवै दर्शनना आठ अतिचार ते किम? देवगुरु धर्मनें विषै संका कीधी हुवै ।।१।। अन्य अन्य दर्शनां ऊपर अभलाषा वांछा कीधी हुवै ।।२।। साधु साध्वीनी दुगंछा कीधी हुवै ।।३।। सर्व देव, सर्व गुरु, सर्व धर्म सरीखा मान्या हुवै ।।४।। साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका गुणवंत चतुर्विध श्री संघनी प्रसंसा न कीधी हुवै ।।५।। सीदाता साधर्मी साहमीनें द्रव्यत भावत स्थिरता न कीधी हुवै ।।६।। साधर्म्मिक-साधुनी भक्तवत्सलता कीधी न हुवै ।।७।। श्री जिनशासण तणी प्रभावना उद्दीपना न कीधी हुवै ।।८।। इत्यादिक प्रकार करी दर्शननी विराधना कीधी हुवै इणभव परभव जातां(जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।२।।

हिवै चारित्रना आठ अतिचार लागा हुवै ते किम? इर्यासमति[१] भाषासमति[२] एषणासमति[३] आदांनभंड-निखेवणासमति[४] उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारठावणीयासमति[५] मनोगुप्ति[६] वचनगुप्ति[७] कायगुप्ति[८] एवं पांच सुमति(समति) त्रीणि गुप्ति विराधी हुवै। इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

वली उभयकाल पडिकमणो कीधो न हुवै। अथवा कालवेला टाली अकालै कीधो हुवै। अथवा छती सक्तें बैठां पडिकमणो कीधो हुवै। वांदणा बारह आवर्त्त भली परै साचव्या न हुवै। प्रभातनो पडिकमणो आगासै कीधो हुवै। पडिकमणांमांहे निद्रा विकथा कीधी हुवै। दिवरामांहै पांच वार सिज्झाय ध्यान न कीधो हुवै। अहोरात्रमांहे सात वार चैत्यवंदन न कीधा हुवै। पच्चखाण पार्या न हुवै। पउण पडिलेहण आघीपाछी कीधी हुवै। ओधा, मुंहपत्ती, वस्त्रपात्र पडलेह्या न हुवै। सांझे बारह १२ बाहिर, बारह १२ मांहे, एवं २४ थंडला, च्यार कालग्रहणना मंडल एवं २८ मांडला कीधा न हुवै। राइ संथारा मुंहपती पडिलेही न हुवै। आवरसहि निस्सिहि प्रमुख दसविध चक्रवाल समाचारी साचवी नहीं हुवै। सूत्रपोरसी, अर्थपोरसी साचवी नहीं हुवै। कारण विना दिवस निद्रा कीधी हुवै। रात्रे पोहर उपरंत निद्रा कीधी हुवै। राइ प्रायश्चित न कीधो हुवै। थापना पडिलेहवी वीसर गइ हुवै। थांनक बै(पै)सतां 'अणुजाणह जस्सवग्गहो होइ त्ति' एहवुं वचन न कहयुं हुवै। रात्रे अकाले थंडलै गयो हुवै। कालातीत, क्षेत्रातीत अन्नपाणी प्रमुख भोगव्या हुवै।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छती शक्तें अणसण[१] उणोदरी[२] वृत्तिसंक्षेप[३] रसत्याग[४] कायक्लेस[५] संलीनता[६] ए बाह्य तप; फेर गुरु समीपै पाप लागैरी आलोयण लेवै ते प्रायश्चित तप ते आलोयण न लेवै ।।१।। विनय वडा साधुरो साचव्यो न हुवै ।।२।। वेयावच्च बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी, गीतार्थगुरु, असमर्थ साधु प्रमुखनो न कीयो हुवै ।।३।। सज्झाय वाचना[१] पृच्छना[२] परावर्तना[३] अनुप्रेक्षा[४] धर्मकथा[५] पांच प्रकारे न कीधी हुवै। पिंडस्थ[१] पदस्थ[२] रूपस्थ[३] रूपातीत[४] ए च्यार ध्यांन न कीधा हुवै। आर्तध्यान रौद्रध्यान कीधा हुवै। काउसग्ग दुःखक्षय, कर्म्मक्षयनो कीधो न हुवै। इत्यादिक प्रकार करी बारै भेदै तपस्या साचवी न हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।३।।

वली मनोवीर्य[१] वचनवीर्य[२] कायवीर्य[३] धर्म्मस्थानके फोरव्या न हुवै। नोकारसी[१] पोरसी[२] साढपोरसी[३] परमड्ढ[४] अवड्ढ[५] एकासणो[६] ब्यासणो[७] नीवी[८] आंबिल[९] एकलठाणो[१०] उपवास[११] गंठसी[१२] मुठसी[१३] प्रमुख छती शक्ति कीधा न हुवै। अथवा करीनें भागा हुवै। अथवा पारवा वीसर गया हुवै। इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं कृतं देयं ।।४।।

वली यतीनो दशविधे धर्म्म विराध्यौ हुवै। ते किम? क्षमा न कीधी[१] मार्दव-अहंकार कीधो हुवै[२] आर्जव-कपट कीधो हुवै[३] मुक्ति-लोभ कीधो हुवै[४] तपस्या न कीधी हुवै[५] सतरै भेदे संजम पाल्यौ न हुवै[६] सत्य बोल्यो न हुवै[७] शौच-अदत्तादांन निषेध न कीधो हुवै[८] आकिंचण-निःपरिग्रहनो निषेध न कीधो हुवै[९] ब्रह्मचर्य पाल्यो न हुवै[१०] इत्यादि प्रकार करी दशविधि यतिनो धर्म विराध्यो हुवै इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।५।।

वय[५]समणस्स धम्म[१०]संयम[१७]वेयावच्चं[१०] च बंभगुत्तीओ[९]।
नाणाइतियं[३] तवो[१२] कोहनिग्गहो[४] चरणमेयं तु ।।१।। ए चरणसत्तरी।

पड(पिंड)व(वि)सोही[४] समिई[५] भावण[१२] पडिमा य[१२] इंदियनिरोहो[५]।
पडिलेहण[२५] गुत्तीओ[३] अभिग्गहा[४] चेव करणं तु ।।१।। ए करणसत्तरी।

एवं चरणसत्तरी करणसत्तरी १४० बोल विराध्या हुवै। इणभव परभव जातां (जाणतां अजाणतां) ते मिच्छामि दुक्कडं ।।

।। इति दुष्कृतगर्हा ।।६।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ सुकृतानुमोदना। थोडी घणी वेला पंच महाव्रत पाल्या हुवै। पांच समिति, त्रिणि गुप्ति, आठ प्रवचन पालवानी खप कीधी हुवै। आहार विहरतां खप कीधी हुवै। सूत्र सिद्धांत विध(धि)सुं भण्या-भणाया हुवै। परति पानां सोझ्या हुवै। भणवा भणी परत कीधो हुवै। अरिहंतनौ वेयावच्च कीधी हुवै। साधुनौ, ग्लाननौ, तपसीनौ, आचार्यनौ उपाध्यायनौ, वाचनाचार्यनौ विनय-वेयावच्च कीधौ हुवै। विधसुं उपधानयोग वुहा हुवै। शत्रुंजय, गिरनार, अष्टापदजी, आबूजी, सम्मेतसिखरजी, चंपापुरी, पावापुरी, राजग्रही, जेशलमेर, रांणपुरो, थंभणो, गउडी, फलोधी, अंतरीकजी प्रमुख तीर्थजात्रा कीधी हुवै। चौदस, पांचम, बीज, आठम, इग्यारस, वीसस्थानक, कल्याणकतिथि, प्रमुख तिथि तप कीधो हुवै। दुःखक्षय, कर्मक्षय निमित्त काउसग्ग कीधो हुवै। बारह भावना भावी हुवै। लाख नोकार गुण्या हुवै। गंठी, मुंठी, नवकारसी, पोरसी, साढपोरसी, पुरमड्ढ, आंबिल, उपवास, एकासणो, ब्यासणो, नीवी, दिवसचरम प्रमुख पच्चखाण दाइसुं साचा कीधा हुवै। चरणसत्तरी करणसत्तरी भली परै पाली हुवै। इणभव परभव ते अणुमोदज्यौ।

इसरै करी पहलो सम्यक्त्व सूधो उचरायो[1] पछै अढारै पापस्थानक वोसराया[2] पछै चौरासीलाख जीवाजोनि खमावी[3] पछै संयमविराधना मिच्छामि दुक्कडं दिरावी[4] पछै दुष्कृत गर्हा करावी[5] पछै सुकृतअनुमोदना करावी[6]। भली अराधना करावीजै तिवारै विशेषपणै करावीजै संवर आखडी पच्चखाण विशेष, च्यार सरणा कराईजै। गंठी बंधावीजै।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम् ।।१।। इत्यादि।

वाणाष्टरसभौमाब्दौ (१६८५) रिणीनगरसंस्थितैः।
यत्यन्त्याराधना चक्रे **समयादिमसुन्दरैः** ।।१।।

यद्यत्याराधनां कृत्वा पुण्यस्योपार्जनं कृतम्।
तेन प्रान्तवेलायां ममोदयमुपैतु सा ।।२।।

।। इति यत्याराधनाभाषा श्रीसमयसुंदरविरच(चि)ता विधिसंपूर्णम् ।।

।। ग्रंथमान ३७१ संख्या ।।

।। सं. १८९९ मिति पोहवदि २ सोमवारे लि. पं। दुलीचंद

श्रीविक्रमपुरमध्ये चतुर्मासी कृतायाम् ।।श्रीः।।

For Private and Personal Use Only

कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची
एक संक्षिप्त परिचय

- ❖ ग्रंथ नाम - कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूची
- ❖ प्रकाशित होनेवाले कुल भाग - ५५
- ❖ अब तक प्रकाशित कुल भाग - १६
- ❖ प्रत्येक भाग के कुल पृष्ठ - ६०८
- ❖ प्रत्येक भाग में प्रकाशित हस्तप्रतों की संख्या - ३००० से ३५००
- ❖ प्रत्येक भाग में प्रकाशित कृति लिंकों की संख्या - ६२०० से ६८००
- ❖ प्रत्येक भाग में हस्तप्रत सूचनाओं के कुल पृष्ठ - ४०० से ४५०
- ❖ प्रत्येक भाग में कृति सूचना परिशिष्ट के कुल पृष्ठ - १२० से १७०

विशेषता - अप्रकाशित व अशुद्ध प्रकाशित साहित्य को शुद्ध व बहु उपयोगी बनाने पूर्वक संशोधन-संपादन क्षेत्र में कार्यरत व इतिहास एवं ज्ञान-विज्ञान की अनेक शाखाओं के अभ्यासु तथा वर्तमान की अनेक समस्याओं का हल ढूंढने वाले प. पू. साधु-साध्वीजी भगवंतों एवं विद्वानों के लिए यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी है.

अन्य सूचीपत्रों की तुलना में इस सूचीपत्र में हस्तप्रत, पेटा हस्तप्रत और उनमें पाई जानेवाली कृतियों की ८० से अधिक प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं.

जिनमें प्रत नाम, प्रतिलेखन वर्ष, प्रतिलेखक, गुरु परंपरा, प्रतिलेखन स्थल, पूर्णता, हस्तप्रत विशेषता, हस्तप्रत लक्षण, दशा, पृष्ठ, लंबाई-चौडाई, पंक्ति-अक्षर, पेटांक नाम, पेटांक पृष्ठ, कृति नाम, स्वरूप, भाषा, कर्ता, आदिवाक्य, अंतिमवाक्य, परिमाण, रचना वर्ष आदि मुख्य रूप से हैं. इनके अलावा अनेक सूचनाएँ जो केटलॉग में स्थल संकोच के कारण छप नहीं सकती है उन्हें कम्प्यूटर प्रोग्राम में ही खूब ही सुसंकलित रूप से संजोई जाती हैं.

ग्रंथ के अंत में छपे परिशिष्टों में कृति परिवार का परिचय तथा प्रत्येक कृति से जुडी एकाधिक हस्तप्रतों की जानकारियाँ सरलता से प्राप्त हो जाती हैं. ये सारी सूचनाएँ ज्ञानमंदिर में कार्यरत विविध भाषाओं के जानकार पंडितवर्यों द्वारा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्येक हस्तप्रत का सूक्ष्म अवलोकन व निरीक्षण कर, आवश्यकता पड़ने पर सन्दर्भ ग्रन्थों आदि की सहायता से प्रविष्टि की जाती हैं.

सूचीकरण का काम महज सूची बना कर छाप देने मात्र तक सीमित नही है. अस्त-व्यस्त बिखरी व जीर्ण-शीर्ण दशा में आए हस्तप्रतों के पन्नों का खूब ही सूझबूझ व धीरज पूर्वक मिलान करके ग्रंथों को पूर्ण बनाना, उन पर वेष्टन आदि लगा कर उन्हें सुरक्षित करने का बडे ही श्रम-समय साध्य आधार कार्य भी सूचीकरण कार्य का ही हिस्सा है.

वितरण व्यवस्था - इन ग्रंथों की एक-एक कॉपी भारत भर के प्रमुख ज्ञानभंडारों एवं साधु-साध्वीजी भगवंत जो हस्तप्रत के क्षेत्र में संपादन-संशोधन कार्य कर रहे हों, उन्हें भेंटस्वरूप भेजी जाती है.

इसके अतिरिक्त पुस्तक विक्रेताओं के माध्यम से विश्वभर की इस क्षेत्र से जुडी युनिवर्सीटियों, संस्थाओं या व्यक्तियों को उनके व्यक्तिगत उपयोग के लिए लागत मूल्य पर विक्रय किया जाता है.

इन ग्रंथों की ई-फाईल (पीडीएफ) बनाकर वेबसाइट पर अपलोड की जाती है, इसके अतिरिक्त यदि किसी विद्वान को इसकी Soft Copy चाहिए हो तो उन्हें ई-मेल द्वारा भी भेजी जाती है.

दाता का चतुरंगी पृष्ठ - केटलॉग के भाग को प्रकाशित करने का लाभ जिस श्री संघ, परिवार या दाता ने लिया हो, उनका परिचय. यदि श्री संघने लाभ लिया हो तो संघ का नाम, संघ के जिनालय के मूलनायकजी का फोटो, ट्रस्टीश्रीओं की सूची आदि मुद्रित किए जाते हैं.

किसी व्यक्ति या उसके परिवार की ओर से दान प्राप्त हुआ हो तो उनके परिवार के सदस्यों के फोटो तथा यदि परिवार के मुख्य व्यक्ति को समर्पित किया हो तो उनके फोटो व नाम मुद्रित किए जाते हैं. ये सारी सूचनाएँ एक चतुरंगी पृष्ठ के रूप में, दाता ने जिस भाग का लाभ प्राप्त किया हो, उस भाग में प्रकाशित किया जाता है.

श्रुतप्रेमी महानुभाव कैलास श्रुतसागर ग्रंथसूचि में डोनेशन हेतु कार्यालय से संपर्क करें.

❖ ❖ ❖

For Private and Personal Use Only

धर्म कला व श्रुत-साधना का आह्लादक धाम

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा तीर्थ

अहमदाबाद-गांधीनगर राजमार्ग पर स्थित साबरमती नदी के समीप सुरम्य वृक्षों की घटाओं से घिरा हुआ यह कोबा तीर्थ प्राकृतिक शान्तिपूर्ण वातावरण का अनुभव कराता है. गच्छाधिपति, महान **जैनाचार्य श्रीमत् कैलाससागरसूरीश्वरजी म. सा.** की दिव्य कृपा व **युगदृष्टा राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी** के शुभाशीर्वाद से **श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र** की स्थापना २६ दिसम्बर १९८० के दिन की गई थी. आचार्यश्री की यह इच्छा थी कि यहाँ पर धर्म, आराधना और ज्ञान-साधना की कोई एकाध प्रवृत्ति ही नहीं वरन् अनेकविध ज्ञान और धर्म-प्रवृत्तियों का महासंगम हो. एतदर्थ आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी की महान भावनारूप **आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर** का खास तौर पर निर्माण किया गया.

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र अनेकविध प्रवृत्तियों में अपनी निम्नलिखित शाखाओं के सत्प्रयासों के साथ धर्मशासन की सेवा में तत्पर है.

(१) महावीरालय : हृदय में अलौकिक धर्मोल्लास जगाने वाला चरम तीर्थंकर श्री महावीरस्वामी का शिल्पकला युक्त भव्य प्रासाद 'महावीरालय' दर्शनीय है. प्रथम तल पर गर्भगृह में मूलनायक महावीरस्वामी आदि १३ प्रतिमाओं के दर्शन अलग-अलग देरियों में होते हैं तथा भूमि तल पर आदीश्वर भगवान की भव्य प्रतिमा, माणिभद्रवीर तथा भगवती पद्मावती सहित पाँच प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं. सभी प्रतिमाएँ इतनी मोहक एवं चुम्बकीय आकर्षण रखती हैं कि लगता है सामने ही बैठे रहें.

मंदिर को परंपरागत शैली में शिल्पांकनों द्वारा रोचक पद्धति से अलंकृत किया गया है, जिससे सीढियों से लेकर शिखर के गुंबज तक तथा रंगमंडप से गर्भगृह का हर प्रदेश जैन शिल्प कला को आधुनिक युग में पुनः जागृत करता दृष्टिगोचर होता है. द्वारों पर उत्कीर्ण भगवान महावीर देव के प्रसंग २४ यक्ष, २४ यक्षिणियां, १६ महाविद्याओं, विविध स्वरूपों में अप्सरा, देव, किन्नर, पशु-पक्षी सहित वेल-वल्लरी आदि इस मंदिर को जैन शिल्प एवं स्थापत्य के क्षेत्र में एक अप्रतिम उदाहरण के रूप में सफलतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महावीरालय की विशिष्टता यह है कि **आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी म.सा.** के अन्तिम संस्कार के समय प्रतिवर्ष २२ मई को दुपहर २ बजकर ७ मिनट पर महावीरालय के शिखर में से होकर सूर्य किरणें श्री महावीरस्वामी के ललाट को सूर्यतिलक से देदीप्यमान करे ऐसी अनुपम एवं अद्वितीय व्यवस्था की गई है. प्रति वर्ष इस आह्लादक घटना का दर्शन बड़ी संख्या में जनमेदनी भावविभोर होकर करती है.

(२) आचार्य श्री कैलाससागरसूरि स्मृति मंदिर (गुरु मंदिर) : पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव प्रशान्तमूर्ति श्रीमत् कैलाससागरसूरीश्वरजी के पुण्य देह के अन्तिम संस्कार स्थल पर पूज्यश्री की पुण्य-स्मृति में संगमरमर का नयनरम्य कलात्मक गुरु मंदिर निर्मित किया गया है. स्फटिक रत्न से निर्मित अनन्तलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामीजी की मनोहर मूर्ति तथा स्फटिक से ही निर्मित गुरु चरण-पादुका वास्तव में दर्शनीय हैं.

(३) आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर (ज्ञानतीर्थ) : विश्व में जैनधर्म एवं भारतीय संस्कृति के विशालतम अद्यतन साधनों से सुसज्ज शोध संस्थान के रूप में अपना स्थान बना चुका यह ज्ञानतीर्थ श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र की आत्मा है. ज्ञानतीर्थ स्वयं अपने आप में एक लब्धप्रतिष्ठ संस्था है. आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर के अन्तर्गत निम्नलिखित विभाग कार्यरत हैं : **(i) देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण हस्तप्रत भांडागार (ii) आर्य सुधर्मास्वामी श्रुतागार** (मुद्रित पुस्तकों का ग्रंथालय) **(iii) आर्यरक्षितसूरि शोधसागर** (कम्प्यूटर केन्द्र सहित) **(iv) सम्राट सम्प्रति संग्रहालय** : इस कलादीर्घा-म्यूजीयम में पुरातत्त्व-अध्येताओं और जिज्ञासु दर्शकों के लिए प्राचीन भारतीय शिल्प कला परम्परा के गौरवमय दर्शन इस स्थल पर होते हैं. पाषाण व धातु मूर्तियों, ताड़पत्र व कागज पर चित्रित पाण्डुलिपियों, लघुचित्र, पट्ट, विज्ञप्तिपत्र, काष्ठ तथा हस्तिदंत से बनी प्राचीन एवं अर्वाचीन अद्वितीय कलाकृतियों तथा अन्यान्य पुरावस्तुओं को बहुत ही आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक ढंग से धार्मिक व सांस्कृतिक गौरव के अनुरूप प्रदर्शित की गई है. **(v) शहर शाखा** : पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंत एवं श्रावक-श्राविकाओं को स्वाध्याय, चिंतन और मनन हेतु जैनधर्म कि पुस्तकें नजदिक में ही उपलब्ध हो सके इसलिए बहुसंख्य जैन बस्तीवाले अहमदाबाद (पालडी-टोलकनगर) विस्तार में आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर की एक शहर शाखा का ई. सं. १९९९ में प्रारंभ किया गया था. जो आज चतुर्विध संघ के श्रुतज्ञान के अध्ययन हेतु निरंतर अपनी सेवाएँ दे रही है.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) आराधना भवन : आराधक यहाँ धर्माराधना कर सकें इसके लिए आराधना भवन का निर्माण किया गया है. प्राकृतिक हवा एवं रोशनी से भरपूर इस आराधना भवन में मुनि भगवंत स्थिरता कर अपनी संयम आराधना के साथ-साथ विशिष्ट ज्ञानाभ्यास, ध्यान, स्वाध्याय आदि का योग प्राप्त करते हैं.

(५) धर्मशाला : इस तीर्थ में आनेवाले यात्रियों एवं महेमानों को ठहरने के लिए आधुनिक सुविधा संपन्न यात्रिकभवन एवं अतिथिभवन का निर्माण किया गया है. धर्मशाला में वातानुकुलित एवं सामान्य मिलकर ४६ कमरे उपलब्ध हैं.

प्रकृति की गोद में शांत और सुरम्य वातावरण में इस तीर्थ का वर्ष भर में हजारों यात्री लाभ लेते हैं.

(६) भोजनशाला व अल्पाहार गृह : तीर्थ में पधारनेवाले श्रावकों, दर्शनार्थियों, मुमुक्षुओं, विद्वानों एवं यात्रियों की सुविधा हेतु जैन सिद्धान्तों के अनुरूप सात्त्विक उपहार उपलब्ध कराने की विशाल भोजनशाला व अल्पाहार गृह में सुन्दर व्यवस्था है.

(७) श्रुत सरिता : इस बुक स्टाल में उचित मूल्य पर उत्कृष्ट जैन साहित्य, आराधना सामग्री, धार्मिक उपकरण, कैसेट्स एवं सी.डी. आदि उपलब्ध किये जाते हैं. यहीं पर एस.टी.डी टेलीफोन बूथ भी है.

विश्वमैत्री धाम - बोरीजतीर्थ, गांधीनगर : योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी महाराज की साधनास्थली बोरीजतीर्थ का पुनरुद्धार परम पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र संलग्न विश्वमैत्री धाम के तत्त्वावधान में नवनिर्मित १०८ फीट ऊँचे विशालतम महालय में ८१.२५ ईंच के पद्मासनस्थ श्री वर्द्धमान स्वामी प्रभु प्रतिष्ठित किये गये हैं. ज्ञातव्य हो कि वर्तमान मन्दिर में इसी स्थान पर जमीन में से निकली भगवान महावीरस्वामी आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराज द्वारा हुई थी. नवीन मन्दिर स्थापत्य एवं शिल्प दोनों ही दृष्टि से दर्शनीय है. यहाँ पर महिमापुर (पश्चिमबंगाल) में जगत्शेठ श्री माणिकचंदजी द्वारा १८वीं सदी में कसौटी पथ्थर से निर्मित भव्य और ऐतिहासिक जिनालय का पुनरुद्धार किया गया है. वर्तमान में इसे जैनसंघ की ऐतिहासिक धरोहर माना जाता है. निस्संदेह इससे इस तीर्थ परिसर में पूर्व व पश्चिम भारत के जैनशिल्प का अभूतपूर्व संगम हुआ है.

For Private and Personal Use Only

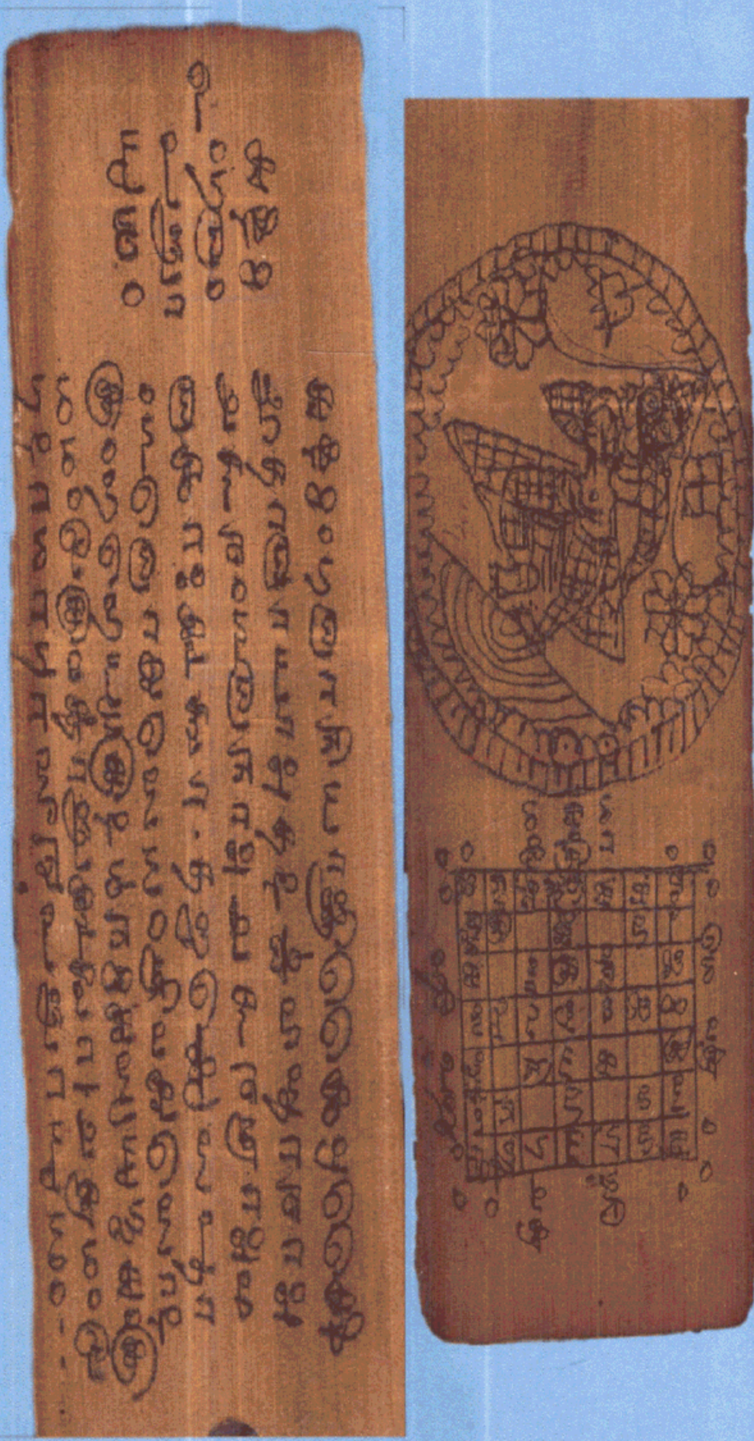

ताडपत्रमां प्राप्त थता ग्रंथ लिपिमां आलेखायेल अष्टमंगल पूजनविधि

TITLE CODE : GUJ MUL 00578. SHRUTSAGAR (MONTHLY). POSTAL AT. GANDHINAGAR. ON 15TH OF EVERY MONTH. PRICE : RS. 15/- DATE OF PUBLICATION JULY-2014

ज्ञानमंदिरना आगामी प्रकाशनो

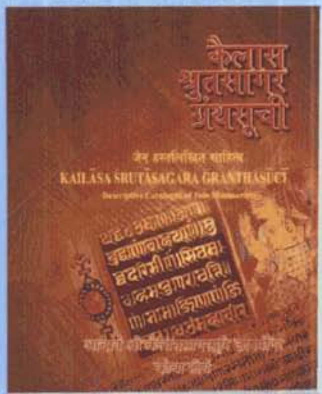

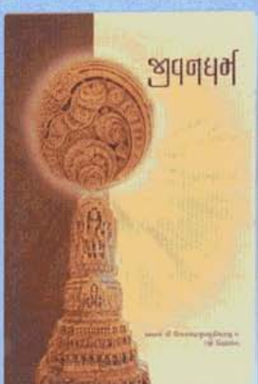

To.

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा, गांधीनगर ३८२००७
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२, फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

PRINTED, PUBLISHED AND OWNED BY : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA. **PRINTED AT :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS. 9-PUNAJI INDUSTRIAL ESTATE, DHOBHIGHAT, DUDHESHWAR, AHMEDABAD-380004 **PUBLISHED FROM :** SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, NEW KOBA, TA. & DIST. GANDHINAGAR, PIN : 382007, GUJARAT. **EDITOR :** KANUBHAI LALLUBHAI SHAH.